www.deshbandhu.co.in ख़बरें लगातार...

राष्ट्रीय संस्करण

पत्र नहीं मित्र

देशबन्धु

नई दिल्ली, सोमवार, 26 अगस्त , 2024 | वर्ष-17 | अंक -142 | पृष्ठ - 10 | मूल्य - 3.00 रुपए

कांग्रेस पार्टी को अंबेडकर के अनुयायी कभी माफ... 02

- निगम व दिल्ली सरकार के सभी अस्पतालों में मूलभूत...
- पेड़ काटे जाने पर क्यों नहीं हुई अधिकारियों के खिलाफ... 03

- इजराइली सेना खान यूनिस से हटी सेंट्रल गाजा में...
- ताइवान के उप-विदेश मंत्री प्रशांत द्वीप देशों के सम्मेलन... 07

खाने की शौकीन रकुल ने शेयर की 'अद्भुत' ... 10

सार संक्षेप

गांदरबल सीट से विधानसभा चुनाव लड़ेंगे उमर

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री और नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला आगामी विधानसभा चुनाव में गांदरबल सीट से चुनाव लड़ेंगे। नेशनल कॉन्फ्रेंस के सांसद सैयद रुहुल्लाह मेहदी, पार्टी नेता नासिर असलम वानी और अनंतनाग-राजौरी से सांसद मियां अल्ताफ अहमद की मौजूदगी में रविवार को हुई बैठक के बाद उमर अब्दुल्ला के नाम का ऐलान किया गया। इससे पहले उमर अब्दुल्ला ने विधानसभा चुनाव लड़ने की अटकलों को खारिज कर दिया था। उन्होंने कहा था कि जब तक जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश रहेगा, वह तब तक चुनाव नहीं लड़ेंगे।

चिराग फिर बने लोजपा रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री और बिहार की हाजीपुर लोकसभा सीट से सांसद चिराग पासवान को एक बार फिर लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया। रांची में आयोजित पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में यह फैसला लिया गया। लोक जनशक्ति पार्टी ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा, केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री सह हाजीपुर लोकसभा क्षेत्र से सांसद आदरणीय चिराग पासवान को राष्ट्रीय कार्यकारणी की बैठक में पुनः लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने जाने पर हार्दिक बधाई एवं अनंत शुभकामनाएं।

बद्रीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग बाधित, बड़ी संख्या में लोग फंसे

चमोली। उत्तराखंड में इस बार भारी बारिश का कहर खूब दिखा है। पहाड़ से लेकर मैदान तक भारी बारिश ने जमकर तबाही मचाई हुई है। प्रदेश की सभी नदियां और गदेरे उफान पर हैं। पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन की घटनाएं भी सामने आ रही हैं जिससे कई राष्ट्रीय राजमार्ग बाधित हो रहे हैं। इसकी वजह से चारधाम यात्रा भी प्रभावित हो रही है। रविवार को भारी बारिश के चलते बद्रीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक बार फिर सड़क पर भारी मलबा आने के कारण राजमार्ग बाधित हो गया है।

तमिलनाडु में पटाखा यूनिट में विस्फोट, दो की मौत

चेन्नई। तमिलनाडु के डिंडीगुल जिले के नाथम तालुक के अविचिपट्टी में एक पटाखा यूनिट में हुए विस्फोट में दो लोगों की मौत हो गई। स्थानीय लोगों के मुताबिक, उन्होंने सुबह-सुबह तेज आवाज सुनी। पुलिस की एक टीम वहां पहुंची तो फैक्ट्री के अंदर दो लोगों को मृत पाया। शवों के सिर, गर्दन और बांहों पर गंभीर चोटों के निशान थे।

'यूपीएस' मोदी सरकार का यूटर्न : खड़गे

जनता ने सत्ता के अहंकार को तोड़ा

कांग्रेस अध्यक्ष ने वक्फ बिल, ब्रॉडकास्ट बिल और लेटरल एंट्री का दिया उदाहरण

- मोदी सरकार अब लाई है यूनिफाइड पेंशन योजना

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। केंद्र सरकार की ओर से सरकारी कर्मचारियों के लिए घोषित की गई नई यूनिफाइड पेंशन योजना को लेकर कांग्रेस ने सरकार पर तंज कसा है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि यूपीएस में यू का मतलब मोदी सरकार का यू-टर्न है।

साथ ही उन्होंने मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में अब तक वापस लिए गए फैसलों को गिनाते हुए कहा कि 4 जून के बाद, जनता की शक्ति प्रधानमंत्री की शक्ति के अहंकार पर हावी हो गई है। कांग्रेस अध्यक्ष ने एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, 'यूपीएस में 'यू' का मतलब है मोदी सरकार का यू टर्न! 4 जून के बाद,

'हम जवाबदेही सुनिश्चित करते रहेंगे और 140 करोड़ भारतीयों को इस निरंकुश सरकार से बचाएंगे: **मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस अध्यक्ष**

जनता की शक्ति प्रधानमंत्री की शक्ति के अहंकार पर हावी हो गई है।' खड़गे ने लिखा, 'लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन/इंडेक्सेशन के संबंध में बजट में रोलबैक, वक्फ बिल को जेपीसी को भेजना, ब्रॉडकास्ट बिल को वापस लेना, लेटरल एंट्री का रोलबैक इसके उदाहरण हैं। इससे पहले शनिवार को प्रधानमंत्री मोदी की अगुआई में कैबिनेट ने केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) लागू करने की मंजूरी दी। कांग्रेस अध्यक्ष ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर साझा पोस्ट में लिखा कि 'हम जवाबदेही सुनिश्चित करते रहेंगे और 140 करोड़ भारतीयों को इस निरंकुश सरकार से बचाएंगे!'

रेलवे के कर्मचारियों को पसंद नहीं आई योजना

रेलवे कर्मचारी ओपीएस की कर रहे हैं मांग

केंद्र की मोदी सरकार की यूनिफाइड पेंशन स्कीम को लेकर रेलवे कर्मचारी बहुत खुश नहीं है। प्रयागराज में रेलवे के कर्मचारियों का कहना है कि यूपीएस लॉलीपॉप की तरह है। वह पिछले लंबे अरसे से ओल्ड पेंशन स्कीम बहाल किए जाने की मांग कर रहे हैं। सरकार ने ओल्ड पेंशन स्कीम बहाल करने के बजाय अपनी मनमानी की है। उन्हें यह किसी भी कीमत पर मंजूर नहीं है। सरकार को चाहिए कि वह ओल्ड पेंशन स्कीम को ही लागू करें। रेल कर्मचारियों ने यह भी कहा है कि ओल्ड पेंशन स्कीम को लेकर वह लगातार अपना आंदोलन जारी रखेंगे और उसे लेकर ही रहेंगे।

यूपीएस, एनपीएस से भी बड़ा धोखा : संजय सिंह

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और सांसद संजय सिंह ने यूपीएस पर बयान जारी किया। उन्होंने मीडिया से बात-चीत करते हुए कहा कि यूपीएस, एनपीएस से भी बड़ा धोखा हैं। इस स्कीम में अर्धसैनिक बलों को पेंशन नहीं मिलेगी। देश के लाखों कर्मचारी अपने आप को ठगा हुआ महसूस कर रहे है। सरकार ओल्ड पेंशन स्कीम लागू करे। एकीकृत पेंशन योजना पर आप नेता संजय सिंह ने कहा, एकीकृत पेंशन योजना नई पेंशन योजना से भी ज्यादा खराब है। यह देश के कर्मचारियों के साथ एक बहुत बड़ा धोखा है। देश के अर्ध सैनिक बलों को इस पेंशन योजना ने निकालकर बाहर कर दिया गया है। उनकी सर्विस 25 साल की होती ही नहीं है। ऐसे में हर महीने 10 प्रतिशत पेंशन के नाम पर कटेगा और उसके बाद पूरा पैसा सरकार अपने पास रख लेगी। अंतिम के 12 महीनों का औसत निकालकर 6 महीने की तनख्वाह दे दी जाएगी।

मोदी ने 11 लाख लखपति दीदी को दिए प्रमाण पत्र

रैली में बोले, महिलाओं के खिलाफ अपराध के दोषी बचने नहीं चाहिए

महाराष्ट्र के जलगांव में आयोजित किया गया समारोह

जलगांव, 25 अगस्त (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को महाराष्ट्र के जलगांव पहुंचे। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने उन 11 लाख नई 'लखपति दीदी' को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया, जिन्होंने उनके तीसरे कार्यकाल के दौरान इस मुकाम को हासिल किए हैं। पीएम मोदी ने 2,500 करोड़ का रिवॉल्विंग फंड भी जारी किया। इससे 4.3 लाख स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के लगभग 48 लाख सदस्यों को लाभ होगा। समारोह के दौरान पीएम मोदी ने लोगों को संबोधित भी किया। उन्होंने कहा कि माताओं, बहनों और बेटियों को सशक्त करने के साथ ही उनकी सुरक्षा भी देश की प्राथमिकता है। महिलाओं के खिलाफ अपराध एक अक्षम्य पाप है। जो भी दोषी है, उसे बख्शा नहीं जाना चाहिए।

बिना राजनीतिक पृष्ठभूमि वाले युवा तैयार बैठे

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात में कहा कि स्वतंत्रता दिवस पर उनके आह्वान पर बड़ी संख्या में ऐसे नौजवान राजनीति में आने के लिए तैयार बैठे हैं जिनकी पृष्ठभूमि राजनीतिक नहीं है और इससे देश को विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करने के लिए नई उर्जा, नया जोश एवं नया अनुभव मिलेगा।

उप्र में फिर हुआ ट्रेन हादसा

किसान एक्सप्रेस दो हिस्सों में बंटी

- इंजन 13 डिब्बों को लेकर 4 किलोमीटर आगे निकला
- 8 बोगियां रेलवे ट्रैक पर दौड़ने के बाद रुकी

बिजनौर, 25 अगस्त (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के बिजनौर में एक बड़ा रेल हादसा होते-होते बचा। फिरोजपुर से धनबाद जा रही किसान एक्सप्रेस ट्रेन दो हिस्सों में बंट गई। इंजन से जुड़े डिब्बे आगे निकल गए। 8 बोगियां रेलवे ट्रैक पर दौड़ने के बाद रुक गईं। गनीमत रही कि कोई बड़ी अनहोनी नहीं हुई।

हादसे की जानकारी मिलते ही रेलवे में हड़कंप मच गया। मौके पर पहुंचे रेल अधिकारियों ने ट्रेन के दोनों हिस्सों को जोड़ने की कोशिश शुरू कर दी है। घटना रविवार सुबह करीब 4 बजे की है। हादसे के वक्त ट्रेन की स्पीड 80 से ज्यादा थी।

पुलिस भर्ती परीक्षा वाले उम्मीदवार भी थे ट्रेन में

पुलिस के मुताबिक, ट्रेन में पुलिस भर्ती परीक्षा में शामिल होने जा रहे कई कैंडिडेट्स बैठे हुए थे। आनन फानन में पुलिस और प्रशासन ने इन सभी को बस और दूसरे माध्यमों से परीक्षा केंद्र भिजवाया। रेलवे के अधिकारियों के मुताबिक, तकनीकी दिक्क्त की वजह से हादसा हुआ है। गनीमत रही कि किसान एक्सप्रेस पीछे कोई अन्य ट्रेन नहीं आ रही थी, वरना बड़ा हादसा हो सकता था। यात्रियों को भी सुरक्षित गंत०?य के लिए रवान कर दिया गया है।

हरियाणा में बदल सकती है मतदान की तारीख

- भाजपा ने उठाई है मांग, छुट्टियों को दिया हवाला
- सात या आठ अक्टूबर को हो सकते हैं चुनाव
- कल आयोग की ओर से हो सकती है घोषणा

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। हरियाणा में आगामी चुनावों की तारीखों में बदलाव हो सकता है। सूत्रों के मुताबिक, अब चुनाव सात या आठ अक्टूबर को हो सकते हैं। भारतीय जनता पार्टी ने चुनाव की तारीख बदलने की मांग की है, जिसके बाद चुनाव आयोग इस पर विचार कर रहा है।

इस संबंध में मंगलवार को चुनाव आयोग की ओर से औपचारिक घोषणा की जा सकती है। चुनाव आयोग के संभावित निर्णय का सभी राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों के चुनावी रणनीतियों पर बड़ा प्रभाव पड़ सकता है। अब सभी की नजरें मंगलवार को होने वाली घोषणा पर टिकी हैं, जिसमें यह साफ हो सकेगा कि हरियाणा के मतदाता किस दिन अपना वोट डालेंगे।

भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली ने तर्क दिया है कि एक अक्टूबर के आसपास वीकेंड व छुट्टियां हैं। इस कारण लोग बाहर घूमने जा सकते हैं, जिसका असर मतदान प्रतिशत पर पड़ सकता है। साथ ही यह भी कहा है कि अगली तारीख निर्धारित करते समय यह ध्यान रखा जाए कि मतदान की तिथि से एक दिन पहले और मतदान के अगले दिन अवकाश न हो। ऐसा होने से ज्यादा से ज्यादा लोग मतदान में हिस्सा ले सकेंगे।

बड़ौली ने पत्र में बताया है कि 28 व 29 को शनिवार व रविवार है। एक अक्टूबर को मतदान होने की वजह से छुट्टी है। दो अक्तूबर को गांधी जयंती और तीन को अग्रसेन जयंती है। 30 की छुट्टी लेकर छह दिन का लंबा वीकेंड पड़ रहा है। ऐसे में लोग छुट्टियां मनाने प्रदेश के बाहर जा सकते हैं, जिससे मतदान प्रतिशत प्रभावित हो सकता है। इस पर मुख्य चुनाव अधिकारी पंकज अग्रवाल ने बताया, उन्हें भाजपा का पत्र मिला है, जिस पर उपयुक्त फैसला लेने के लिए इसे निर्वाचन आयोग को भेज दिया गया है।

बिश्नोई समाज ने भी की तारीख बदलने की मांग

भाजपा के बाद बिश्नोई समाज महासभा ने भी मतदान की तारीख में बदलाव की मांग की है। महासभा के अध्यक्ष देवेंद्र बुडिया ने कहा-हर साल राजस्थान के बीकानेर में गुरु जंभेश्वर भगवान की समाधि स्थल पर अमावस्या के दिन बड़ा मेला आयोजित होता है, जिसमें हरियाणा समेत पूरे देश के बिश्नोई समाज के लाखों श्रद्धालु मेले में पहुंचते हैं। इस बार एक अक्तूबर को आसोज की अमावस्या पर मुक्तिधाम मुकाम में मेला निर्धारित है। दो को भी पूरे दिन अमावस्या है और एक को ही मतदान है। महासभा का कहना है कि मेला होने की वजह से बिश्नोई समाज के काफी लोग चुनाव में हिस्सा नहीं ले पाएंगे।

लेबनान ने इजरायल पर 320 से ज्यादा रॉकेट दागे

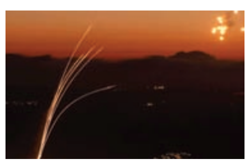

इजरायल के बड़े पैमाने पर हवाई हमलों का दिया जवाब

बेरूत, 25 अगस्त (एजेंसियां)। इजरायल की ओर से लेबनान पर बड़े पैमाने पर हवाई हमले किए जाने के बाद लेबनानी संगठन हिजबुल्लाह ने इजरायली सैन्य ठिकानों पर 320 से ज़्यादा रॉकेट दागे हैं। लेबनानी आंदोलन ने रविवार को एक बयान में कहा कि हिजबुल्लाह के लड़ाकों ने इजरायल में सैन्य ठिकानों पर 320 से ज्यादा रॉकेट दागे। इससे पहले हिजबुल्लाह ने बेरूत के दक्षिणी उपनगरों में इज़रायली हमले के जवाब में हमला करने की घोषणा की। उसने कहा कि इजरायली हमले में संगठन के वरिष्ठ कमांडर फ़ुआद शुक्र की मौत हो गई।

बयान के अनुसार जवाबी कार्रवाई के पहले चरण के हिस्से के रूप में 11 इज़रायली सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया गया, जिसमें कई ठिकाने और बैरक शामिल हैं। पहले चरण को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया। बयान में कहा गया है, 'अंतरराष्ट्रीय समयानुसार सुबह 4:05 बजे तक दुश्मन के ठिकानों पर 320 से ज़्यादा कत्युशा रॉकेट दागे जा चुके हैं।'

11 सैन्य ठिकानों को बनाया निशाना

बेरूत। लेबनानी आंदोलन हिजबुल्लाह ने रविवार को इजरायल पर जवाबी हमला करते हुए 11 सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया। आंदोलन की प्रेस सेवा ने आज एक बयान में यह जानकारी दी। बयान में कहा गया है, पहला चरण पूरी तरह से सफल रहा। यह इजरायली क्षेत्र के अंदर मुख्य लक्ष्य तक बैरकों और गढ़ों पर हमलों का चरण था। ड्रोन ने योजना के अनुसार उड़ान भरी। इस दौरान 11 लक्ष्यों को सूचीबद्ध करके हमला किया गया, जिनमें तीन आईडीएफ बेस, गोलान हाइट्स में दो बेस, तीन बैरक और कई गढ़ शामिल हैं।

आरोपी संजय का पॉलीग्राफ टेस्ट हुआ

कोलकाता दुष्कर्म-हत्या मामला

- सीबीआई ने पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष के घर छापा मारा
- घोष और उनसे जुड़े लोगों के 15 ठिकानों पर तलाशी ली

कोलकाता, 25 अगस्त (एजेंसियां)। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में ट्रेनी डॉक्टर से रेप और मर्डर के आरोपी संजय का पॉलीग्राफ टेस्ट हो गया है। सीबीआई और सेंट्रल फॉरेंसिक टीम के मेंबर्स रविवार को प्रेसीडेंसी जेल पहुंचे, यहां संजय बंद है। सदस्यों ने दोपहर करीब तीन घंटे तक संजय से सवाल किए। एक दिन पहले 24 अगस्त को आरजी मेडिकल कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष, 4 फेलो डॉक्टर और एक वॉलंटियर का पॉलीग्राफ टेस्ट किया गया था। सीबीआई ने रविवार को संदीप घोष के घर छापा मारा। एजेंसी ने घोष और उनसे जुड़े लोगों के 15 ठिकानों पर तलाशी ली। सीबीआई के लगभग 7 अधिकारी सुबह 8 बजे से घोष से उनके बेलियाघाटा आवास पर पूछताछ कर रहे हैं। टीम रविवार सुबह जब घोष के घर पहुंची तो परिवारवालों ने 1 घंटे 15 मिनट तक दरवाजा ही नहीं खोला था। आरजी कर मेडिकल कॉलेज में 9 अगस्त को ट्रेनी डॉक्टर का रेप-मर्डर हुआ था। अस्पताल के सेमिनार हॉल में उनकी बॉडी मिली थी।

कई राज्यों में बारिश से जनजीवन अस्त व्यस्त

26 तक कई राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट जारी

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। मूसलाधार बारिश से हिमाचल प्रदेश से लेकर उत्तराखंड, राजस्थान और गुजरात समेत देश के कई राज्यों में जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। राजस्थान के जालौर जिले में भारी बारिश के चलते पहाड़ी झरने के तेज बहाव में पांच लोग बह गए, जिसमें से एक महिला की मौत हो गई। त्रिपुरा में बाढ़ प्रभावित इलाकों में बचाव अभियान के दौरान दो लोगों की जान चली गई। मध्य प्रदेश के उज्जैन में क्षिप्रा नदी का जलस्तर बढ़ने से रामघाट पर मौजूद मंदिर जलमग्न हो गए। इस बीच, मौसम विभाग ने 26 अगस्त तक गुजरात से लेकर महाराष्ट्र और बंगाल से लेकर त्रिपुरा और पूर्वोत्तर के राज्यों में भारी से बहुत भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है।

चुनाव

विस्थापितों को पलायन किए हुए 34 साल का अरसा बीत गया

कश्मीरी विस्थापित बिना विधानसभा क्षेत्रों के बने रहेंगे मतदाता

- सुरेश एस डुग्गर

जम्मू, 25 अगस्त(देशबन्धु)। कश्मीरी विस्थापित मतदाता इस बार भी बिना विधानसभा क्षेत्रों के मतदाता बने रहेंगे और उन्हें इस बार भी कश्मीर के उन विधानसभा क्षेत्रों के लिए जम्मू में ही मतदान करना होगा जहां से पलायन किए हुए उन्हें 34 साल हो गए हैं। दरअसल कश्मीरी विस्थापितों को डाक मतपत्रों और जम्मू, उधमपुर और नई दिल्ली में स्थापित विशेष मतदान केंद्रों के माध्यम से मतदान करने की सुविधा प्रदान करने की पिछली प्रथा को जारी रखते हुए, भारत के चुनाव आयोग ने कश्मीरी विस्थापित मतदाताओं के लिए फिर से घोषणा की है। आयोग के अनुसार, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के उन सभी विधानसभा क्षेत्रों के मतदाताओं के लिए है, जो मजबूर परिस्थितियों के कारण पलायन कर गए थे और अस्थायी रूप से विभिन्न स्थानों पर रह रहे हैं। उनके सामान्य निवास स्थान से बाहर के स्थान।

सच में है तो बड़ी अजीब बात लेकिन जम्मू कश्मीर में यह पूरी तरह से सच है। कभी आपने ऐसे मतदाता नहीं देखें होंगे जो बिना विधानसभा व लोकसभा क्षेत्र के हों। यहां पर हैं। वे भी एक दो सौ-पांच सौ नहीं, बल्कि पूरे सवा लाख। और ये मतदाता जिन्हें कश्मीरी विस्थापित कहा जाता है पिछले 34 सालों में होने वाले उन लोकसभा तथा विधानसभा क्षेत्रों के लिए मतदान करते आ रहे हैं।

- जम्मू में रहते हैं, मतदान करेंगे कश्मीर के विधानसभा क्षेत्रों के लिए

कश्मीर के 46 विधानसभा क्षेत्रों के हैं मतदाता

नतीजतन कश्मीर के करीब 6 जिलों के 46 विधानसभा क्षेत्रों के मतदाता आज जम्मू में रह रहे हैं। इनमें से श्रीनगर जिले के सबसे अधिक मतदाता हैं। तभी तो कहा जाता रहा है कि श्रीनगर जिले की 8 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने वाले मतदाताओं का भविष्य इन्हीं विस्थापितों के हाथों में होता है जिन्हें हर बार उन विधानसभा तथा लोकसभा क्षेत्रों के लिए मतदान करना पड़ा है जहां अब लौटने की कोई उम्मीद उन्हें नहीं है। और अब एक बार फिर उन्हें इन्हीं लोकसभा क्षेत्रों से खड़े होने जा रहे उम्मीदवारों को जम्मू या फिर देश के अन्य भागों में बैठ कर चुनना है।

देश

उवाच

“ लोकसभा चुनाव के दौरान जिन बार और सोने की दुकानों से नकदी प्राप्त हुई थीं, वे कांग्रेस पार्टी से जुड़ी हुई हैं। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दारमैया ने कर्नाटक विधानसभा में स्वीकार किया है कि घोटाले में 90 करोड़ रुपए का गबन किया गया है।

–केटी रामा राव, बीआरएस नेता

तापमान	अधिकतम	न्यूनतम
दिल्ली	34.0	27.0
मुंबई	27.0	26.0
कोलकाता	30.0	26.0
चेन्नई	36.0	28.0

कर्ज लेकर घी पियो के सिद्धांत पर चल रही मप्र सरकार : कांग्रेस

■ **कमलनाथ ने कर्ज को लेकर मप्र सरकार पर बोला हमला**

भोपाल, 25 अगस्त (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश सरकार लगातार कर्ज लेकर योजनाओं को आगे बढ़ा रही है उसे पर कांग्रेस लगातार हमला कर रही है पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने सरकार पर तंज करते हुए कहां है कि कर्ज लेकर घी पियो के सिद्धांत पर मोहन सरकार चल रही है। दरअसल एमपी की मोहन सरकार 5 हजार करोड़ का कर्ज लेने जा रही है। सरकार 27 अगस्त को 5 हजार करोड़ का कर्ज लेगी। इससे पहले 6 अगस्त को भी सरकार ने 5 हजार करोड़ का कर्ज लिया था। कर्ज को लेकर कांग्रेस के दूसरे नेताओं ने भी सरकार पर हमला बोला है। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने ने अपनी सोशल मीडिया साइड एक पर लिखा कि मध्य प्रदेश की डॉक्टर मोहन यादव सरकार कर्ज लो और घी पियो के सिद्धांत पर चल रही है। सरकार एक बार फिर से पांच हज़ार करोड़ का कर्ज लेने जा रही है। प्रदेश पर पहले से ही 3.8 लाख करोड़ का कर्ज है। प्रदेश को कर्ज़ के दलदल में डुबाने वाली भाजपा सरकार के मुंह से आज तक यह नहीं सुना कि अगर प्रदेश के ऊपर कर्ज़ बढ़ रहा है तो सरकार फ़िज़ूल ख़र्च में कमी करने के लिए कोई क़दम उठाने जा रही है।

चालू वित्त वर्ष में मोहन यादव सरकार का तीसरा कर्ज

चालू वित्त वर्ष में डॉ.मोहन यादव सरकार यह तीसरा कर्ज ले रही है। कर्ज की इस राशि से सरकार मुख्यमंत्री की प्राथमिकता वाले कामों में तेजी लाएगी। गौरतलब है कि वित्त विभाग द्वारा इसी महीने लिए जाने वाले 2500 करोड़ के नए लोन के लिए अधिसूचना जारी की गई है। अधिसूचना के मुताबिक ढाई हजार-ढाई हजार करोड़ का यह कर्ज 28 अगस्त 2038 तक 14-14 साल की अवधि के लिए लिया जा रहा है, जिसकी भरपाई सरकार इस अवधि में करेगी। इसका ब्याज सरकार हर साल जमा करती रहेगी। इसके पहले, छह अगस्त को लिए गए कर्ज में 11 साल और 21 साल की अवधि में ब्याज का भुगतान करना तय किया गया है। इस कर्ज की राशि अलग-अलग 2500-2500 करोड़ रुपए रही है। प्रदेश पर 31 मार्च 2024 को खत्म हुए वित्त वर्ष में 3 लाख 75 हजार 578 करोड़ रुपए का कर्ज है। एक अप्रैल 2023 से 31 मार्च 2024 तक बीजेपी सरकार ने एक साल में 44 हजार करोड़ रुपए कर्ज लिया था। इसके पहले 31 मार्च 2023 को सरकार पर कर्ज की राशि 3 लाख 31 हजार करोड़ रुपए से अधिक थी।

सरकार एक बार फिर से पांच हजार करोड़ का कर्ज लेने जा रही है प्रदेश पर पहले से ही 3.8 लाख करोड़ का कर्ज है : कमलनाथ

कर्ज लेने के बाद भी ना रोजगार बढ़े ना नौकरियां

कमलनाथ ने लिखा कि लगातार कर्ज लेने के बावजूद न तो प्रदेश में निवेश बढ़ा है, न रोजगार बढ़ा है, न नौकरी बढ़ी है, न ही गेहूं और धान का समर्थन मूल्य बढ़ाया गया है और न ही लाड़ली बहनों को तीन हज़ार रुपये प्रति महीने दिए जा रहे हैं। जब समाज के किसी वर्ग के कल्याण में यह पैसा ख़र्च नहीं हो रहा तो ज़ाहिर है, यह सारा कर्ज़ भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ रहा है और सत्ता और संगठन मिलकर पैसे की बंदरबांट कर रहे हैं। अगर मोहन यादव सरकार इसी तरह कर्ज़ लेती रही तो प्रदेश दिवालियेपन की कगार पर पहुंच जाएगा। मैं मुख्यमंत्री से निवेदन करता हूँ कि उन्हें अपनी वित्तीय नीतियों के बारे में फिर से सोचना चाहिए और इस तरह के क़दम उठाने चाहिए जिससे प्रदेश कर्ज़ के दलदल से बाहर आ सके।

मोदी ने तेलुगू भाषा दिवस की दीं शुभकामनाएं

नई दिल्ली,25 अगस्त (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस महीने 29 तारीख को 'तेलुगू भाषा दिवस' के मद्देनजर तेलुगु भाषियों को इसकी शुभकामनाएं दी है। इसके साथ ही उन्होंने जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, ओणम और मिलाद उन नबी की शुभकामनाएं दी है। मोदी ने रविवार को आकाशवाणी पर अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात में ये शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रपंच व्याप्तंगा उन्न, तेलुगु वारिकि, तेलुगु भाषा

दिनोत्सव शुभाकांक्षलु। उन्होंने कहा कि कुछ ही दिनों में अनेक त्योहार आने वाले हैं। मैं, आप सभी को उनकी ढेर सारी शुभकामनाएं देता हूं। जन्माष्टमी का त्योहार भी है। अगले महीने शुरुआत में ही गणेश चतुर्थी का भी पर्व है। ओणम का त्योहार भी करीब है। मिलाद-उन-नबी की भी बधाई देता हूं। उन्होंने लोगों से बारिश के इस मौसम में सावधानी बरतने की अपील करते हुए कहा कि वह 'कैच द रेन मूवमेंट' का हिस्सा बनने का भी आग्रह भी दोहरा रहे हैं। उन्होंने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान की याद दिलाते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं और दूसरों से भी इसका आग्रह करें।

राजनाथ ने अमेरिका के नौसेना वारफेयर सेंटर का किया दौरा

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अमेरिका के विलियम बी मॉर्गन लार्ज कैविटेशन चैनल (एलसीसी) का दौरा किया है। अमेरिका के टेनेसी में नौसेना के सरफेस वॉरफेयर सेंटर में यह चैनल है। यह चैनल दुनिया की सबसे वृहद एवं तकनीकी रूप से सर्वाधिक उन्नत जल सुरंगों में से एक है। यह अमेरिका का वह केंद्र है जहां पर पनडुब्बियों, टारपीडो और नौसेना के जहाजों तथा प्रोपेलरों का परीक्षण किया जाता है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को सुरंग के वास्तविक प्रयोग से अवगत कराया गया। इस मौके पर उनके साथ अमेरिका में भारत के राजदूत, भारतीय नौसेना के महानिदेशक, नौसेना संचालन कर्मी और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन से रक्षा प्रौद्योगिकी परामर्शदाता सहित अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। इस विजिट के दौरान अमेरिकी नौसेना के उप-अवर सचिव ने राजनाथ सिंह का स्वागत किया। अमेरिका के इस सतही युद्धक केंद्र के कमांडर तथा तकनीकी निदेशक ने तमाम उपयोगी जानकारी भारतीय रक्षा मंत्री के साथ साझा की। रक्षा मंत्रालय का कहना है कि भारत और अमेरिका की इस महत्वपूर्ण चर्चा का उद्देश्य भारत में स्वदेशी डिजाइन और विकास के उद्देश्य से इस प्रकार की सुविधाओं की शुरुआत और प्रस्तावों में सहयोग करना भी है। राजनाथ सिंह इस दौरे पर अमेरिका में रक्षा उद्योग से जुड़ी अमेरिकी कंपनियों के साथ भी मुलाकात कर चुके हैं। जिन अमेरिकी रक्षा कंपनियों से उन्होंने चर्चा की है उनमें बोइंग, जीई, जनरल एटॉमिक्स, जनरल डायनेमिक्स लैंड सिस्टम्स, एल3 हैरिस, रेथियॉन टेक्नोलॉजीज, रॉल्स रॉयस और थायरमहान जैसी प्रमुख अमेरिकी रक्षा और प्रौद्योगिकी कंपनियां शामिल हैं।

■ **रक्षा मंत्री को सुरंग के वास्तविक प्रयोग से कराया गया अवगत**

अमेरिका की चार दिवसीय यात्रा पर हैं रक्षा मंत्री

रक्षा मंत्री अमेरिका की चार दिवसीय यात्रा पर हैं। इस यात्रा के दौरान उन्होंने अपने अमेरिकी समकक्ष के साथ द्विपक्षीय बैठक भी की है। वह अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैक सुलिवन से भी मुलाकात कर चुके हैं। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक, यह यात्रा भारत-अमेरिका संबंधों में बढ़ती गति और कई स्तरों पर रक्षा संबंधों की पृष्ठभूमि में हो रही है। इस यात्रा से भारत-अमेरिका की वैश्विक रणनीतिक साझेदारी और गहरी तथा व्यापक होने की उम्मीद जताई जा रही है। रक्षा मंत्री ने मौजूदा और भविष्य के रक्षा सहयोग पर अमेरिकी रक्षा उद्योग के साथ एक उच्च स्तरीय गोलमेज बैठक की अध्यक्षता भी की है।

सार संक्षेप

तमिलनाडु में छात्र ने कक्षा में की सहपाठी की हत्या

चेन्नई। तमिलनाडु में शनिवार को विद्यालय के कक्षा के अंदर कक्षा 11 के एक छात्र की उसके ही सहपाठी ने हत्या कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार तमिलनाडु के नमक्कल जिले के सरकारी विद्यालय में कक्षा के अंदर 11वीं के छात्रों के बीच झगड़े में 16 वर्षीय विद्यार्थी की मौत हो गई। मृतक छात्र की पहचान नमक्कल जिले के एरुमापट्टी के पास निवासी आकाश के रूप में हुई है। पुलिस ने कहा कि आकाश और उसके एक सहपाठी के बीच झड़प शुरू हुयी, जो मारपीट में बदल गई।

औरंगाबाद में ट्रक-कंटनेर की टक्कर में व्यक्ति की मौत

औरंगाबाद। बिहार में औरंगाबाद जिले के मदनपुर थाना क्षेत्र में रविवार को ट्रक और कंटेनर के बीच हुई टक्कर में कंटेनर चालक की मौत हो गयी तथा सहचालक गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने बताया कि पहरचापी मोड़ पर ट्रक और कंटेनर के बीच टक्कर हो गई। दुर्घटना में कंटेनर के चालक की मौत हो गई तथा सहचालक गंभीर रूप से घायल हो गया। मृतक की पहचान उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के सैफई थाना क्षेत्र के नगला रामदयाल गांव निवासी टैनी कुमार के रूप में की गई है।

समस्तीपुर में बस के पलटने से 30 कांवरिया घायल

समस्तीपुर। बिहार में समस्तीपुर जिले के मुसरीघरारी थाना क्षेत्र में बस के पलट जाने से 30 कांवरिया घायल हो गए। नेपाल से कांवरियों से भरा बस झारखंड के देवधर जा रहा था। इस दौरान शनिवार की रात मुसरीघरारी चौक के पास राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या-28 पर बस पलट गयी। इस दुर्घटना में 30 कांवरिया गंभीर रूप से घायल हो गए। सूत्रों ने बताया कि घायलों को समस्तीपुर सदर अस्पताल समेत अन्य निजी क्लीनिकों मे भर्ती कराया गया है। दुर्घटना का कारण बस का एक्सल अचानक टूट जाना बताया गया है।

पश्चिम चंपारण में अफीम के साथ तस्कर गिरफ्तार

बेतिया। बिहार के पश्चिम चंपारण जिले के भंगहा थाना क्षेत्र से पुलिस ने 350 ग्राम अफीम के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस सूत्रों ने रविवार को यहां बताया कि शनिवार की रात सूचना मिली थी की तस्कर नेपाल से मादक पदार्थ लेकर आने वाला है। सूचना के आधार पर सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के साथ संयुक्त रूप से एक टीम गठित की गयी। इसके बाद पिलर संख्या 421/09 के सिसवा गांव के समीप घेराबंदी की गयी।इस दौरान देखा गया की एक व्यक्ति नेपाल से आ रहा था। जैसे ही उक्त व्यक्ति ने भारत में प्रवेश किया तो उसे रुकने का इशारा किया गया लेकिन वह भागने लगा।

गोरखा समुदाय ने काला झंडा फहरा किया प्रदर्शन

जयगांव, 25 अगस्त (एजेंसियां)। गोरखा समुदाय ने अपनी मांगों को लेकर केंद्र सरकार को जगाने के लिए रविवार को यहां एक बड़ा प्रदर्शन किया। रोहिणी गेट से सिमलबाड़ी तक काला झंडा फहराकर उन्होंने सरकार की अनदेखी और अन्याय के खिलाफ अपना विरोध जताया। प्रदर्शन का नेतृत्व निमा लामा ने किया। उन्होंने शहीद मेजर दुर्गा मल्ल की पुण्यतिथि पर प्रदर्शन का आयोजन किया और गोरखा समुदाय के देश के लिए किए गए बलिदान को याद किया। उन्होंने कहा कि देश की आजादी में गोरखा समुदाय के लोगों का बहुत बड़ा योगदान है, लेकिन सरकार उनकी अनदेखी कर रही है।

प्रदर्शनकारियों ने कहा कि गोरखा समुदाय को उनके अधिकार और न्याय मिलना चाहिए। उन्होंने सरकार से मांग की कि वह गोरखा समुदाय के हितों का ध्यान रखें और उनकी समस्याओं का समाधान करें। उन्होंने कहा कि गोरखा समुदाय ने हमेशा देश की सेवा की है, लेकिन उन्हें कभी भी सम्मान नहीं मिला। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि वे एकजुट होकर सरकार को जगाएंगे और अपने अधिकारों के लिए लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि उन्हें कोई भी पार्टी या संगठन नहीं रोक सकता है। यह प्रदर्शन गोरखा समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि इससे सरकार के साथ गोरखा के संबंधों में बदलाव आ सकता है।

अब तक एक करोड़ महिलाएं बनीं लखपति दीदी

मुंबई,25 अगस्त (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को महाराष्ट्र के जलगांव में लखपति दीदी सम्मेलन में शिरकत की। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उप-मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस भी सम्मेलन में शामिल हुए। सम्मेलन में पहुंचने पर महिलाओं ने आरती उतारकर प्रधानमंत्री का स्वागत किया। इस मौके पर केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान भी मौजूद रहें। उन्होंने लखपति दीदी सम्मेलन को संबोधित भी किया। शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि अब तक एक करोड़ से अधिक महिलाएं लखपति दीदी बन चुकी हैं।

■ **महाराष्ट्र में प्रधानमंत्री मोदी की मौजूदगी में बोले शिवराज सिंह**

केंद्रीय मंत्री शिवराज चौहान ने कहा कि रविवार को 11 लाख महिलाओं को लखपति दीदी के रूप में प्रमाणित किया गया। स्वयं सहायता समूहों के खातों में 2500 करोड़ रुपये का रिवॉल्विंग फंड जमा किया जाएगा और बैंकों द्वारा स्वयं सहायता समूहों के खातों में 5000 करोड़ रुपये जमा किए जा रहे हैं। केंद्रीय मंत्री ने आगे कहा कि परसों से भारी बारिश हो रही है। हम लोग कल से चिंतित थे कि रात भर बारिश होने के बाद सुबह हमारी बहनें कैसे आएंगी।

लेकिन, भारी बारिश के बावजूद आप अपने भाई मोदी को सुनने के लिए हजारों की तादाद में यहां आईं। यहां पंडाल छोटा पड़ गया, लेकिन बहनों की संख्या बढ़ती जा रही है। मैं इन बहनों और उनके प्रेम को प्रणाम करता हूं। लखपति दीदी योजना महिलाओं के लिए एक स्किल ट्रेनिंग प्रोग्राम है। योजना के अंतर्गत महिलाओं को स्किल ट्रेनिंग देकर उन्हें पैसा कमाने योग्य बनाया जाता है।

योजना महिलाओं को आर्थिक स्तर पर मजबूत करती है और उनको स्वारोजगार की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। लखपति दीदी योजना के तहत महिलाओं को 5 लाख रुपये तक का लोन दिया जाता है। इस लोन पर महिलाओं को किसी प्रकार का ब्याज नहीं देना होता है। यानी महिलाएं इस योजना के अंतर्गत अपना बिजनेस शुरू करने के लिए ब्याज मुक्त लोन लोन ले सकती हैं। लखपति दीदी योजना में आवेदन करने के लिए आपके पास कुछ दस्तावेजों का होना जरूरी है। इसमें आधार कार्ड, पैन कार्ड, इनकम प्रूफ, बैंक पासबुक, पासपोर्ट साइज फोटो, मोबाइल नंबर आदि दस्तावेजों की जरूरत होगी।

11 लाख महिलाओं को लखपति दीदी के रूप में प्रमाणित किया गया : शिवराज सिंह चौहान

कोई भी बहन मजबूर न रहे

केंद्रीयमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आगे कहा कि पीएम मोदी का संकल्प है कि कोई भी बहन मजबूर न रहे। उन्होंने लखपति दीदी अभियान इसलिए चलाया, जिससे किसी भी बहन की आंख में आंसू न आए। उसके चेहरे पर मुस्कान बनी रहे। मुझे यह बताते हुए गर्व होता है कि पीएम मोदी के संकल्प के अनुसार, एक करोड़ लखपति दीदी बन चुकी हैं। शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मुझे यकीन है कि पीएम मोदी के आशीर्वाद से तीन करोड़ महिलाएं लखपति दीदी बनेंगी। प्रधानमंत्री दिन-रात काम करते हैं। उन्होंने लाल किले की प्राचीर से कहा कि वह भारत को विकसित भारत बनाने के लिए तीन गुना मेहनत से काम करेंगे। आइए हम भी यह संकल्प लेते हैं कि पीएम मोदी के साथ हम भी दोगुनी ताकत से काम करेंगे। जो लखपति बन चुकी हैं, वे अब अन्य महिलाओं को लखपति बनाएंगी।

द्रमुक की द्रविड़ मॉडल सरकार ने धार्मिक आस्थाओं में बाधा नहीं डाली : स्टालिन

■ **सभी धार्मिक आस्थाओं के कल्याण को ध्यान में रखते हुए काम कर रही सरकार**

चेन्नई, 25 अगस्त (देशबन्धु)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने सत्तारूढ़ द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम (द्रमुक) पर हिंदुओं के खिलाफ होने के बार-बार लगने वाले आरोपों का जवाब देते हुए कहा कि वह धार्मिक भावनाओं के खिलाफ नहीं है और उनके द्रविड़ शासन मॉडल ने कभी भी लोगों की धार्मिक आस्था में बाधा नहीं डाली है। स्टालिन ने चेन्नई से वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पलानी में मुथामिज मुरुगन उलगा मनाडु (भगवान मुरुगा पर वैश्विक सम्मेलन) का उद्घाटन करने के बाद बोलते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग तरह की मान्यताएं होंगी, जिनमें कोई बाधा नहीं है और इसमें कोई ऊंचा या नीचा नहीं है। उन्होंने कहा कि द्रमुक की द्रविड़ मॉडल सरकार कभी भी इसके खिलाफ नहीं खड़ी हुई..यह लोगों द्वारा पालन किए जाने वाले विभिन्न विश्वासों के लिए कभी भी बाधा नहीं बनी और यह अध्यात्मवाद के खिलाफ नहीं है। इसके अलावा, सरकार सभी धार्मिक आस्थाओं के कल्याण को ध्यान में रखते हुए काम कर रही है और सबके लिए सब कुछ के अपने सिद्धांत के प्रति प्रतिबद्ध है। इस बीच, भाजपा की नेता तमिलिसाई सुंदरराजन ने कहा कि यह सम्मेलन संकेत देता है कि जो लोग संथान धर्म के खिलाफ बोलते हैं, वे अब आध्यात्मिकता के बारे में बात किए बिना तमिलनाडु में राजनीति नहीं कर सकते हैं। स्टालिन पर सम्मेलन के उद्घाटन में व्यक्तिगत रूप से शामिल होने के लिए सवाल उठाते हुए उन्होंने दावा किया कि यह कार्यक्रम वोट हासिल करने की रणनीति थी।

द्रमुक शासन नास्तिक नहीं

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने कि कि द्रमुक शासन नास्तिक नहीं है। इस दौरान उन्होंने मानव संसाधन तथा धर्मार्थ बंदोबस्ती विभाग (सीई विभाग) द्वारा उठाए गए विभिन्न कदमों को सूचीबद्ध किया, जिसमें मंदिरों का अभिषेक, जीर्णोद्धार और नवीनीकरण, मंदिर की मीनारों का निर्माण, अतिक्रमण किए गए मंदिर कर्मचारियों की वसूली और मंदिर कर्मचारियों के लिए शुरू किए गए कल्याणकारी उपाय शामिल हैं।

कुपवाड़ा में तेल टैंकर के खाई में गिरने से दो लोगों की मौत

श्रीनगर, 25 अगस्त (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में एक तेल टैंकर के खाई में गिरने से दो लोगों की मौत हो गई और एक अन्य गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने बताया कि घटना शनिवार रात हुई, जब कुपवाड़ा की ओर जा रहे एक टैंकर के चालक ने वाहन पर से नियंत्रण खो दिया और वह सड़क से फिसलकर गहरी खाई में गिर गया। पुलिस ने बताया कि वाहन के चालक और परिचालक की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों की पहचान क्रमशः राजौरी के बलशामा सुंदरबनी निवासी जसबीर सिंह ठाकुर और जम्मू संभाग के नौशहरा के अंकुश चौधरी के रूप में हुई है। गंभीर रूप से घायल की पहचान राजौरी के सुंदरबनी जिले की अनु शर्मा के रूप में हुई है, जिसे इलाज के लिए निकटवर्ती अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने कुपवाड़ा थाने में मामला दर्ज कर लिया है और दुर्घटना के कारण का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी है।

कांग्रेस पार्टी को अंबेडकर के अनुयायी कभी माफ नहीं करेंगे

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने रविवार को कांग्रेस पर जोरदार तंज कसा। मायावती ने सोशल मीडिया एकाउंट एक्स से एक लंबा पोस्ट शेयर किया। पोस्ट में लिखा, कांग्रेस पार्टी को डॉ. भीमराव अंबेडकर के अनुयायी कभी माफ नहीं करेंगे। दरअसल, कांग्रेस पार्टी ने 24 अगस्त को प्रयागराज में संविधान समारोह आयोजित किया। इस आयोजन को लेकर बसपा सुप्रीमो मायावती ने आपत्ति जताते हुए कहा कि कल प्रयागराज में संविधान सम्मान समारोह करने वाली कांग्रेस पार्टी को बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के अनुयायी कभी माफ नहीं करेंगे, जिसने संविधान के मुख्य निर्माता बाबा साहेब को उनके जीते-जी व देहांत के बाद भी भारतरत्न की उपाधि से सम्मानित नहीं किया। उन्होंने कांग्रेस पर कई आरोप लगाए। अपनी पोस्ट में आगे कहा, बाबा साहेब की मूवमेन्ट को गति देने वाले कांशीराम के देहांत के बाद इसी कांग्रेस ने केन्द्र में अपनी सरकार के रहते इनके सम्मान में एक दिन का भी राष्ट्रीय शोक तथा सपा सरकार ने भी राजकीय शोक घोषित नहीं किया। इनकी ऐसी दोगली सोच, चाल, चरित्र से जरूर सजग रहें।

■ **प्रयागराज में संविधान समारोह आयोजित करने पर जताई आपत्ति**

राजनीति *1987 से चुनावों से दूर रही जमात-ए-इस्लामी चुनाव मैदान में किस्मत आजमाने की इच्छुक*

सरकार की बेरुखी के चलते अब मैदान में उतारेगी आजाद उम्मीदवार

सुरेश एस डुग्गर

जम्मू, 25 अगस्त (देशबन्धु)। जिस जमायत-ए-इस्लामी का कश्मीर में दबदबा माना जाता है और जिस पर प्रतिबंध लागू कर 'आतंकी' संगठन घोषित किया जा चुका है, राष्ट्रीय मुख्यधारा में लौटने की इच्छुक तो है पर सरकार की बेरुखी के चलते वह अपने आप को असहाय मान रही है।

जमात-ए-इस्लामी चुनाव मैदान में किस्मत आजमा कर अपनी ताकत का प्रदर्शन करना चाहती है पर प्रतिबंध के चलते वह अब अपने सदस्यों को आजाद उम्मीदवार के तौर पर मैदान में उतारने को कमर कस चुकी है।

जानकारी के लिए जमात 1987 से ही चुनाव से दूर रही है, जब उन्होंने आखिरी बार मुस्लिम यूनाइटेड फ्रंट के बैनर तले चुनाव लड़ा था, लेकिन वह मुख्यधारा में प्रवेश करने की अपनी इच्छा दिखाने के लिए चुनावी राजनीति में लौटने के लिए उत्सुक है। जमात के राजनीतिक सूत्र बताते हैं कि हमें आतंकी संगठन, लोकतंत्र विरोधी कहा जाता है। हम जमात के सदस्य के रूप में चुनाव नहीं लड़ सकते, लेकिन हम यह दिखाना चाहते हैं कि हम लोकतंत्र और संविधान में विश्वास करते हैं। बताया जा रहा है ऐसे में जमात के कुछ नेताओं का आने वाले दिनों में दूसरे और तीसरे चरण में जिन सीटों पर चुनाव लड़ेंगे, उन पर भी फैसला लिया जाना है। जमात के सूत्रों का कहना था कि उम्मीदवारों पर अंतिम फैसला अभी नहीं हुआ है। वे कहते थे कि हमें पता है कि हमारे पास बहुत कम समय है और रविवार तक हम उम्मीदवारों की सूची जारी कर देंगे। हालांकि वे इसके प्रति आशंकित भी थे औश्र कहते थे कि हमें नहीं पता कि राज्य सरकार इस पर क्या प्रतिक्रिया देगी-वे नामांकन स्वीकार करेंगे या नहीं।

दरअसल चर्चा यह है कि जमात-ए-इस्लामी जम्मू कश्मीर आगामी विधानसभा चुनावों में कई सीटों पर अपने पूर्व सदस्यों को स्वतंत्र उम्मीदवार के तौर पर उतारने की तैयारी में है। जमात नेताओं ने पहले कहा था कि वे केंद्र द्वारा फरवरी 2019 से यूएपीए एक्ट के तहत लगाए गए प्रतिबंध को हटाने का इंतजार कर रहे हैं। जमायत के सूत्रों ने बताया कि सरकार के साथ कई दौर की बातचीत हुई है। हालांकि, शुक्रवार को यूएपीए ने गृह मंत्रालय द्वारा पारित उस आदेश को बरकरार रखा, जिसमें जमात को अधिनियम के तहत गैरकानूनी संगठन घोषित किया गया था। जमात के सूत्रों ने बताया कि इसके शीर्ष निकाय की बैठक के बाद, इसके पूर्व सदस्यों को स्वतंत्र उम्मीदवार के तौर पर उतारने का फैसला किया गया है। संगठन के एक सूत्र ने जानकारी देते हुए कहा कि हमने 10-12 सदस्यों को स्वतंत्र उम्मीदवार के तौर पर उतारने का फैसला किया है। ये सीटें उन सीटों पर होंगी, जहां हमें लगता है कि हमें काफी समर्थन हासिल है। पहले चरण में प्रतिबंधित संगठन दक्षिण कश्मीर में कुलगाम, देवसर, बिजबेहरा, जैनपोरा, त्राल, पुलवामा और राजपोरा सहित करीब आधा दर्जन सीटों पर चुनाव लड़ रहा है। इस पर जमायत के सदस्यों की एक बैठक भी हो चुकी है।

■ **उम्मीदवारों पर अंतिम फैसला जल्द होगा**

उल्टा पुल्टा

चिंटू : अगर मुझे दूसरा दिमाग लगवाने की जरूरत पड़ी तो मैं तुम्हारा दिमाग लगवाना चाहूंगा।
पिंटू : मतलब तुम मानते हो कि मेरे पास जीनियस का दिमाग है? ...
चिंटू : नहीं, मुझे ऐसा दिमाग चाहिए जो पहले कभी यूज न हुआ हो...

कैपिटल ज़ोन

निगम व दिल्ली सरकार के सभी अस्पतालों में मूलभूत सुविधाएं अपर्याप्त : कांग्रेस

नई दिल्ली, 25 अगस्त (देशबन्धु)। आम आदमी पार्टी (आप) की दिल्ली सरकार और दिल्ली नगर निगम की प्रशासनिक विफलताओं, नाकामियों और नेतृत्व के अभाव में दिल्ली की स्वास्थ्य व्यवस्था चरमरा गई है। यह कहना है कांग्रेस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव का। यादव ने मानसून के अंतिम चरण में जल भराव के कारण जल जनित बीमारियों में बढ़ते डेंगू के 300 मामलों पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार और दिल्ली नगर निगम के अस्पतालों में संसाधनों की कमी का इतना अभाव है कि लोगों को जिंदगी की जगह मौत मिल रही है।

दिल्ली सरकार व नगर निगम के अस्पतालों में संसाधनों का इतना अभाव है कि लोगों को जिंदगी की जगह मौत मिल रही है : **देवेन्द्र यादव, कांग्रेस**

- मेयर को लेनी चाहिए सुविधाओं की कमी से नवजात की मौत की जिम्मेदारी
- कांग्रेस ने जल जनित बीमारियों में बढ़ते डेंगू के 300 मामलों पर चिंता व्यक्त की

देवेन्द्र यादव ने कहा कि अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर में डेंगू के मामले अधिक संख्या में बढ़ते हैं लेकिन दिल्ली नगर निगम के 3 अस्पतालों हिंदूराव, कस्तूरबा और स्वामी दयानन्द अस्पताल में सिर्फ 167 बेड रखना ऊंट के मुंह में जीरा वाली बात है। उन्होंने कहा कि निगम डेंगू न फैले इसका बंदोबस्त करने की बजाय बढ़ते मरीजों के इलाज करने की बात कर रहे हैं जबकि अस्पतालों में इलाज के लिए मूलभूत सुविधाएं तक नहीं है। उन्होंने कहा कि संवेदनशील समय है सरकार को डेंगू की रोकथाम के लिए कदम उठाने चाहिए।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि केजरीवाल सरकार की नाकामियों के कारण दिल्ली में 2022 में डेंगू के 10183 केस हुए ओर 9 मौतें हुई जबकि पिछले वर्ष 2023 में 16866 केस और 19 मौतें हुई। यादव ने कहा कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा डेंगू पर एडवाइजरी जारी होने के बावजूद दिल्ली सरकार डेंगू की रोकथाम करने की बजाय अपने भ्रष्टाचार के आरोपी मुख्यमंत्री की रिहाई और बेल पर जेल से बाहर मनीष सिसोदिया को जनता के बीच जाकर दोनों को बेगुनाह साबित करने की नाकाम कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था दुरुस्त होना किसी भी राज्य के लिए महत्वपूर्ण होता है परंतु राजधानी जहां शिक्षा बदहाल है वहीं स्वास्थ्य व्यवस्था की हालत चिंताजनक है।

यादव ने कहा कि जच्चा बच्चा की सुविधाओं के लिए एशिया के सबसे बड़े कस्तूरबा अस्पताल के इन्फ्रास्ट्रक्चर को दुरुस्त रखने में दिल्ली नगर निगम पूरी तरह नाकाम साबित रहा है, जिस कारण अस्पताल में टॉर्च में डिलीवरी करने के कारण एक नवजात शिशु की मौत हो गई।

दिल्ली की मेयर नवजात की मौत की जिम्मेदारी लें। उन्होंने कहा कि सिर्फ कस्तूरबा अस्पताल ही नहीं निगम व दिल्ली सरकार के सभी अस्पतालों में मूलभूत सुविधाएं, पर्याप्त संसाधन और स्टॉफ की कमी है जिसका भुगतान दिल्ली की जनता को जान गंवा कर करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि यह पहला मौका नहीं है जब सरकार की नाकामी के कारण कोई बच्चा मरा है, इससे पहले भी करंट लगने, बेसमेंट में डूबने, नाले में डूबने व इमारत गिरने से लगातार बच्चे और दिल्ली के लोग मर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में आप ने अपनी लड़ाई और अधिकारों के चक्कर में राजधानी को नर्क बना दिया है।

द्वारका में स्टेट गेस्ट हाउस बनाएगी केजरीवाल सरकार

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। अब दिल्ली सरकार का भी अन्य राज्य सरकारों की तरह राजधानी में अपना स्टेट गेस्ट हाउस होगा। यह गेस्ट हाउस द्वारका सेक्टर-19 में 3899.42 वर्ग मीटर में बनाया जाएगा। तीन सितारा गेस्ट हाउस में अत्याधुनिक सुविधाएं होंगी। इसमें सिंगल रूम से लेकर वीवीआईपी सुइट भी होंगे।

दिल्ली सरकार के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मेहमानों को इसी दिल्ली सदन में ठहराया जाएगा। सलाहकार फर्म इसके लिए डिटेल प्रोजक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करेगी। दिल्ली सरकार के दिल्ली पर्यटन एवं परिवहन विकास निगम (डीटीटीडीसी) द्वारा निर्माण कार्य के लिए टेंडर आवंटित होने के बाद दो साल के अंदर इमारत बनकर तैयार हो जाएगी।

इसकी अनुमानित लागत 60 करोड़ रुपए बताई जा रही है। ग्रीन बिल्डिंग की अवधारणा पर बनाए जाने वाले इस भवन में हेरिटेज लुक भी दिखेगा। देश की राजधानी होने के नाते दिल्ली में देश के सभी राज्यों का अपना भवन है, जहां उस राज्य के लोग ठहरते हैं। वहां के खान-पान व संस्कृति को बढ़ावा मिलता है।

मगर दिल्ली के पास अपना कोई सदन या भवन नहीं है, जहां लोग ठहर सकें। एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि दिल्ली सरकार राजधानी की गंगा-जमुनी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए भी इस सदन का इस्तेमाल करेगी।

दिल्ली सदन की इमारत कई मायने में खास होगी। इमारत भूतल के साथ नौ फ्लोर में बनाई जाएगी। इसके अलावा नीचे दो तल पर भूमिगत पार्किंग भी बनाई जाएगी। इसमें 38 सिंगल रूम सुइट होंगे।

पेड़ काटे जाने पर क्यों नहीं हुई अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई : सौरभ भारद्वाज

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। दिल्ली सरकार ने एक बार फिर दिल्ली में 1,100 से अधिक पेड़ काटे जाने का मुद्दा उठाया है। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने रविवार को आरोप लगाया कि ये पेड़ बिना अनुमति के काटे गए हैं। उन्होंने दावा किया कि दिल्ली के एलजी विनय सक्सेना पेड़ काटे जाने वाले स्थान पर 3 फरवरी 2024 को गए थे। भारद्वाज ने उप राज्यपाल से इस विषय पर एक प्रेस कांफ्रेंस करके दिल्ली की जनता को जानकारी देने की अपील की। उन्होंने दावा किया कि सड़क चौड़ी करने के लिए बिना किसी अनुमति के ये पेड़ काटे गए।

भारद्वाज ने दिल्ली की पूरी की पूरी अफसरशाही गिरवी रख रखने का लगाया आरोप

भारद्वाज ने आरोप लगाया कि उपराज्यपाल के कहने पर सड़क चौड़ी की गई। उन्होंने प्रश्न किया कि क्या अधिकारियों ने भी उपराज्यपाल को यह जानकारी नहीं दी कि बिना अनुमति पेड़ नहीं काटे जा सकते।

देश में डर का माहौल है, बड़े-बड़े आईएएस अधिकारी नतमस्तक हैं, तो ऐसे में निगम पार्षदों का क्या है : **सौरभ भारद्वाज**

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि यदि उपराज्यपाल को गुमराह करके पेड़ काटे गए तो ऐसे में दिल्ली के मुख्य सचिव और अन्य अधिकारियों के खिलाफ क्या कार्रवाई की गई है। भारद्वाज ने आरोप लगाया कि आज दिल्ली की पूरी की पूरी अफसरशाही गिरवी रख दी गई है। दिल्ली में जो जरूरत के कार्य हैं वह नहीं किया जा रहे हैं। जल बोर्ड के काम नहीं किया जा रहे हैं, अस्पतालों के लिए दवाइयों की खरीद नहीं की जा रही है। मोहल्ला क्लीनिक में तनख्वाह नहीं दी जा रही।

सार संक्षेप

श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का किया आयोजन

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के न्यू राजधानी एनक्लेव के विकास मार्ग स्थित उपासना मंदिर में भगवान श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का सोमवार को आयोजन किया। इस अवसर पर संस्था के प्रधान महेश शर्मा एव उप प्रधान एस. एम. त्रेहन , महासचिव सुरेश टेकरीवाल,सचिव अमित यादव एवम कोषाध्यक्ष रवि प्रकाश ताम्बी इत्यादि ने अपनी श्री कृष्ण जन्माष्टमी की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का आयोजन बड़ी धूम धाम के साथ आयोजित किया जा रहा है । इसमें हिंदुस्तान के सुप्रसिद्ध भजन गायक संजय दुआ को आमंत्रित किया गया है जो अपने मधुर भजनों से श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर चार चांद लगाएंगे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के तौर पर केंद्रीय राज्य मंत्री एवम पूर्वी दिल्ली से सांसद श्री हर्ष मल्होत्रा , ओम प्रकाश शर्मा विधायक, रमेश गर्ग निगम पार्षद के अलावा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित होकर भगवान कृष्ण जन्माष्टमी की रात्रि को भजन संध्या में भाग लेंगे और श्री कृष्ण जन्म के पश्चात आरती व 56 भोग के प्रसाद का वितरण किया जाएगा।

पुलिस ने भगोड़ा घोषित आरोपी को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली। क्राइम ब्रांच की टीम ने हत्या के एक मामले में पैरोल जंपर, डकैती के मामले में घोषित अपराधी और हत्या के प्रयास के मामले में भगोड़ा घोषित आरोपित को गिरफ्तार किया है। आरोपित ने पैरोल अवधि के दौरान भी अपराध किया। आरोपित की पहचान मोहम्मद आलमीन उर्फ लेफ्टी के रूप में हुई है। क्राइम ब्रांच के डीसीपी राकेश पावरिया के मुताबिक, वर्ष 2016 में आरोपित मोहम्मद आलमीन उर्फ लेफ्टी ने एक व्यक्ति पर चाकू से बेरहमी से वार किया था, जिसकी मौके पर ही मौत हो गई थी। जंगपुरा के पुलिस थाना एच.एन. दीन में मामला दर्ज किया गया था। इसके बाद आरोपित आलमीन उर्फ लेफ्टी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था। वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के दौरान उसे न्यायालय से जमानत मिल गई थी, लेकिन उसने समय पर आत्मसमर्पण नहीं किया और फरार हो गया।

बदमाशों ने दिनदहाड़े स्कूटी सवार का गला रेता

नई दिल्ली। गोकलपुरी गांव में शनिवार को दिनदहाड़े बदमाशों ने गला रेतकर स्कूटी सवार की हत्या कर दी। मृतक की पहचान नीरज अरोड़ा के रूप में हुई है। वारदात दिल्ली व उत्तर प्रदेश की सीमा पर हुई। लोनी व गोकलपुरी थाना पुलिस सीमा विवाद में उलझी रही। आखिर में गोकलपुरी थाना ने हत्या की धारा में प्राथमिकी की। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जीटीबी अस्पताल के शवगृह में रखा गया है। हत्या किसने की और क्या वजह रही पुलिस इसका पता लगा रही है। बदमाशों की पहचान के लिए सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है। जिला पुलिस उपायुक्त डॉ. जाय टिर्की ने बताया कि शनिवार शाम साढ़े चार बजे सूचना मिली कि गोकलपुरी गांव में एक शख्स खून से लथपथ हालत में पड़ा है।

महिला संत समागम आयोजित, देशभर से आई महिलाएं हुई शामिल

नई दिल्ली, 25 अगस्त (देशबन्धु)। निरंकारी सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज की प्रेरणा से देशभर में महिला संत समागम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में दिल्ली के सेक्टर 24, निरंकारी कालोनी के निरंकारी सत्संग हाल मैरिज ग्राउंड में दूसरे महिला संत समागम का विशाल रूप में आयोजन किया गया। जिसमें माडल टाउन, संत नगर, निरंकारी कॉलोनी, हरदेव नगर, मुखर्जी नगर, बुरारी, नत्थू पूरा, तिमारपुर सहित एन सी आर से हजारो संख्या में संगते सम्मिलित हुई। समागम की अधक्षता खन्ना से आई बहन स्वेता ने की। जिनका स्वागत संत निरंकारी मंडल की उप-प्रधान आदरणीय बहन राज वासदेव जी ने किया।

संगत को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि संतो के रूप में आज जो यह सुंदर रूप बना है वह आप सभी की किरपा से हुआ है। जब हम सतगुरु पर विश्वास करते है तब हमारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आ जाते है। आगे उन्होंने कहा कि गृहस्थ जीवन में रहते हुए हमें भक्तिमार्ग पर चलना है। अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए हमें भक्ति भी करनी है। जब हमारे जीवन में संतोष का भाव आ जाता है तो वह सहज बन जाता है और यह अवस्था इस परमपिता निरंकार से जुड़कर ही संभव है।

अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए हमें भक्ति भी करनी है : **बहन राज वासदेव**

हम अपने बच्चो को शिक्षा देते है उन्हे संगत से जोड़ते है तब उन्हे यह एहसास होता है की हमे मैट्रियालिस्ट चीज से नही जुड़ना है क्योंकि यह स्थाई नहीं। स्थाई तो केवल यह निरंकार है इसकी शरण में रहकर हम जीवन को सफल बनाते है। अन्त में उन्होंने कहा कि हमे इस प्रभु की रजा में रहते हुए पल पल में इसका शुकराना करना है।

कचरा श्रमिकों के लिए लीडरशिप ट्रेनिंग कार्यक्रम आयोजित

नई दिल्ली, 25 अगस्त (देशबन्धु)। दिल्ली में कचरा बीनने वाले श्रमिकों के हक अधिकारों के लिए कार्यरत सामाजिक संस्था बाल विकास धारा द्वारा दिनांक 23 अगस्त, 2024 को लोदी रोड स्थित भारतीय सामाजिक संस्थान में कचरा बीनने वाले श्रमिकों के लिए एकदिवसीय लीडरशिप ट्रेनिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 35 कार्यकर्ताओं नें भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत में बाल विकास धारा के समन्वयक विकास पाठक ने प्रतिभागीयों का स्वागत करते हुए ट्रेनिंग के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला! तदोपरांत कार्यक्रम के प्रशिक्षक थानेश्वर दयाल आदिगौड़ ने विभिन्न सत्रों के दौरान प्रतिभागियों को नेतृत्वकर्ता के गुण, पैरवी के तरीकों, भाषा शैली, प्रभावी कार्यशैली, अधिकारियों के साथ वार्तालाप के तरीकों को खेल, समूह कार्य एवम चर्चा के माध्यम से समझाया। कार्यक्रम के अंत मे संस्था की ओर से रेखा सिंह ने सभी प्रतिभागियों एवम प्रशिक्षक का धन्यवाद किया।

पिस्टल लेकर स्कूल पहुंचा चौथी कक्षा का छात्र

नई दिल्ली, 25 अगस्त (देशबन्धु)। द्वारका के नजफगढ़ इलाके में चौथी क्लास में पढने वाला बच्चा पिस्तौल लेकर स्कूल पहुंच गया। वो पिस्तौल स्कूल बैग में छुपा कर लाया था। क्लास में अपने दोस्तों को दिखा रहा था, तभी पकड़ा गया। मामला पुलिस तक पहुंचा तो पूछताछ शुरू हो गई. लाइसेंस रद्द करने की कार्रवाई की जा रही है। बच्चे की उम्र महज 10 साल है।

बच्चे ने मां से छुपाकर पिस्तौल को अपने स्कूल बैग में रख लिया था

द्वारका जिले के डीसीपी अंकित सिंह ने बताया कि घटना शनिवार की है। बच्चों के माध्यम से पिस्टल लाने की जानकारी स्कूल प्रशासन तक पहुंची तो उनके हाथ पांव फूल गए। आनन फानन में बच्चे से किसी तरह पिस्तौल ली गई और पुलिस को इस बात की जानकारी दी गई।

पुलिस ने पिस्टल को कब्जे में लिया। बच्चों के घरवालों से पूछताछ में पता चला कि पिस्तौल बच्चे के पिता की है, जो कि लाइसेंसी है। कुछ महीने पहले बच्चे के पिता की मौत हो गई थी। घर में रखी पिस्टल पर किसी का ध्यान नहीं था। शनिवार को बच्चे ने मां से छुपाकर पिस्तौल को अपने स्कूल बैग में रख लिया और स्कूल लेकर पहुंच गया। डीसीपी के अनुसार, पिस्टल के लाइसेंस को रद्द करने की प्रक्रिया के लिए कागजी कार्रवाई की जा रही है। साथ ही, बच्चे को समझाया जा रहा है और उसके मां और अन्य परिजनों से भी बात की जा रही है।

पिस्टल के लाइसेंस को रद्द करने की प्रक्रिया के लिए कागजी कार्रवाई की जा रही है : **अंकित सिंह**

अवैध हथियारों की आपूर्ति करने वाले गिरोह के दो सदस्य गिरफ्तार

नई दिल्ली, 25 अगस्त (देशबन्धु)। दिल्ली पुलिस ने अवैध हथियारों की आपूर्ति करने वाले एक अंतरराज्यीय गिरोह के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया है जो अपने लेन-देन के लिए सोशल मीडिया मंच का इस्तेमाल करते थे।

पुलिस के अनुसार, आरोपी मध्य प्रदेश के खरगोन से हथियार खरीदते थे और दिल्ली-एनसीआर (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) में उसकी आपूर्ति करते थे। पुलिस ने बताया कि आरोपियों की पहचान उत्तर प्रदेश निवासियों अरविंद कुमार (45) और विनोद कुमार (48) के रूप में की गई है और उनके पास से 0.32 बोर की आठ देशी पिस्तौल बरामद की गई हैं।

- लेन-देन के लिए करते थे सोशल मीडिया का इस्तेमाल

विशेष प्रकोष्ठ के पुलिस उपायुक्त अमित कौशिक ने बताया कि 19 अगस्त को पुलिस को सूचना मिली थी कि दो हथियार तस्कर अवैध हथियारों की खेप पहुंचाने के लिए जैतपुर में आगरा कनाल रोड पर पहुंचेंगे।

कौशिक ने बताया कि सूचना के आधार पर पुलिस की एक टीम गठित की गई जिसने कनाल रोड के पास जाल बिछाकर दोनों को पकड़ लिया और उनके पास से आठ पिस्तौल बरामद की गईं। अधिकारी ने बताया कि आरोपी आठ साल से हथियारों की तस्करी कर रहे थे।

सितंबर-अक्टूबर से शुरू होगा जामिया के सीडीओई का नया सत्र

नई दिल्ली, 25 अगस्त (देशबन्धु)। जामिया मिलिया इस्लामिया जेएमआई के सेंटर फॉर डिस्टेंस एंड ऑनलाइन एजुकेशन सीडीओई केंद्र में स्नातकोत्तर और स्नातक कोर्सेज में दाखिले की प्रक्रिया जारी है। विश्वविद्यालय द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार सेंटर का नया सत्र सितंबर-अक्टूबर में शुरू होगा। केंद्र अगले बैच से पत्रकारिता, मास मीडिया, शैक्षिक मूल्यांकन के क्षेत्र में कुछ डिप्लोमा और स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम शुरू करने की भी योजना बना रहा है, जो जनवरी,फरवरी 2025 से शुरू होंगे।

जामिया के पीआरओ अजीम अहमद ने बताया कि एमबीए, एम.कॉम और एमए कोर्सेज इतिहास, अंग्रेजी, उर्दू, हिंदी, राजनीति विज्ञान, लोक प्रशासन, समाजशास्त्र, शिक्षा, वाणिज्य, एचआरएम, भूगोल और इस्लामी अध्ययन के साथ-साथ यूजी कोर्सेज बीए, बी.कॉम, बीबीए आदि में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी जेएमआई वेबसाइट पर जा सकते हैं और प्रवेश के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसके साथ ही विभिन्न कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए आवेदन स्वीकार करने की अंतिम तिथि भी नजदीक है। इसके विस्तृत विवरण के लिए विद्यार्थी वेबसाइट देख सकते हैं। आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 अगस्त 2024 है। नए सत्र में केंद्र कुछ नए अध्ययन केंद्र शुरू करने जा रहा है।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने सुना प्रधानमंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम

नई दिल्ली, 25 अगस्त (देशबन्धु)। दिल्ली भाजपा ने आज अपने प्रत्येक रविवार को चल रहे झुग्गी विस्तार अभियान को प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मासिक 'मन की बात' सुनने की कार्यक्रम श्रृंखला से जोड़ा और इसी कड़ी में आज भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा एवं दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा और अन्य नेता एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता लगभग 917 झुग्गी बस्तियों में आयोजित विशेष कार्यक्रमों में गए।

- लगभग सात हजार पोलिंग बूथों पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने प्रधान मंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम को स्थानीय नागरिकों के साथ सुना

लगभग 7000 पोलिंग बूथों पर भाजपा नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने प्रधान मंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम को स्थानीय नागरिकों के साथ सुना। पूर्वी दिल्ली की कृष्णा नगर विधानसभा की सफेदा बस्ती, मुल्तानी मोहल्ला में आयोजित एक विशाल 'मत की बात' कार्यक्रम में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने प्रधान मंत्री का 'मन की बात' कार्यक्रम झुग्गी वासियों एवं अन्य नागरिकों के साथ दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा की उपस्थिती में सुना। सफेदा बस्ती में भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री डा. अल्का गुर्जर एवं सरदार मनजिंदर सिंह सिरसा, स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डा. हर्षवर्धन, भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया सह प्रमुख संजय मयूख, राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रेम शुक्ला, और निगम पार्षद संदीप कपूर ने भी 'मन की बात' कार्यक्रम सामूहिक रूप से सुना।

कार्यक्रम पश्चात जगत प्रकाश नड्डा ने सब को श्री कृष्ण जन्माष्टमी की शुभकामनाएं दीं और कहा की 'मन की बात' हमे नित नई जानकारी देता है। वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की प्रधान मंत्री हमे 'मन की बात' कार्यक्रम से जहां समाज, देश, ज्ञान, विज्ञान के नित नये पहलू समझाते हैं तो वहीं यह भी समझाते हैं की हमें जनता से राजनीतिक मकसदों से हट कर रिश्ता जोड़ना चाहिए।

सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी ने बाल्मीकि मंदिर पुष्प विहार वार्ड में, सांसद योगेन्द्र चांदोलिया ने संजय कैम्प समयपुर बादली, सांसद कमलजीत सहरावत ने हरिजन बस्ती मंगलापुरी, सांसद प्रवीन खंडेलवाल ने संगम पार्क, सांसद बांसुरी स्वराज ने धोबीघाट लोधी रोड़ में स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम सुना। प्रदेश महामंत्री विष्णु मित्तल ने भीम बस्ती छत्तरपुर, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता एवं प्रदेश उपाध्यक्ष श्री विनय रावत ने भीम नगर झुग्गी नांगलोई, दिल्ली नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष सरदार राजा इकबाल सिंह ने ओटरम लेन बस्ती में प्रधान मंत्री का 'मन की बात' कार्यक्रम सुना।

आम आदमी पार्टी के पांच निगम पार्षद भाजपा में शामिल

नई दिल्ली। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा एवं अन्य वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिती में आम आदमी पार्टी के 5 निगम पार्षदों ने आज एक पत्रकार सम्मेलन में भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। रविवार को दिल्ली भाजपा कार्यालय में आयोजित पत्रकार सम्मेलन में वार्ड 28 से पार्षद रामचंद्र, वार्ड 30 से पार्षद पवन सहरावत, वार्ड 177 से पार्षद ममता पवन, वार्ड 178 से पार्षद सुघंधा बिधूड़ी एवं वार्ड 180 से पार्षद मंजू निर्मल के आलावा 'आप' के तीन सक्रिय नेता सचिन बिधूड़ी, राजू निर्मल एवं पवन कुमार ने भी भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। पत्रकार सम्मेलन में सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी एवं योगेन्द्र चांदोलिया, वरिष्ठ नेता सरदार अरविंदर सिंह लवली एवं राजकुमार आनंद, दिल्ली नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष सरदार राजा इकबाल सिंह ने पटके पहना कर भाजपा में शामिल नए पार्षदों एवं नेताओं को पार्टी पटका पहना कर भाजपा में स्वागत किया और मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर ने सभी पार्षदों एवं नेताओं का परिचय रखा। भाजपा में शामिल पांचों आम आदमी पार्टी पार्षदों ने कहा कि हम भाजपा के शीर्ष नेतृत्व के भ्रष्टाचार एवं अकर्मण्यता से जो गत 2 साल में सामने आया है से त्रस्त होकर और प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मीदी के जन समर्पण से प्रभावित होकर भाजपा में शामिल हो रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में लगातार देश विकास के पथ पर अग्रसर है और नए-नए कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं : **वीरेन्द्र सचदेवा**

कैपिटल ज़ोन

उवाच "

योजना में जीडीए ग्रुप हाउसिंग के लिए बड़े भूखंड उपलब्ध कराएगा, लेकिन साथ में सिंगल यूनिट भूखंड आवंटित करने की भी योजना है, लोनी में प्रस्तावित नई टाउनशिप में छोटे भूखंड भी होंगे। इसकी प्लानिंग आम लोगों के बजट को ध्यान में रखते हुए की जा रही है: राजेश कुमार सिंह, सचिव जीडीए

बोर्ड से राहत नहीं मिलने पर शासन के पास पहुंचा बिल्डर

नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। एमएआर साहा बिल्डर के सेक्टर-52 स्थित व्यवसायिक भूखंड के बकाए पर राहत देने से बोर्ड ने इंकार कर दिया है। इस भूखंड पर नोएडा प्राधिकरण के करीब 1500 करोड़ रुपए बकाया हैं। प्राधिकरण से कोई मदद नहीं मिलने पर बकाए पर राहत के लिए बिल्डर ने शासन में अपील की थी। शासन ने इस मामले में प्राधिकरण के बोर्ड को आदेश दिया था कि वह प्रकरण पर विचार करे। अब बोर्ड ने बिल्डर की अपील को खारिज कर दिया है। बिल्डर को पूरा बकाया जमा करना होगा।

नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों ने बताया कि मैसर्स एमएमआर साहा इन्फ्रास्टक्चर प्राइवेट लिमिटेड को भूखंड संख्या ई-1, सेक्टर-52 को 28 मार्च 2011 को आवंटित किया गया था। इस भूखंड का क्षेत्रफल 35312.08 वर्ग मीटर है। इस भूखंड की आवंटन राशि करीब 266 करोड़ 87 लाख रुपए होती है। बिल्डर को इस राशि का 10 प्रतिशत हिस्सा 60 दिन के अंदर और बाकी 90 प्रतिशत पैसा 16 अर्द्धवार्षिक

■ एमएआर साहा बिल्डर के बकाया पर राहत देने से प्राधिकरण ने किया इनकार
■ 1500 करोड़ रुपए है बकाया

किस्तों में जमा करना था। प्राधिकरण की तरफ से 2 साल में 4 अर्द्धवार्षिक अवधि का मोरेटोरियम भी दिया गया। अधिकारियों ने बताया कि आवंटी ने समय से मोरेटोरियम अवधि का ब्याज अथवा कोई किश्त जमा नहीं की। बकाया जमा करने के लिए कई नोटिस देने के बावजूद आवंटी ने पैसा जमा नहीं किया। इस पर प्राधिकरण ने 22 जुलाई 2015 को भूखंड आवंटन निरस्त कर दिया गया। अधिकारियों ने बताया कि इसके बाद बिल्डर ने पुर्नस्थापन शुल्क की धनराशि करीब 26 करोड़ रुपये जमा कराए लेकिन उस समय शपथ पत्र नोटराईज नहीं होने तथा बैंक ड्राफ्ट की अवधि समाप्त होने की वजह से भूखंड का पुर्नस्थापित पत्र जारी नहीं हो सका। बिल्डर ने अभी तक सिर्फ 75 करोड़ रुपये जमा कराए हैं। इस पर प्राधिकरण द्वारा भूखंड पर आरसी भी जारी कराई गई। ऐसे में भूखंड पर अभी तक 1493 करोड़ रुपए बकाया हैं। इस मामले में बकाए में राहत के लिए बिल्डर ने शासन में अपील दायर की थी। अपील में कहा कि समय से नक्शा पास न होने, एनजीटी की रोक के दौरान का शून्यकाल, आवंटन निरस्त करने, कोविड महामारी आदि का उल्लेख करते हुए पूरे समय को जीरो पीरियड मानने का आग्रह किया। इसके साथ ही बिल्डर ने एक वित्तीय संस्थान से इस भूखंड के लिए 300 करोड़ रुपए की फंडिंग प्राप्त करने का सहमति पत्र लगाते हुए भूखंड को पुर्नस्थापित करने की मांग की।

हरनंदीपुरम के बाद दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस-वे पर भी टाउनशिप लाने की तैयारी में जीडीए

गाजियाबाद, 25 अगस्त (देशबन्धु)। हरनंदीपुरम टाउनशिप की कवायद के बाद गाजियाबाद विकास प्राधिकरण ने अब दिल्ली- मेरठ एक्सप्रेस-वे पर भी टाउनशिप लाने की तैयारी शुरू कर दी है। जल्द ही टाउनशिप के लिए सर्वे कराएगा। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस-वे के पास लोनी क्षेत्र में टाउनशिप के लिए जीडीए जल्द ही सर्वे कराकर भूमि चिन्हित करने का काम करेगा। जीडीए इस टाउनशिप में ग्रुप हाऊसिंग प्लॉट तैयार कर बेचेगा, यानि आने वाले समय में बिल्डरों का नया डेरा भी इसी दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस-वे कॉरिडोर में होने जा रहा है। आप भी यदि इस लोकेशन पर आशियाने की सोच रहे हैं तो तैयार हो जाइए सपनो की नई उड़ान भरने के लिए। जीडीए की यह टाउनशिप गाजियाबाद में तो होगी ही दिल्ली और देहरादून की कनेक्टिविटी भी यहां से काफी बेहतर रहने वाली है।

इस टाउनशिप के लिए फास्ट और स्मूथ कनेक्टिविटी का एक बेहतर जरिया

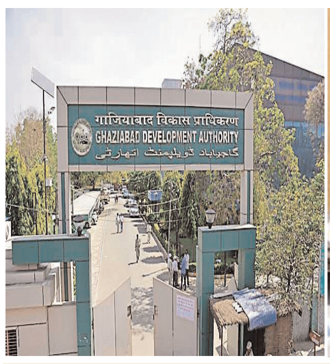

■ जीडीए टाउनशिप में ग्रुप हाऊसिंग प्लॉट तैयार कर बेचेगा
■ अब दिल्ली-बागपत रोड पर भी मेट्रो आगे बढ़ने की तैयारी में

दिल्ली मेट्रो भी होगी। लोनी के शिव विहार तक मेट्रो की कनेक्टिविटी पहले से है, अब दिल्ली-बागपत रोड भी मेट्रो आगे बढ़ने की तैयारी में है। इस रोड पर मेट्रो ट्रैक पर काम चल रहा है। आवास एवं विकास परिषद की मंडोला आवासीय योजना का काम पहले से चल रहा है, जीडीए के इस क्षेत्र में कदम बढ़ाने से जहां अवैध निर्माणों पर ब्रेक लगेगा वहीं इस क्षेत्र में तेजी से विकास की यात्रा शुरू होगी। क्षेत्र में अवैध निर्माण के खिलाफ कार्यवाही के लिए जीडीए ने विशेष दस्ते का गठन किया जाएगा, इसकी रूपरेखा तैयार कर ली गई है। जीडीए वीसी अतुल वत्स ने बताया कि लोनी क्षेत्र में नई टाउनशिप लाने से पहले पूरे क्षेत्र में अवैध कब्जे और अतिक्रमण का ड्रोन सर्वे कराया जाएगा। क्षेत्र के अवैध कब्जों से मुक्त कराने के बाद स्थलीय निरीक्षण कर जमीन चिन्हित की जाएगी। टाउनशिप के लिए दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस-वे से 10-15 मिनट की दूरी पर स्थित गांवों की भूमि की पैमाइश कराने की तैयारी है।

योजना में जीडीए ग्रुप हाउसिंग के लिए बड़े भूखंड उपलब्ध कराएगा, लेकिन साथ में सिंगल यूनिट भूखंड आवंटित करने की भी योजना है, यानि जो लोग भूखंड पर अपने सपनों का आशियाना बनाना चाहेंगे, उन्हें भी टाउनशिप एक नया अवसर लेकर आएगी। जीडीए सचिव राजेश कुमार सिंह ने बताया कि लोनी में प्रस्तावित नई टाउनशिप में छोटे भूखंड भी होंगे। इसकी प्लानिंग आम लोगों के बजट को ध्यान में रखते हुए की जा रही है।

सार संक्षेप

छठ पूजा समिति ने किया अखंड पाठ का आयोजन

खोड़ा। शिव हनुमान मंदिर एवं छठ पूजा आयोजन समिति के तत्वावधान में बिहारी कॉलोनी स्थित शिव हनुमान मंदिर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मंदिर प्रांगण में अखंड पाठ आयोजित किया गया। पाठ संपन्न होने के उपरांत आरती प्रसाद वितरित किया गया। दोपहर बाद मंदिर परिसर में भंडारा किया गया। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष लक्ष्मीकांत झा, घनश्याम पांडेय, राम दयाल राय, राजेंद्र सिंह, वीरेंद्र तिवारी, दयानंद मिश्र, अवनीश यादव, एस पी यादव सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

नाहल गांव में घर में सो रहे तीन बच्चे आग लगने से झुलसे, एक को मौत, दो गंभीर

गाजियाबाद। मसूरी थाने के तहत गांव नाहल में शनिवार को एक मकान में शॉर्ट सर्किट के चलते लगी आग में झुलसे तीन बच्चों में से रविवार को एक की मौत हो गई है जबकि दो अस्पताल में जिंदगी और मौत से जूझ रहे हैं। मसूरी के गांव नाहल में शनिवार सुबह एक मकान में शॉर्ट सर्किट के चलते आग लग गई। जिसमें तीन मासूम झुलस गए। आग उस समय लगी जब तीनों बच्चे घर में सो रहे थे। नाहल निवासी जाकिर ने बताया कि शनिवार को उसकी पुत्री नाहिद (15), पुत्र फैजान (12) तथा जुनैद (10) सो रहे थे। बिजली के शार्ट सर्किट होने से कमरें में आग लग गई। जिसमें तीनों मासूम झुलस गये। जिन्हें गम्भीर हालत में सफदरजंग अस्पताल की बर्न यूनिट में भर्ती कराया गया। जाकिर के भाई डॉ. तालिब ने जानकारी देकर बताया कि देर रात झुलसे हुए फैजान 12 की सफदरजंग अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई है। तथा दोनों मासूम नाहिद और जुनैद का अभी इलाज चल रहा है। मगर दोनों की स्थिति गम्भीर बनी हुई है। पुलिस में मृत बच्चे के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

सेक्टर-51 में हुई जनरल बाडी मीटिंग

नोएडा। सेक्टर-51 सामुदायिक केंद्र में मैनेजिंग कमेटी द्वारा जनरल बॉडी मीटिंग आयोजित की गई। बैठक के दौरान महासचिव संजीव कुमार द्वारा वार्षिक रिपोर्ट 2023-24 पेश की। जिसमें साल भर में सेक्टर की बेहतरी के लिए क्या काम किए गए और भविष्य में क्या काम किए जाएंगे इस पर चर्चा चर्चा करी गई। कोषाध्यक्ष एम जी अग्रवाल ने साल 2023-24 की आय और व्यय के विवरण के साथ-साथ आरडब्ल्यूए खाते, सुरक्षा निधि खाते और सेक्टर 51, नोएडा के सामुदायिक केंद्र की संपत्ति और देनदारियों का सारांश निवासियों को दिया। वित्तीय रिपोर्टिंग में पारदर्शिता के कारण आरडब्ल्यूए वार्षिक ऑडिट आयोजित करता है और निवासियों और निवेशकों के बीच उसकी स्थिति बेहतर होती है। निवासियों द्वारा अपनी समस्याओं में विशेष कर एंक्रोचमेंट, वेंडिंग जॉन, अनऑथराइज्ड बैंक्विट हॉल और होने वाली समस्या, सेक्टर की एंट्रेंस पर होने वाले जाम से होने वाली समस्या, नोएडा मेट्रो रेल कॉरपोरेशन द्वारा सेक्टर के अंदर से ई रिक्शा चलाए जाने से होने वाली समस्या, बिजली के केबल अंडरग्राउंड ना होने के कारण होने वाली समस्या, पानी और सीवर की समस्या के विषय में एग्जीक्यूटिव कमेटी को अपडेट करवाया और अनुरोध किया की योजनाबद्ध तरीके से समस्याओं को प्रोटाइज रखते हुए समस्याओं का समाधान करवाने के लिए अनुरोध किया गया।

शिकायत के बावजूद नहीं हटाया गया अतिक्रमण

खोड़ा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। निकाय क्षेत्र के अंतर्गत सड़क पर अतिक्रमण बढ़ जाने से लोगो को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। नगर पालिका परिषद के अधिकारियों से शिकायत के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं की गई। सड़कों पर दोनों तरफ से अतिक्रमण होने की वजह से स्थानीय निवासियों को मुसीबतें झेलनी पड़ रही है। वार्ड 14 नेहरू गार्डेन के सभासद सी पी शर्मा ने बताया कि नेहरू गार्डेन पुलिस चौकी से लेकर अर्चना बिल्डर तक सड़कों पर दुकानदारों द्वारा दो से ढाई हजार रुपए प्रतिमाह वसूलकर सड़को के दोनो तरफ रेहड़ी पटरी लगवाई जाती है। दोनो तरफ से सड़क घिर जाने की वजह से सुबह शाम जाम लग जाता है। रेहड़ी पटरी वालों से विरोध करने पर झगड़े पर आमादा हो जाते है। जाम लगने से लोगों का जीवन नारकीय हो गया है। उन्होंने बताया कि दर्जनों व्यक्तियों द्वारा मामले की शिकायत नगर पालिका परिषद के अधिकारियों से की गई। एक माह बीत जाने के बावजूद अतिक्रमण नहीं हटाया गया। लोगो ने सड़क को अतिक्रमण मुक्त कराए जाने की मांग की है।

सड़क पर मोबाइल लूटने वाले दो गिरफ्तार

■ आरोपी के पास से 9 मोबाइल फोन किए गए बरामद
■ एक सिम ये दूसरे मोबाइल में यूपीआई एक्टिवेट कर खरीदा एप्पल फोन

नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। थाना सेक्टर-126 पुलिस ने एनसीआर में मोबाइल फोन लूटने वाले गैंग के 02 बदमाशों का गिरफ्तार किया है। इसके अलावा एक बाल अपचारी भी है। कब्जे से लूट की घटनाओं में शामिल 9 मोबाइल फोन बरामद किए गए है। लूटे गए फोन से सिम निकालकर दूसरे फोन में यूपीआई एक्टिवेट कर निकाले गए पैसों से खरीदा गया एक आईफोन, अवैध हथियार व घटना में प्रयुक्त मोटरसाइकिल भी बरामद की गई है। एडीसीपी मनीष मिश्र ने बताया कि थाना सेक्टर-126 नोएडा की गठित पुलिस टीम द्वारा करीब 150 सीसीटीवी कैमरों की फुटेज का देखा गया। जिसके बाद इनकी पहचान की गई। इसके बाद 25 अगस्त 2024 को इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस व गोपनीय सूचना की सहायता से थाना क्षेत्र के पुश्ता रोड़ सेक्टर-126 नर्सरी के पास से

मोटरसाइकिल पर सवार 2 लुटेरों सचिन पुत्र पन्नालाल, अंकित कुमार पुत्र महेन्द्र सिंह को गिरफ्तार किया। साथ ही एक अपचारी को पुलिस अभिरक्षा में लिया गया। ये लोग लूट के माल को इकट्ठा कर दिल्ली बेचने के उद्देश्य से जा रहे थे। इन लोगों ने एक लूटे गए फोन से सिम निकालकर दूसरे फोन में यूपीआई एक्टिवेट कर निकाले गए 80 हजार रुपयों से एक 01 एप्पल आईफोन खरीदा। इनके पास से बरामद किए गए फोन में सेक्टर-98 नोएडा से लूटा गया 1 मोबाइल फोन, महामाया फ्लाईओवर के पास से लूटा गया 1 मोबाइल फोन सहित लूटे गए कुल 9 मोबाइल फोन बरामद किए गए। एडीसीपी ने बताया कि तीनों ने बताया कि हम मिलकर नोएडा में जगह-2 से मोबाइल फोन छीनते है। उन फोनों को बेचकर अपनी मौज मस्ती व जरूरत में पैसों को इस्तेमाल करते है। हम तीनों स्पेलेन्डर मोटरसाइकिल व एक सफेद रंग की अपाचे मोटरसाइकिल को फोन छीनने में इस्तेमाल करते है। मोटरसाइकिल पर सवार होकर घूम-घूमकर ऐसे लोगों को चिन्हित करते है जो सड़क पर फोन पर बात करते हुए जा रहे हो। जिस पर मोटरसाइकिल पर पीछे बैठा व्यक्ति मोबाइल फोन छीनने का काम करता है। फोन को छीनकर दिल्ली में बेच देते है। लूटे हुए फोन की बिक्री से मिले पैसों को अपनी मौज मस्ती व शौक में खर्च करते है।

मोबाइल व वाहन चोरी करने वाले 5 गिरफ्तार

नोएडा। थाना सेक्टर-58 पुलिस ने वाहन चोरी व मोबाइल फोन स्नैच करने वाले 5 बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से चोरी की 2 मोटरसाइकिल, लूट व चोरी के 13 मोबाइल फोन बरामद किए गए। पुलिस द्वारा लोकल इंटेलिजेंस व इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस की सहायता से थाना क्षेत्र के छोटा डी पार्क सेक्टर-62 के पास से गिरफ्तार किया गया। बदमाश बदल-बदल कर मोबाइल स्नैचिंग करते है। मोबाइल फोन को झुग्गियों व राह चलते व्यक्ति में 2,000 से 3,000 रुपये में बेचकर शौंक पूरा करते है। यह लोग बाल अपचारी से मोटरसाइकिल चोरी कराते है। चोरी की मोटरसाइकिल पर सवार होकर नोएडा, गाजियाबाद व दिल्ली में विभिन्न स्थानों से मोबाइल स्नैचिंग करते है।

मकान की छत भरभरा कर गिरी, सात लोग दबकर घायल, तीन की हालत गम्भीर

■ घायल दो लोगों का अस्पताल में चल रहा इलाज

गाजियाबाद, 25 अगस्त (देशबन्धु)। मुरादनगर थाना इलाके के जलालाबाद में रविवार की सुबह एक मकान की छत गिर गई। जिसके के नीचे सो रहे सात लोग घायल हो गए। जिनमें तीन की हालत गम्भीर बनी हुई है।

घायलों को मोदीनगर के निधि अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मौके पर तहसील प्रशासन में पुलिस की टीम पहुंच गई है। बचाव कार्य चल रहा है। गांव जलालाबाद में ज्ञानेंदर सिंह अपने परिवार सहित रहते हैं और खेती करके लालन पालन करते हैं। उनका मकान काफी पुराना है।

मकान की छत पर लकड़ी की बीम व सिल्ली पड़ी हुई है। शनिवार रात को रोजाना की तरह परिवार के लोग बीना (45), सविता (52), खुशी (19), गुनगुन (13),वीर (12) सो गए थे।

रविवार सुबह मकान की छत गिर गई। इस दौरान तेज आवाज हुई और चीख-पुकार मच गई। मौके पर पहुंचे लोगों ने देखा कि ज्ञानेंदर सिंह के मकान की छत भरा भराकर गिर गई है।

मौके पर सैकड़ो ग्रामीण में बचाव शुरु किया। एक घंटे की मशक्कत के बाद मलवे से दबे लोगों को बाहर निकाल कर मोदीनगर के अस्पताल में भर्ती कराया। इस हादसे में सात लोग घायल हुए हैं और तीन की हालत गंभीर बनी हुई है।

क्रिप्टोकरेंसी में निवेश कराने के नाम पर ठगी करने वाले तीन गिरफ्तार

नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। क्रिप्टो करेंसी के नाम पर लोगों को ठगने वाले तीन आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इनके पास से 4 लाख 50 हजार रुपए नगद और कार बरामद की गई है। ये लोग टेलीग्राम ऐप के माध्यम से सस्ते दामों में क्रिप्टो करेंसी में निवेश कराने के नाम पर उनके एकाउंट में यूएसडीटी अमाउंट वापस मिलने व कैश में पैसे देने से टैक्स की बचत हो जाने के नाम पर टारगेट करते थे। जब कोई व्यक्ति इनसे संपर्क करता तो यह उनसे कैश में पैसे लेकर गाड़ी से भाग जाते थे।

एडीसीपी मनीष मिश्र ने बताया कि लोकल इंटेलिजेंस व इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस की सहायता से सेक्टर-47 के पीछे सर्विस रोड इन तीनों गिरफ्तार किया गया है। इनकी पहचान निशांत चौहान, गौरव

■ यूएसडीटी में अकाउंट वापस मिलने और कैश देने के बहाने करते थे टारगेट
■ पैसों का प्रयोग मौज मस्ती के लिए करते थे

भाटी और सागर भाटी उर्फ सैंकी के रूप में हुई है। एडीसीपी ने बताया कि निशांत चौहान ने पूछताछ में बताया कि उसने साल 2019 में बीए की परीक्षा पास की थी। उसकी गौरव व सागर से काफी अच्छी दोस्ती है। निशांत द्वारा अपने दोस्तों गौरव व सागर व एक अन्य के साथ मिलकर योजना बनाकर क्रिप्टों करेंसी में निवेश कराने के नाम पर सस्ते दाम में यूएसडीटी एमाउंट दिलाने के नाम पर व नगद रूपये लेकर टैक्स के पैसों की बचत का लालच देकर टेलीग्राम ऐप के माध्यम से सम्पर्क किया गया था। उसे मुरादाबाद से 23 अगस्त 2024 को शाम के समय सेक्टर-48 नोएडा बुलाया गया और उसे निशान्त द्वारा अपने दोस्त सागर की गाड़ी में गौरव व एक अन्य व्यक्ति के साथ उसे आगे छोड़ने को लेकर बैठा लिया गया। अचानक चकमा देकर उसे उतारकर उसका बैग चोरी कर भाग गये थे। जिसमें पीड़ित के पैसे थे। जिसे वह अपने कॉलेज की फीस के बहाने लेकर आया था। अवैध हथियार को यह अपनी सुरक्षा के लिये रखते है। आज यह लोग आपस में पैसे बांट रहे थे। पैसो का प्रयोग मौज मस्ती , क्लब और पार्टी में खर्च करते थे।

आज धूमधाम से मनाया जाएगा कृष्ण जन्मोत्सव

नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। भगवान कृष्ण का जन्मोत्सव आज 26 अगस्त को धूमधाम से मनाया जाएगा। उत्सव मनाने के लिए नोएडा और ग्रेटर नोएडा के मंदिरों में भव्य तैयारियां जारी हैं। राधा-कृष्ण के श्रृंगार से लेकर उनको पालने में झुलाने की व्यवस्था की जा रही है। नोएडा में जन्माष्टमी पर सेक्टर-33 स्थित इस्कॉन मंदिर में तैयारी का सिलसिला अंतिम दौर में है। वहीं, बाजारों में कान्हा के जन्मोत्सव की रौनक है। घरों में भी लोगों ने झांकियां सजाना शुरू कर दी है। स्कूलों में भी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सेक्टर-33 के इस्कॉन मंदिर मंदिर के चारों ओर आकर्षक रंगीन रोशनी की व्यवस्था की गई है। इसी के माध्यम से भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं की नाट्य प्रस्तुति दी जाएगी।

इस्कॉन मंदिर के मीडिया प्रभारी अरुण सैनी ने बताया कि जन्माष्टमी पर्व पर मंदिर में बैरिकेडिंग रहेगी। शहर से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों के मंदिरों में उत्सव का माहौल है। मंदिर जाने वाले मार्गों पर रंग-बिरंगी बिजली की सजावट हो रही है।

■ बाजारों में बढ़ी रौनक
■ मंदिरों में भव्य आयोजन की तैयारी

सनातन धर्म मंदिर के पुजारी हरेंद्र नाथ दुबे ने बताया कि जन्मोत्सव को लेकर तीन दिन तक कार्यक्रम होंगे। 26 अगस्त को सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ कृष्ण उत्सव मनाया जाएगा। वहीं, सेक्टर-20 स्थित हनुमान मंदिर के मीडिया प्रभारी संदीप ने बताया कि मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना की जाएगी। स्कूलों में भी जनमाष्टमी की धूम है। सेक्टर-44 स्थित महामाया बालिका इंटर कॉलेज में कक्षा 3 की छात्राओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र को उजागर किया। डीएवी स्कूल में भी कार्यक्रम हुए। जन्माष्टमी पर बाजारों में रविवार को श्रीकृष्ण की प्रतिमा, सजावट के समान, पूजन-अर्चन सामग्री की खूब खरीदारी हुई। जन्माष्टमी पर घर-घर और मोहल्लों में सजाई जाने वाली झांकियों के लिए खिलौनों की दुकानों पर बिक्री चल रही है। झांकियां सजाने के लिए लोग विभिन्न प्रकार के खिलौनों की खरीदारी कर रहे है। बाजार में अलग अलग साइज में कान्हा की मूर्तियां 500 से 1600 रुपए तक की कीमत में बिक रही हैं। इनकी मांग बहुत है। लडडू गोपाल का सिंहासन 100 से 500 रुपए तक बिक रहा। कान्हा की पोशाक 50 रुपए से लेकर 200 रुपए तक, बांसुरी 10 से 30 रुपए तक, मुकुट पांच से 50 रुपए तक, मुकुट पांच से 50 रुपए तक वहीं मोर पंख भी दस से 20 रुपए तक बेचे जा रहे हैं।

पश्चिम क्षेत्र के 27 जिलों को मिलाकर पृथक प्रदेश बनाने की मांग ने जोर पकड़ा

पश्चिम प्रदेश निर्माण मोर्चा ने कई सांसदों को सौंपा ज्ञापन

गाजियाबाद, 25 अगस्त (देशबन्धु)। पश्चिम प्रदेश निर्माण मोर्चा उत्तर प्रदेश के पश्चिम क्षेत्र के 27 जिलों को मिलाकर पृथक प्रदेश बनाने की मांग लगातार जोर पकड़ रही है। पश्चिम प्रदेश निर्माण मोर्चा ने कई सांसदों को सौंपा ज्ञापन सौंपा है। मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष सतपाल यादव ने रविवार को बताया कि मोर्चा उत्तर प्रदेश के पश्चिम क्षेत्र के 27 जिलों को मिलाकर पृथक प्रदेश बनाने की मांग लगातार करता आ रहा है।

इसी कड़ी में इस मांग को संसद में जोरदार ढंग से उठवाने के लिए मोर्चा द्वारा पश्चिम क्षेत्र के प्रत्येक सांसदों को ज्ञापन दिया जा रहा है।

मोर्चा के पदाधिकारियों ने नीरज मौर्य (सांसद आंवला), श्रीमती रुचि वीरा (सांसद मुरादाबाद), अनूप प्रधान (सांसद हाथरस), इमरान मसूद (सांसद सहारनपुर), राजकुमार

सांगवान (सांसद बागपत), भोला सिंह (सांसद बुलंदशहर) को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन सौपने वालों में कर्नल सुधीर कुमार (केंद्रीय महासचिव), राजेंद्र चौधरी (केंद्रीय सचिव), राजेंद्र पाराशर (जिला अध्यक्ष गाजियाबाद), बृजभान सिंह (अध्यक्ष पश्चिम क्षेत्र विकास समिति), गौरव यादव (महानगर अध्यक्ष गाजियाबाद), ललित सिवास (जिला संगठन मंत्री गाजियाबाद), रमेश कुमार आदि उपस्थित रहे।

उवाच

जल संरक्षण, प्लॉस्टिक मुक्त धरती, स्मार्ट गांव आदि जैसे कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। उन्होंने विद्यार्थियों से मुख्य रूप से इन पांच बातों पर जैसे आप जहां भी किसी कार्यक्रम में शामिल होने जाएं तो तैयार रहें, अपने जुनून को पेशे में बदलें, एक ही काम को अलग ढंग से करें, हमारी दो माताएं हैं, एक जैविक और दूसरी धरती माता तथा हम धरती माता से जो उपभोग करते हैं उसे वापस लौटा दें एवं सामाजिक प्रबंधन वाणिज्यिक प्रबंधन की नींव है। **डॉ. हीरालाल पटेल**

ओवर लोड वाहनों व अवैध खनन को ढोने वाले ग्यारह वाहनों पर कार्रवाई

- **डीएनडी, कालिंदी कुंज एवं बिसरख पर की गई प्रवर्तन कार्रवाई में 11 वाहन हुए सीज**
- **संयुक्त प्रवर्तन कार्रवाई में लगभग 11 लाख 47 हजार का जुर्माना वसूला**

ग्रेटर नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। शासन द्वारा ओवर लोड संचालित वाहनों और खनन सामाग्री के अवैध परिवहन के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई के निर्देशों के क्रम में जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने 8 सदस्यीय जनपद स्तरीय कार्यबल (टास्क फोर्स) का गठन किया गया है। जिलाधिकारी द्वारा टास्क फोर्स कमेटी के अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि जिले में ओवर लोड चलने वाले वाहनों और खनन सामाग्री के अवैध परिवहन के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई हेतु प्रत्येक माह औचक निरीक्षण के साथ-साथ नियमित रूप से प्रवर्तन कार्यवाही की जाए।

अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व/प्रभारी खनन अतुल कुमार ने बताया कि राजस्व, परिवहन और खनन विभाग की जिला स्तरीय कार्यबल द्वारा ओवरलोड/अवैध परिवहन के विरुद्ध संयुक्त रूप से प्रवर्तन कार्रवाई की गई। अभियान में राजस्थान एवं हरियाणा से रोडी, गिट्टी, रेता लादकर गौतमबुद्धनगर आने वाले 11 ओवर लोड वाहनों के विरुद्ध कार्रवाई की गई। उन्होंने बताया कि यह कार्रवाई आज सुबह 4 बजे से 12 बजे तक इको टेक-1 डीएनडी, कालिंदी कुंज, चारमूर्ति बिसरख पर की गई और ओवर लोड वाहनों को थाना इकोटेक-1 वाहन, सेक्टर-126 कालिंदी कुंज में 6 वाहनों और बिसरख में 4 वाहनों को निरुद्ध किया गया। कार्रवाई में वाहनों में ओवर लोड माल परिवहन के अतिरिक्त कई वाहनों में पंजीयन चिन्ह अस्पष्ट होने और निर्माण सामाग्री त्रिपाल से ढका न होने, रिफ्लेक्टर न लगा होने एवं फिटनेस/परमिट प्रमाणपत्र न होने व कर न जमा होने के कारण प्रवर्तन की कार्रवाई की गई। खनन विभाग द्वारा बिना परमिट व ओवरलोड वाहनों पर लगभग 3 लाख 08 हजार रुपए और परिवहन विभाग द्वारा कार्रवाई करते हुए 8 लाख 39 हजार रुपए प्रशमन शुल्क और कर सहित कुल लगभग 11 लाख 47 हजार रुपए आरोपित किया गया। सभी चालकों के ड्राइविंग लाइसेंस निलंबन और परमिट निलंबन की संस्तुति की गई। इस कार्यवायी में नायब तहसीलदार दादरी प्रज्ञा सिंह, एआरटीओ प्रवर्तन डॉ. उदित नारायण, जिला खनन अधिकारी उत्कर्ष त्रिपाठी, यात्री कर अधिकारी राजेश मोहन सहित पुलिस और प्रवर्तन कर्मी शामिल रहे।

फार्मा व हेल्थकेयर प्रदर्शनी की अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी 28 से होगी शुरू

- **एक्सपो में 400 से अधिक प्रमुख भारतीय फार्मा कंपनियां अपने उत्पादों व प्रौद्योगिकियों का करेंगी प्रदर्शन**
- **केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री जितिन प्रसाद करेंगे उद्घाटन**

ग्रेटर नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। देश के फार्मा निर्यातकों की शीर्ष संस्था भारतीय फार्मास्युटिकल निर्यात संवर्धन परिषद, केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के साथ मिलकर ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में 28-30 अगस्त, 2024 तक फार्मा और हेल्थकेयर (आईपीएचईएक्स 2024) पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी और एक्सपो का आयोजन कर रही है। तीन दिवसीय फार्मा एक्सपो का उद्घाटन केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री जितिन प्रसाद करेंगे, जो भारत और दुनिया भर के घरेलू उद्योग जगत की प्रमुख कंपनियों को जुड़ने और व्यापार करने के लिए एक बेहतरीन मंच प्रदान करेगा। यह नए और मौजूदा ग्राहकों से मिलने का अवसर प्रदान करेगा, जो सक्रिय रूप से नए आपूर्तिकर्ताओं की तलाश कर रहे हैं, या मौजूदा परियोजनाओं की वर्तमान प्रगति का आकलन करना चाहते हैं। एस.वी. वीरमणि, अध्यक्ष, फार्मास्युटिकल एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल ऑफइंडिया के मुताबिक प्रदर्शनियों की रूपरेखा में फार्मास्युटिकल फॉर्मूलेशन, फार्मास्युटिकल एपीआई, आयुष, न्यूट्रास्युटिकल्स, स्वास्थ्य सेवाएं, जैव प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी उत्पाद, अनुसंधान एवं विकास सेवाएं, फार्मास्युटिकल प्रौद्योगिकी और परामर्श, डायग्नोस्टिक्स, सर्जिकल ड्रेसिंग, चिकित्सा उपकरण, फार्मास्युटिकल अनुसंधान, क्लिनिकल परीक्षण और कस्टम संश्लेषण शामिल होंगे। अंतरराष्ट्रीय फार्मा और हेल्थकेयर समूह में दुनिया भर से 400 से अधिक खरीदारों के भाग लेने की उम्मीद है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य वैश्विक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण और सस्ती जेनेरिक दवाओं तक पहुंच को सुगम बनाना है। वीरमणि ने कहा कि आईपीएचईएक्स ने अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त की है और दुनिया भर में फार्मास्युटिकल समुदाय के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया है। वर्ष 2023-24 के दौरान भारत का फार्मा निर्यात 27.84 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा, जिसमें से 30 प्रतिशत से अधिक निर्यात अमेरिका को हुआ। आवश्यक टीकाकरण योजना के तहत विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के लगभग 70 प्रतिशत टीके भारत से दिए गए।

किसान मजदूर संघर्ष मोर्चा के आशु को राष्ट्रीय सचिव किया मनोनीत

ग्रेटर नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। किसान मजदूर संघर्ष मोर्चा की बैठक चाई-4 कैंप कार्यालय पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आलोक नागर की अध्यक्षता में हुई, जिसमें संगठन का विस्तार किया गया। इस संबंध में संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर विकास प्रधान ने कहा कि आज किसान नौजवान की आवाज को मजबूत करने के लिए दूसरे संगठनों से भी

लोग किसान मजदूर संघर्ष मोर्चा की मजबूती को देखकर जुड़ रहे हैं। इसी क्रम में रविवार को विनोद कसाना निवासी डूंगरपुर रीलका को संगठन का युवा जिलाध्यक्ष मनोनीत किया है एवं आशु अट्टा को राष्ट्रीय सचिव बनाया गया है एवं दर्जनों साथियों ने संगठनों की सदस्यता ग्रहण की है। आगामी 10 सितम्बर को जेवर तहसील पर होने वाली महापंचायत को सफल बनाने के लिए जन जागरूक अभियान चलाने का निर्णय लिया है। जिले के अंदर प्राधिकरण किसानों का शोषण कर रहे हैं। जल्द ही तीनों प्राधिकरणों का घेराव किया जाएगा। इस मौके पर डॉ. विकास प्रधान, आलोक नागर, लौकेश भाटी, कृष्ण नागर, आशु, हरेंद्र नागर, सुन्दर कसाना, विनोद कसाना, मनीष नागर, विपिन कसाना, निक्की भाटी, भारत नागर, विकेश यादव आदि लोग मौजूद रहे।

सुपरटेक से पीड़ित लोग आर्थिक अपराध शाखा आयुक्त के सामने बयां किया अपना दर्द

- **घर की लगभग शत-प्रतिशत कीमत जमा करके लोग पजेशन के लिए भटक रहे हैं दर-दर**

ग्रेटर नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। सुपरटेक लिमिटेड के धोखाधड़ी के शिकार हजारों संकटग्रस्त घर खरीदारों के प्रतिनिधि आर्थिक अपराध शाखा के विशेष आयुक्त शरद अग्रवाल से पुलिस मुख्यालय में मिले। दरअसल दिल्ली एनसीआर में सुपरटेक लिमिटेड के हजारों घर खरीदार पिछले दस साल से अपने घरों के इंतजार में दर-दर भटक रहे हैं, ये हजारो घर खरीदार, राष्ट्रीय उपभोक्ता मंच, रेरा, एनसीएलएटी, सुप्रीम कोर्ट, आर्थिक अपराध शाखा और पटियाला हाउस कोर्ट में पिछले पांच साल से अपने अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं। सभी घर खरीदार सुपरटेक लिमिटेड के आर के अरोड़ा, मोहित अरोड़ा, जीएल खेरा, वाईजी एस्टेट के नीतीश अरोड़ा के सताए हुए हैं जो अपने घर का पूरा पैसा देने के बाद भी दस साल से बेघर है और जिन को घर मिल गए हैं वो आधी अधूरी बनी सोसायटी में अव्यवस्था का शिकार है। हजारो घर खरीदार मे से बहुतायत अपने घर की कीमत का 95 प्रतिशत या लगभग संपूर्ण राशि सुपरटेक को दे चुके हैं, लेकिन अभी तक घर के लिए भटक रहे हैं, सुपरटेक की विभिन्न परियोजना जो 2010 से शुरू हुई थी अभी तक अधूरी है, इनके घर खरीदार चौतरफा परेशान है इनमें ज्यादातर लोग ऐसे हैं जो घर की ईएमआई भी दे रहे हैं, किराया भी दे रहे हैं और इनकम टैक्स में ब्याज का फायदा भी नहीं ले पा रहे हैं, क्योंकि इनको घर का पजेशन नहीं मिला है। विशेष आयुक्त शरद अग्रवाल ने होम बायर के प्रतिनिधियों को बताया कि सुपरटेक के खिलाफकुल 13 एफआईआर हैं। उनमें से 8 मामले संबंधित अदालतों में विचाराधिन है। बाकी कुछ में विवेचना चल रही है और कुछ में आरोप पत्र जल्दी जारी करने की संभावना है। उन्होंने आगे कहा कि होम बायर के प्रतिनिधि अगले सप्ताह तक सभी एफआईआर और सभी अदालती मामलों की संदर्भ संख्या प्राप्त कर सकते हैं, जिसके लिए होम बायर के प्रतिनिधियों ने उनका धन्यवाद किया। होम बायर के अधिकारों की रक्षा लिए नॉर्थ आई से गुलशन कुमार एवं आकाश गोयल, इको विलेज-3 से चेतन कपूर एवं आयोग रस्तोगी, इको विलेज-1 से गौरव कपिल एवं महेंद्र कुमार महिंद्रा, हिलटाउन से सुमित गुप्ता आदि लोग मौजूद रहे।

डिलवरी के दौरान जुड़वा बच्चों की मौत को लेकर परिजनों में भारी रोष

ग्रेटर नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। दादरी क्षेत्र में एक दर्दनाक घटना सामने आया है, जहां डिलीवरी के दौरान जुड़वा बच्चों की मौत हो गई। इस घटना के बाद मृत बच्चों के परिजनों ने डॉक्टर पर लापरवाही का गंभीर आरोप लगाते हुए अस्पताल के बाहर धरना प्रदर्शन किया। पीड़ित परिवार ने पुलिस में शिकायत कर आरोपी डॉक्टर के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। दादरी थाना क्षेत्र के बैरगपुर गांव के रहने वाले सोनू की पत्नी आठ माह की गर्भवती थी और जुड़वा बच्चों को जन्म देने वाली थी। इनका इलाज दादरी के एक निजी अस्पताल में चल रहा था।

पीड़ित परिजन सोनू के अनुसार 18 अगस्त को उसकी पत्नी की तबीयत अचानक बिगड़ने पर उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया, हालांकि, अगले ही दिन 19 अगस्त को डॉक्टरों ने उसकी स्थिति को सामान्य बताते हुए उसे अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया। सोनू ने बताया कि उसने कई बार डॉक्टर से अपनी पत्नी की तबीयत के बारे में चिंता जाहिर की, लेकिन डॉक्टर ने उसे ठीक बताया और घर भेज दिया। हालांकि, घर पहुंचते ही पत्नी की तबीयत फिर से बिगड़ गई। सोनू ने उसे तुरंत नजदीकी दूसरे अस्पताल में ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने अल्ट्रासाउंड किया। जांच में पता चला कि जुड़वा बच्चों की गर्भ में ही मौत हो चुकी थी। इसके बाद ऑपरेशन के जरिए बच्चों को बाहर निकाला गया, जिससे पत्नी की हालत भी गंभीर हो गई। पुलिस व स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने मामले को संज्ञान में लेते हुए कहा कि पूरे मामले की जांच की जाएगी, इस मामले में जो भी आरोपी होगा उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

- **अस्पताल प्रशासन पर कठोर कार्रवाई करने की परिजनों ने की मांग**

बिल्डर ने ग्रीन बेल्ट किया तहस नहस, प्राधिकरण बना मूक दर्शक

ग्रेटर नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। ग्रेनो वेस्ट के सेक्टर-2 स्थित इरोस सम्पूर्णम सोसाइटी में फेज-3 का निर्माण कार्य प्रगति पर है। मार्केटिंग ऑफिस और निर्माण कार्य के लिए वाहनों के आवाजाही के लिए बिल्डर ने प्राधिकरण द्वारा विकसित ग्रीन बेल्ट में कई जगह से अनाधिकृत रास्ते खोल लिए हैं। बिल्डर द्वारा रास्ता खोले जाने से ग्रीन बेल्ट बर्बाद हो रहा। साथ ही भारी भरकम वाहनों के आवाजाही से सर्विस रोड भी बर्बाद हो रहा है। बिल्डर द्वारा ग्रीन बेल्ट में अवैध रास्ता खोले जाने की शिकायत सेक्टर-2 आरडब्लूए ने प्राधिकरण से किया है, लेकिन अभी तक कोई जमीनी कार्रवाई नहीं हुई है। सेक्टर-2 आरडब्लूए अध्यक्ष गजराज सिंह ने बताया कि सोसाइटी के बॉउंड्री के साथ ही सेक्टर-2 के सी-ब्लॉक का गेट है जिससे सोसाइटी निवासियों का आना जाना होता है। उन्होंने बताया कि काफी प्रयासों के बाद ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने ग्रीन बेल्ट का विकास कार्य कराया था, परन्तु बिल्डर ने एक झटके में ग्रीन बेल्ट को बर्बाद कर दिया। बिल्डर ने ग्रीन बेल्ट में तीन-चार अनाधिकृत गेट खोल दिए हैं जिससे लगातार भारी भरकम वाहनों की आवाजाही लगी रहती है। वाहनों से आवाजाही से हमेशा धूल मिट्टी उड़ती रहती है। गजराज सिंह ने बताया कि बिल्डर के अनैतिक कार्य की शिकायत प्राधिकरण से की गई है, परन्तु अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। सम्बंधित अधिकारियों का कहना है कि बिल्डर को नोटिस प्रेषित किया गया है लेकिन अधिकारी नोटिस की कॉपी दिखाने और देने से इंकार कर रहे, जिससे यह भी स्पष्ट नहीं है कि अधिकारियों ने वाकई में कोई नोटिस दिया है या महज लीपापोती कर रहे। सेक्टर-2 आरडब्लूए अध्यक्ष गजराज सिंह ने चेतावनी दी है कि यदि जल्दी ही ग्रीन बेल्ट में खोले गए अवैध गेट बंद नहीं हुआ और ग्रीन बेल्ट का पूर्व की भांति विकास नहीं हुआ तो सेक्टरवासियों के पास प्राधिकरण कार्यालय पर धरना देने के अलावा कोई उपाय नहीं बचेगा।

प्राथमिक शिक्षक संघ की त्रिवार्षिक अधिवेशन में शिक्षा की गुणवत्ता पर होगी चर्चा

ग्रेटर नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। उत्तर प्रदेश प्राथमिक शिक्षक संघ गौतम बुद्ध नगर जिला कार्यकारिणी की मासिक बैठक में एजेन्ड के तहत जिले की समस्त इकाइयों में 30 अगस्त से शैक्षिक गोष्ठी एवं त्रिवार्षिक अधिवेशन होना है। जिलाध्यक्ष प्रवीण शर्मा ने बताया कि अधिवेशन में आयोजित शैक्षिक गोष्ठी में शिक्षा की गुणवत्ता सहित शिक्षा से सम्बंधित विषयों पर विस्तार पूर्वक चर्चा की जाएगी।

इस्कॉन ने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का किया शुभारम्भ

- **सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ भगवत संकीर्तन में झूमे भक्त**

ग्रेटर नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। इस्कॉन ग्रेटर नोएडा की तरफ से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का आयोजन अल्फा-दो के लेबर चौक के पास के मैदान पर किया गया है। गुरुवार की शाम उत्सव की शुरुआत हुई, जिसमें भजन, कीर्तन पूजा, आरती, कथा के साथ बच्चों ने मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। यह कार्यक्रम 27 अगस्त तक चलेगा। मंदिर के अध्यक्ष अतुल कृष्ण प्रभु ने कार्यक्रम का विवरण देते हुए बताया कि इस बार दर्शनार्थियों की सुविधा के लिए पूरा पंडाल वाटर प्रूफ बनाया गया है, जिसमें अलग-अलग स्टाल लगाए गए हैं, जिसमें किड्स फन जोन, गोविंदा रेस्ट्रंट, मैचलेस गिफ्ट इत्यादि प्रमुख है। एक विशेष नाट्यलीला- कृष्ण रुक्मणि हरण, जोकि 26 सितम्बर को मंचित होगा। पंडाल में श्री राधा कृष्ण का भव्य मंदिर भी बनाया गया है, जहां भक्त भगवान का दर्शन प्राप्त कर रहे हैं, 26 अगस्त जन्माष्टमी के दिन भगवान को 1008 भोग अर्पित होगें।

उत्सव में वरिष्ठ भक्त और सन्यासियों का संग प्राप्त होगा। शनिवार को मोहन रूपा प्रभु के द्वारा कृष्ण कथा कही गई, यह कथा श्रीकृष्ण के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करने वाली थी, भक्तों ने कथा का रसास्वादन किया। रविवार को युवाओं के प्रेरणास्त्रोत, अमोघ लीला प्रभु कृष्ण कथा किया। उनके प्रेरणादायक प्रवचन युवाओं को भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति की ओर आकर्षित करते हुए भगवत संकीर्तन किया। 26 अगस्त लोकनाथ महाराज की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन होगा। उनकी उपस्थिति और प्रवचन भक्तों के लिए एक अद्वितीय अनुभव होगा। 27 अगस्त को महोत्सव का समापन नंदोत्सव के साथ होगा, जो इस्कॉन केंद्र, ए-49, जीटा-1, ग्रेटर नोएडा में मनाया जाएगा।

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
पश्चिमी उत्तर प्रदेश ब्यूरो कार्यालय
209 कृष्णा अपरा प्लाजा अल्फा कॉमर्शियल बेल्ट, ग्रेटर नोएडा
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के लिए संम्पर्क करें
खोया-पाया/ सूचना/ नाम परिवर्तन/ आवश्यकता
फोनः- 0120-4270009

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के संपर्क करें
क्षेत्रिय कार्यालय रबुपुरा
Mob: 9411492655

Shiv Mahima Enterprises
सभी प्रकार के विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
नाम परिवर्तन, खोया पाया, सूचना, अवश्यकता
Mob.: 9910280173
Off.-221, 2nd Floor, Meridian View Plaza, Alpha Comm. Belt, Gr. Noida

जीबीयू ने दाखिलों के लिए अंतिम अवसर, काउंसलिंग सत्र की घोषणा

ग्रेटर नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय (जीबीयू) 2024-25 शैक्षणिक सत्र के लिए अपनी दाखिला प्रक्रिया के अंतिम चरण में पहुंच गया है। प्रोफेसर आर.के. सिन्हा, कुलपति ने बताया कि अधिकांश सीटें भर चुकी हैं, यह संभावित छात्रों के लिए शेष रिक्त सीटों पर दाखिला पाने का अंतिम अवसर है। विश्वविद्यालय 3 सितम्बर 2024 को इस प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए अंतिम काउंसलिंग सत्र आयोजित करेगा। सीटों की सीमित उपलब्धता वाले कार्यक्रमों में गणित और कंप्यूटिंग, सिविल इंजीनियरिंग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, रोबोटिक्स और एआई, इलेक्ट्रॉनिक्स और कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग, तथा बी.आर्क. शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, विज्ञान, मानविकी और समाजशास्त्र संकायों में विभिन्न अंडरग्रेजुएट (यूजी) और पोस्टग्रेजुएट (पीजी) कार्यक्रमों में कुछ सीटें अभी भी खुली हैं।

- **विश्वविद्यालय 3 सितम्बर को प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए अंतिम काउंसलिंग सत्र आयोजित करेगा**

प्रोफेसर सिन्हा ने आगे कहा कि इस शैक्षणिक वर्ष के दौरान, जीबीयू ने अपनी दाखिला प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल किया है और मुख्यधारा के कार्यक्रमों में अधिकांश सीटें लगभग भर चुकी हैं। कंप्यूटर साइंस में बी.टेक (डेटा साइंस, एआई और साइबर सुरक्षा के साथ) पहले दौर की काउंसलिंग में भर चुकी हैं। संभावित छात्रों को अंतिम काउंसलिंग सत्र का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि वे अपना दाखिला सुनिश्चित कर सकें। विश्वविद्यालय जेईई (मेन) अंकों और एनटीए द्वारा आयोजित यूजी और पीजी परीक्षणों के आधार पर दाखिले प्रदान कर रहा है, जिससे इच्छुक उम्मीदवारों के लिए अतिरिक्त अवसर प्रदान किए जा रहे हैं।

विवाहिता की गोली मारकर हत्या करने के मामले में सास-ससुर समेत तीन गिरफ्तार

दनकौर, 25 अगस्त (देशबन्धु)। दनकौर कोतवाली क्षेत्र के जगनपुर गांव में एक महिला की गोली मारकर हत्या के मामले में पुलिस ने आरोपी सास-ससुर समेत 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। मायके वालों का आरोप है कि दहेज में 1 करोड़ रुपए नहीं देने पर उनकी बेटी हत्या की गई थी। आरोपियों ने पूछताछ के दौरान भी पुलिस के सामने यह बात स्वीकार की है। पुलिस ने आरोपियों के पास से घटना में प्रयुक्त अवैध पिस्टल को भी बरामद कर लिया है। पुलिस ने रविवार को गिरफ्तार आरोपियों को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया है। साथ ही अन्य फरार आरोपियों को पुलिस जल्द ही गिरफ्तार करने का दावा कर रही है। दिल्ली के सराय काले खां निवासी हरवीर सिंह ने पुलिस को दी शिकायत में कहा है कि उन्होंने 2020 में अपनी बेटी निधि की शादी जगनपुर गांव के रहने वाले दीपक भड़ाना के साथ की थी। आरोप है कि दहेज में एक करोड़ रुपए की मांग को लेकर उनकी बेटी को परेशान किया जा रहा। शनिवार की सुबह दहेज की खातिर उनकी बेटी की पति समेत ससुराल के 6 लोगों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। पूछताछ के दौरान पुलिस को आरोपी देवर तरुण ने बताया कि ग्रेटर नोएडा में उनको एक करोड़ रुपए का फ्लैट लेना था। जिसके लिए उसके भाई और परिवार के अन्य लोगों ने मृतक निधि के पिता से उनकी बेटी को तलाक देने की धमकी देते हुए 1 करोड़ रुपए दहेज में देने को कहा था। निधि के पिता ने रुपए देने के लिए हामी भी भर ली थी। लेकिन किसी तरह उन पर रुपए देने का इंतजाम नहीं हो सका। जिससे गुस्से में आकर ही आरोपियों ने योजना के तहत शनिवार को निधि की गर्दन में गोली मारकर हत्या कर दी थी। साथ ही आरोपियों ने दहेज में दी फॉर्च्यूनर गाड़ी को भी बेच दिया था। जिसका भी मृतक ने विरोध किया था। इस मामले में अभी आरोपी पति समेत तीन नामजद आरोपी फरार चल रहे हैं। जिनको पुलिस जल्द ही गिरफ्तार करने की बात कह रही है।

> महिला की हत्या के मामले में 3 आरोपी गिरफ्तार हो चुके हैं। जबकि तीन अन्य अभी फरार है। जिनको गिरफ्तार करने के लिए टीम जुटी हुई है। जल्द ही उनको भी गिरफ्तार कर जेल भेजा जाएगा : मुनेंद्र सिंह, एसएचओ दनकौर

सामाजिक प्रबंधन वाणिज्यिक प्रबंधन की नींव है : डॉ. हीरालाल पटेल

ग्रेटर नोएडा, 25 अगस्त (देशबन्धु)। नॉलेज पार्क स्थित जीएनआईओटी इंस्टीट्यूट ऑफमैनेजमेंट स्टडीज में प्रथम वर्ष के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए प्रथम सामरिक टॉक सीरीज का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार के सिंचाई विभाग के विशेष सचिव, वक्ता, डायनेमिक डीएम नामक पुस्तक के लेखक आईएएस डॉ. हीरालाल पटेल शामिल हुए। डॉ. हीरालाल पटेल ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए अपने संबोधन में जल संरक्षण, प्लॉस्टिक मुक्त धरती, स्मार्ट गांव आदि जैसे कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। उन्होंने विद्यार्थियों से मुख्य रूप से इन पांच बातों पर जैसे आप जहां भी किसी कार्यक्रम में शामिल होने जाएं तो तैयार रहें, अपने जुनून को पेशे में बदलें, एक ही काम को अलग ढंग से करें, हमारी दो माताएं हैं, एक जैविक और दूसरी धरती माता तथा हम धरती माता से जो उपभोग करते हैं उसे वापस लौटा दें एवं सामाजिक प्रबंधन वाणिज्यिक प्रबंधन की नींव है पर अमल विचार करने एवं अपने दैनिक जीवन में लागू करने की सलाह दी। उन्होंने हर विद्यार्थी से अपनी जन्म देने वाली माता की तरह धरती माता की भी ख्याल रखने का अनुरोध किया जिसके लिए प्लॉस्टिक मुक्त, जल संरक्षण आदि पर जोर दिया। संस्था द्वारा आयोजित सामरिक टॉक सीरीज के दूसरे सत्र में सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबंधन में मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी अनुराग चंद्रा सर का मार्गदर्शन विद्यार्थियों को प्राप्त हुआ। संस्था के सीईओ स्वदेश कुमार सिंह ने कार्यक्रम के दोनों वक्ताओं का संस्थान परिसर में आने के किए धन्यवाद प्रेषित करते हुए भविष्य में भी विद्यार्थियों को प्रेरित करते रहने के लिए संस्थान परिसर में निरंतर आने का अनुरोध किया।

- **जीएनआईओटी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज में सामरिक टॉक सीरीज का आयोजन**

{ संपादकीय }

नई दिल्ली, सोमवार 26 अगस्त 2024

संस्थापक-सम्पादक : स्व. मायाराम सुरजन

चुनावी लाभ के लिए पेंशन योजना

देश में सरकारी कर्मचारी लंबे समय से पुरानी पेंशन योजना यानी ओपीएस को लागू करने की मांग करते आ रहे हैं। पिछले 10 सालों से केंद्र की सत्ता पर काबिज नरेन्द्र मोदी ने इस मांग पर बातें तो खूब की, लेकिन ओपीएस लागू नहीं किया। लेकिन सत्ता के 11वें बरस में यानी तीसरी बार प्रधानमंत्री पद संभालने के बाद अब केंद्र सरकार ने यूपीएस यानी एकीकृत पेंशन योजना को हरी झंडी दे दी है। शनिवार को लिए इस फैसले के बारे में केन्द्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने जानकारी दी। इस योजना के पांच प्रमुख बिंदु है, जिसमें पहला है 50 प्रतिशत निश्चित पेंशन, ये रकम सेवानिवृत्ति के ठीक पहले के 12 महीनों के औसत मूल वेतन का 50 प्रतिशत होगी। शर्त ये है कि कर्मचारी ने 25 साल की सेवा पूरी की हो। दूसरा बिंदु है किसी कर्मचारी की सेवा में रहते हुए मृत्यु होने की स्थिति में परिवार (पत्नी) को 60 प्रतिशत पेंशन के रूप में मिलेगा। तीसरा बिंदु है, 10 साल तक की न्यूनतम सेवा की स्थिति में कर्मचारी को कम से कम 10 हज़ार रुपये प्रति माह पेंशन के रूप में दिए जाएंगे। चौथा बिंदु कर्मचारी और फैमिली पेंशन को महंगाई के साथ जोड़ा जाएगा। इसका लाभ सभी तरह की पेंशन में मिलेगा, पांचवां और अंतिम बिंदु है, ग्रैच्युटी के अलावा नौकरी छोड़ने पर एकमुश्त रक़म दी जाएगी। इसकी गणना कर्मचारियों के हर छह महीने की सेवा पर मूल वेतन और महंगाई भत्ते का दसवां हिस्से के रूप में होगी।

सरकार का दावा है कि इससे 23 लाख केंद्रीय कर्मचारियों को फायदा होगा। पहले कर्मचारी पेंशन के लिए 10 प्रतिशत का अंशदान करते थे और केंद्र सरकार इतना ही अंशदान करती थी, लेकिन 2019 में सरकार ने सरकारी योगदान को 14 प्रतिशत कर दिया था, जिसे बढ़ाकर अब 18.5 प्रतिशत कर दिया जाएगा। नयी एकीकृत पेंशन योजना 1 अप्रैल 2025 से लागू होगी, तब तक इसके लिए संबंधित नियमों को बनाने के काम किया जाएगा और कर्मचारियों के पास एनपीएस यानी नेशनल पेंशन स्कीम या यूपीएस में रहने का विकल्प होगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने खुद ही अपने इस फैसले की तारीफ की और सरकारी कर्मचारियों द्वारा देश के लिए दिए जा रहे योगदान को रेखांकित किया है। वहीं अश्विनी वैष्णव ने इस मौके पर प्रधानमंत्री के लिए कसीदे पढ़ते हुए कहा कि पीएम मोदी कैसे काम करते हैं और विपक्ष कैसे काम करता है, इसमें अंतर है। विपक्ष के विपरीत, पीएम मोदी व्यापक विचार-विमर्श करने में विश्वास करते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक और विश्व बैंक सहित सभी के साथ विस्तार परामर्श के बाद, समिति ने एक एकीकृत पेंशन योजना की सिफारिश की है।

यह समझना कठिन है कि अश्विनी वैष्णव या केंद्र सरकार के लिए ज्यादा जरूरी बात क्या है, सरकारी कर्मचारियों के हितों का ख्याल या प्रधानमंत्री मोदी की छवि को सुधारना। क्योंकि मोदी सरकार में यह अलग ही परिपाटी चल निकली है कि किसी भी फैसले के लिए नरेन्द्र मोदी की वाहवाही की जाए, मानो देश के लिए फैसले लेना उनकी जिम्मेदारी नहीं है और जब वो फैसले लेते हैं तो एहसान करते हैं। वहीं जब श्री मोदी अपने फैसलों से पलटते हैं तब उनका कोई मंत्री आकर यह कभी नहीं कहता कि खराब फैसले के लिए श्री मोदी जिम्मेदार हैं। तब ठीकरा फोड़ने के लिए नए सिर तलाशे जाते हैं।

बहरहाल, ओपीएस की जगह यूपीएस लाकर मोदी सरकार ने यह साबित कर दिया है कि वह इस समय दबाव में ही चल रही है। कांग्रेस ने इसमें यू को यू टर्न से ही जोड़ा है। क्योंकि पेंशन के सवाल पर भाजपा पहले काफी घिर चुकी है। कई विधानसभा चुनावों में ओपीएस की मांग भाजपा पर भारी पड़ी और वहां कांग्रेस को फायदा हुआ। अब फिर से विधानसभा चुनावों का सिलसिला शुरु हो गया है, ऐसे में भाजपा अनुच्छेद 370 जैसे कार्ड के अलावा सरकारी कर्मचारियों को लुभाने वाले दांव चल रही है। 23 लाख सरकारी कर्मचारियों को फायदे की बात सरकार ने कही है, लेकिन इन्हीं कर्मचारियों में से अधिकतर ओपीएस की मांग भी कर रहे थे। दरअसल ओपीएस एक परिभाषित लाभ योजना है जो वेतन आयोग की सिफारिशों के आधार पर समायोजन के साथ जीवन भर पेंशन के रूप में प्राप्त अंतिम वेतन के आधे हिस्से की गारंटी देती है। वहीं, एनपीएस एक परिभाषित योगदान योजना है जहां सरकारी कर्मचारी अपने मूल वेतन का 10 प्रतिशत योगदान करते हैं। सरकार ने अभी एनपीएस और यूपीएस में किसी एक को चुनने का विकल्प दिया है। इसलिए सवाल उठ रहे हैं कि यदि एनपीएस और यूपीएस का विकल्प सरकार दे सकती है, तो इसमें ओपीएस को भी शामिल क्यों नहीं किया गया है। यदि यूपीएस में मूल वेतन का 50 प्रतिशत सरकार दे सकती है तो ओपीएस में भी तो 50 प्रतिशत ही देने की बात है, फिर सरकार क्यों नहीं पुरानी पेंशन योजना को लागू करती है।

मोदी सरकार की तरफ से ऐसे सवालों का क्या तार्किक जवाब आता है, ये देखना होगा। फिलहाल सवाल यह भी उठाए जा रहे हैं कि सरकारी कर्मचारियों की पेंशन के बारे में ही फैसला लेने वाली सरकार क्या निजी क्षेत्र के कर्मचारियों के बारे में भी सोचेगी, क्योंकि देश की प्रगति में योगदान तो निजी क्षेत्र भी दे रहा है और यहां के कर्मचारी भी अच्छा-खासा टैक्स देते हैं। सवाल यह भी है कि यूपीएस के लाभार्थी आने वाले बरसों में कितने रह जाएंगे, क्योंकि अब तो सरकारी नौकरियां ही नहीं मिल रही हैं।

कुल मिलाकर यह नजर आ रहा है कि जिस तरह सरकार ने वक्फ बोर्ड संशोधन अधिनियम, ब्रॉडकास्ट बिल जैसे फैसलों में यू टर्न लिया है, अब पेंशन योजना में भी सरकार विपक्ष के दबाव में आ चुकी है। यह देखना दिलचस्प होगा कि भाजपा इसका चुनावी लाभ ले पाती है या नहीं।

भाजपा समझे कश्मीर दलगत राजनीति का अड्डा नहीं है

बीजेपी जनता को क्या समझती है? भुलक्कड़! बेवकूफ! उसे कुछ भी याद नहीं है! जम्मू-कश्मीर में चुनाव की घोषणा होते ही कांग्रेस पर सवाल उठाने लगी।

गृहमंत्री अमित शाह कह रहे हैं कि नेशनल कान्फ्रेंस (एनसी) के साथ समझौता करके कांग्रेस देश की एकता और सुरक्षा को खतरे में डाल रही है। वाह! एनसी के साथ समझौते से देश की एकता और सुरक्षा को खतरा। अगर ऐसा है तो आप की सरकार है। एनसी को बैन कर दीजिए। मगर आप वह नहीं करेंगे। और चुनाव के बाद अगर आपकी सरकार बनने की जरा भी संभावना नजर आएगी तो आप एनसी छोड़िए उसके साथ तो पहले भी केन्द्र में सरकार बना चुके हैं। कश्मीर के किसी भी पार्टी, ग्रुप, इन्डिव्जूल से समझौता कर लेंगे।

कहां से बताना शुरू करें! पहले वह बात जो कम लोगों को याद होगी। आज के भाजपा के गृहमंत्री अमित शाह एनसी को संदेह के दायरे में खड़ा करने की कोशिश कर रहे हैं। मगर इनसे पहले के भाजपा के गृहमंत्री और देश में बनने वाले भाजपा के पहले गृहमंत्री लालकृष्ण आडवानी ने तो हुर्रियत कान्फ्रेंस के नेताओं को बुलाकर अपने आफिस नार्थ ब्लाक में आफिशियल मीटिंग की थी।

कभी भी किसी को कुछ कह देना बीजेपी के लिए तब चल सकता था जब वह विपक्ष में थी। मगर सत्ता में आने के बाद और तीसरी बार सरकार बनाने के बाद देश की एकता और अखंडता के लिए यह बहुत जरूरी है कि अब बीजेपी के नेता खासतौर से नंबर एक और नंबर दो के नेता जिम्मेदारी से अपनी बात कहें। जो हुर्रियत खुलेआम पाकिस्तान का समर्थन करती थी उससे उसके पहले गृहमंत्री आडवानी बात करते हैं और जो नेशनल कान्फ्रेंस 1947 और उससे पहले से हर मौके पर भारत के साथ खड़ी होती रही उस पर शक कर रहे हैं!

सबको मालूम है कि हम कभी एनसी के समर्थक नहीं रहे। उसकी कड़ी से कड़ी आलोचना की। लेकिन देशभकित के सवाल पर नहीं। इसकी अभिव्यक्ति में तो फारूक अब्दुल्ला का मुकाबला तमाम लोग नहीं कर पाएंगे। आलोचना उनके शासन करने के केजुअल तरीके की की। गंभीरता के अभाव की की। सरकारी अफसरों पर सब कुछ छोड़ देने की की।

बता दें कि इस हद तक लापरवाह थे कि 1984 में जब उनके बहनोई गुलशाह उनका तख्ता पलट कर रहे थे तो वे फिल्म अभिनेत्री शबाना आजमी को मोटर साइकल पर बिठाकर घुमा रहे थे। उन्हें अपने खिलाफ षड्यंत्र का पता ही नहीं था।

लेकिन देशभक्ति पाकिस्तान के खिलाफ हमेशा तैयार रहना इसमें फारूख का कोई मुकाबला नहीं है। एक और घटना बताते हैं जो सेना और सिविल सर्विसेज के कुछ वरिष्ठ अफसरों को छोड़कर किसी को नहीं मालूम। अब मोदी जी सरकार में हैं अमित शाह भी तो वे उस समय के रहे अफसरों से मालूम कर सकते हैं।

यह है 1999 की बात। पाकिस्तान ने करगिल में घुसपैठ कर दी थी। वह ऊंचे इलाके पर थे। हमारी सेना के लिए नीचे से उन्हें भगाना मुश्किल हो रहा था। सेना एयर स्ट्राइक चाहती थी। मगर पूर्ण युद्ध शुरू न हो जाए इस कारण प्रधानमंत्री वाजपेयी हिचक रहे थे। उस समय मुख्यमंत्री फारुख रक्षा मंत्री और अपने दोस्त जार्ज फर्नांडिस के साथ वाजपेयी से मिले और बहुत सख्त लहजे में कहा कि अगर एयर स्ट्राइक नहीं की तो मैं इस्तीफा दे दूंगा। फौरन एयर स्ट्राइक के आर्डर हुए। और फिर सबको मालूम है कि किस तरह पाकिस्तानी फौज को भारी नुकसान उठाना पड़ा।

शकील अख्तर

> एनसी और कांग्रेस के समझौते पर सवाल उठाकर भाजपा ने खुद अपने ऊपर ही सवाल उठवा लिए हैं। नहीं तो वैसे जम्मू-कश्मीर के चुनाव में छोटी राजनीति की बात नहीं होती। पाकिस्तान को आईना दिखाने के लिए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हम हमेशा कश्मीर को एक मॉडल के तौर पर पेश करते हैं कि किस तरह हमने यहां लोकतंत्र बना कर रखा है। चुनी हुई सरकार होती है।

यहां एक बात और समझ लीजिए कि जिस तरह भाजपा देशभक्ति किसी में कम किसी में ज्यादा का प्रचार करती है। हम नहीं करते। हर देशवासी में समान रूप से होती है। मगर यह परिवार खुद पाकिस्तान से लड़ने को खड़ा हो जाता है इसलिए इसकी देशभक्ति हमेशा बहुत मुखर होकर सामने आती है। 1947 सबको मालूम है कि पाकिस्तान द्वारा कबाइलियों के भेस में अपनी सेना कश्मीर में घुसा दिए जाने के बाद शेख अब्दुल्ला खुद अपने नेशनल कान्फ्रेंस के साथियों के साथ लाठी लेकर लड़ने पहुंच गए थे।

और क्या बताएं? कांग्रेस की देशभक्ति पर! एनसी से समझौता करने पर सवाल तो उस पर उठाए हैं। मगर यह बताना देश के महान स्वतंत्रता संग्राम का अपमान हो जाएगा जो कांग्रेस के नेतृत्व में लड़ा गया। सवाल तो उठाते हैं वह कांग्रेस पर। मगर यह वैसा ही है जैसे भरत से सुत पर भी संदेह!

तो एनसी और कांग्रेस के समझौते पर सवाल उठाकर भाजपा ने खुद अपने ऊपर ही सवाल उठवा लिए हैं। नहीं तो वैसे जम्मू-कश्मीर के चुनाव में छोटी राजनीति की बात नहीं होती। पाकिस्तान को आईना दिखाने के लिए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हम हमेशा कश्मीर को एक मॉडल के तौर पर पेश करते हैं कि किस तरह हमने यहां लोकतंत्र बना कर रखा है। चुनी हुई सरकार होती है। हालांकि पहली बार यहां चुनावों में दस साल का गेप हो गया है। पिछला विधानसभा चुनाव 2014 में हुआ था।

अब भाजपा की इन्हीं छोटी-छोटी राजनीति की वजह से वह सब याद आ जाता है जो ऐसे मौके पर कहना नहीं चाहते थे। मगर यह खुद चीजों को वहीं ले आ रहे हैं जैसे दूसरे राज्यों के चुनावों में करते हैं। हां तो पहले वह बता दें जो 2014 विधानसभा की बात लिखते हुए याद आ गया। इस चुनाव में मुफ्ती मोहम्मद सईद की पार्टी पीडीपी 28 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभर कर सामने आई। 25 सीटों के साथ बीजेपी नं. दो पर। और मोदी जी ने खुद पीडीपी से मिलकर सरकार बनाई। मुफ्ती के शपथ ग्रहण में जम्मू पहुंचे। और जो खास बात बता रहे हैं वह यह कि मोदी जी के सामने मुफ्ती ने कश्मीर में चुनाव करवाने का श्रेय पाकिस्तान और अलगाववादियों को दिया। मोदी जी चुप। लेकिन इसी एनसी ने इस पर कड़ी आपत्ति व्यक्त की। एनसी के उमर अब्दुल्ला ने कहा कि इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता।

भाजपा की देशभक्ति की परिभाषाएं उसके राजनीतिक लाभ के मुताबिक हमेशा बदलती रहती हैं। मोदी जी क्या कहते? उससे पहले वे पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को अपने खुद के शपथ ग्रहण में बुला चुके थे। उसके बाद पठानकोट के एयरफोर्स स्टेशन पर आतंकवादी हमले जिसमें हमारे सात जवान शहीद हो गए थे उसकी जांच के लिए पाकिस्तान की जेआईटी (उनकी गुप्तचर एजेन्सियों के बड़े अधिकारियों की टीम) पठानकोट आ गई। उसने यहां हमारे लोगों से पूछताछ की। आज तक ऐसा नहीं हुआ था। वही हमला करवाए और वही जांच करे?

लेकिन लोग बेवकूफ बन रहे हैं तो उन्हें बनाया जा रहा है। खुद मोदी अचानक पाकिस्तान गए थे। मगर सवाल कांग्रेस और एनसी से पूछे जाते हैं। कांग्रेस के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह तो दस साल में एक बार भी पाकिस्तान नहीं गए।

और मोदी जी बनने के एक साल के अंदर चले गए थे। वाजपेयी भी गए थे। पूरी बस लेकर। और मुशर्रफ को आगरा भी बुलाया था। हमने कहा ना कश्मीर के चुनाव इसलिए नहीं हैं कि यह सारी बाते हों। मगर कांग्रेस के खिलाफ शेष देश में माहौल बनाने के लिए भाजपा इस तरह की बातें कर रही है।

जैसे बंगाल विधानसभा चुनाव में उसने राजनैतिक नैतिकता की सारी सीमाएं लांघ दी थीं, इस लोकसभा चुनाव में भी। लगता है वैसा ही वह इस बार जम्मू-कश्मीर चुनाव में करना चाहती है। लेकिन उसे याद रखना चाहिए कि उसके पहले प्रधानमंत्री वाजपेयी ने जब 2002 के विधानसभा चुनाव करवाए थे तो कहा था कि यह किसी पार्टी के जीत हार का चुनाव नहीं हैं देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के चुनाव हैं।

यही बात इससे पहले 1996 में चुनाव करवाने वाले प्रधानमंत्री नरसिंहा राव ने कही थी। और यही 2008 में चुनाव करवाने वाले मनमहोन सिंह ने। कश्मीर दलगत राजनीति से बड़ा है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार है)

भारत में बढ़ता इस्लामोफोबिया

जनता के आक्रोश के ज्वार ने बांग्लादेश को हिला दिया है। वहां जो हो रहा है उसके बारे में कई झूठी खबरें फैलाई जा रही हैं, जिनके नतीजे में भारत में इस्लामोफोबिया ने जोर पकड़ लिया है। शेख हसीना ने बांग्लादेश पर पिछले 15 वर्षों से बहुत सख्ती से शासन किया। उन्होंने विपक्ष का जबरदस्त दमन किया और यहां तक कि सभी प्रमुख विपक्षी नेताओं को या तो जेलों में ठूंस दिया या उनके घरों में नजरबंद कर दिया।

बांग्लादेश में स्वतंत्रता सेनानियों की संतानों को आरक्षण के मुद्दे को लेकर छात्रों का आंदोलन भड़का। यह आरक्षण 50 साल से भी अधिक समय पहले पाकिस्तान के चंगुल से आजाद होने के सफल संघर्ष के बाद से ही निरंतर जारी था। इस मुद्दे पर बांग्लादेश का युवा वर्ग आक्रोशित था और उनके आक्रोश को हसीना सरकार ने सख्ती से दबाया। इससे आंदोलन ने बहुत बड़ा और गंभीर स्वरूप अख्तियार कर लिया।

हसीना के देश छोड़ने के बाद वहां अराजकता फैल गई। आवामी लीग (हसीना की पार्टी) के समर्थकों पर हमले हुए और उसके कार्यालयों को आग के हवाले कर दिया गया। 'हिंदू बुद्धिस्ट क्रिस्चियन यूनिटी काउंसिल' एवं 'बांग्लादेश पूजा उद्यापन परिषद' के अनुसार 5 अगस्त को हसीना सरकार के पतन के बाद से बांग्लादेश के 52 जिलों में अल्पसंख्यक समुदाय पर हमले की 205 घटनाएं हुईं। अंतरिम सरकार का नेतृत्व करने के लिए छात्रों ने प्रोफेसर युनुस को चुना। अल्पसंख्यकों ने सुरक्षा की मांग करते हुए एक विशाल रैली आयोजित की। प्रोफेसर युनुस ने तुरंत एक अपील जारी करते हुए आंदोलनरत छात्रों से हिंदुओं, ईसाईयों और बौद्धों सहित सभी अल्पसंख्यक समुदायों को हमलों से सुरक्षा प्रदान करने की अपील की। 'क्या यह उनका देश नहीं है? आपने देश की रक्षा की है, क्या आप कुछ परिवारों की रक्षा नहीं कर सकते?' उन्होंने आंदोलनरत छात्रों से सवाल किया।

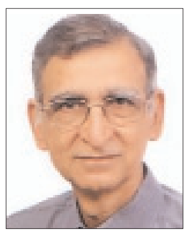

राम पुनियानी

> पूरा दक्षिण एशिया साम्प्रदायिक राष्ट्रवाद के दौर से गुजर रहा है। श्रीलंका एक साल पहले तक साम्प्रदायिकता की गिरफ्त में था। पाकिस्तान अल्पसंख्यकों के अधिकारों का हनन करने के लिए कुख्यात है और म्यांमार भी इसी रास्ते पर चल रहा है। जो लोग तलवार निकालने की बात करते हैं और अन्य घृणा उत्पन्न करने वाले संदेशों का आदान-प्रदान करते हैं, उनका कुछ भी नहीं बिगड़ता, उन पर घृणा फैलाने और विभाजनकारी प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के आरोपों में कोई कानूनी कार्रवाई नहीं होती।

यह अपील बहुत प्रभावी साबित हुई. बांग्लादेश के 'द डेली स्टार' समाचारपत्र के संपादक महफूज अनाम के अनुसार, इसके बाद हिंदुओं के खिलाफ हो रही हिंसा थम गई। यहां तक कि दक्षिणपंथी जमात-ए-इस्लामी ने तक मंदिरों की रक्षा के लिए दस्तों का गठन किया. द वायर के करण थापर को दिए गए एक साक्षात्कार में संपादक ने इस ओर ध्यान दिलाया कि भारत और बांग्लादेश के दक्षिणपंथियों को एक दूसरे से ताकत हासिल होती है। उनके अनुसार पांच दिन बाद अल्पसंख्यकों के विरूद्ध हो रही हिंसा पूरी तरह थम गई। उनके और कई अन्य यूट्यूबर्स के अनुसार भारत में तथ्यों की पुष्टि किए बिना बहुत सारी अफवाहें और फेक न्यूज फैलाई गई।

इसका एक बड़ा उदाहरण है क्रिकेट खिलाड़ी लीपन दास के घर को आग लगाए जाने की खबर और वीडियो। बीबीसी फेक्ट चैक से यह पता लगा कि यह घर किसी और क्रिकेट खिलाड़ी का था जो आवामी लीग का नजदीकी है और दो कार्यकालों के लिए सांसद रह चुका है। इसी तरह एक अन्य वीडियो में दावा किया गया कि वह चिटगांव में एक मंदिर को जलाए जाने का वीडियो है। फैक्ट चैक से पता लगा कि इस वीडियो में जिस भवन को जलता दिखाया गया है वह आवामी लीग का कार्यालय है, जो मंदिर के नजदीक है। ऐसे बहुत से वीडियो हैं जिनमें हिंदू मंदिरों को जलते और हिंदुओं की हत्या होते दिखाया गया है। लेकिन कुछ ऐसे वीडियो भी हैं जिन्हें दबा दिया गया- वे वीडियो जिनमें छात्रों द्वारा मंदिरों की रक्षा के लिए बनाए गए दस्तों को दिखाया गया है। 'हिंदू एवं मुस्लिम दोनों पीड़ित हैं। लेकिन वे लोग राजनीति से प्रेरित हिंसा की चुनिंदा घटनाओं को साम्प्रदायिक हिंसा बताते हैं. जब हिंसा का शिकार होने वाला हिंदू होता है तो इसे धर्म आधारित प्रताड़ना बताकर जोर-शोर से प्रचारित किया जाता है, जिससे भारत में मुसलमानों के प्रति घृणा बढ़ती है' (एक फैक्ट चैकर शोहानूर रहमान ने द क्विंट को बताया)।

इस समय बांग्लादेश में सत्ता के दो केन्द्र हैं – प्रोफेसर युनुस और आंदोलन का नेतृत्व करने वाले छात्र। दोनों ही बांग्लादेश के समावेशी चरित्र का समर्थन कर रहे हैं और हिंदुओं सहित सभी अल्पसंख्यकों की रक्षा के प्रति दृढ़ संकल्पित हैं। नि:संदेह जमात-ए-इस्लामी एक इस्लामिक राष्ट्र का स्वप्न देखता है, बीएनपी की नेता खालिदा जिया भी दक्षिणपंथी और इस्मालिक राष्ट्र की समर्थक हैं। मगर बहुमत का नजरिया वही है जो युनुस और छात्रों का है। प्रोफेसर युनुस ने बहुवाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धतता दिखाते हुए, 13 अगस्त को ढाका के ढाकेश्वरी मंदिर का दौरा किया जहां वे हिन्दुओं के नेताओं से मिले, उनके दर्द को सुना और उनकी सुरक्षा का आश्वासन दिया। यह बहुत ही संतोषप्रद है।

इस बीच, भारत में नफरत फैलाने वाले और हिंदू राष्ट्रवाद के समर्थक बड़े पैमाने पर घृणा फैलाने और भड़काऊ संदेश भेजने में जुटे हैं। भाजपा सांसद कंगना रनौत ने ट्वीट किया च्शांति वायु या सूर्य की रोशनी की तरह नहीं है, जिसे आप अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानते हैं और वह आपको बिना कोई कीमत चुकाए हासिल होगी। महाभारत हो या रामायण, दुनिया में सबसे बड़ी लड़ाईयां अमन हासिल करने के लिए लड़ी गई हैं। अपनी तलवारें उठाओ, उनकी धार तेज करो, और प्रतिदिन लड़ने-भिड़ने का थोड़ा-बहुत अभ्यास करो'। कई अन्य लोग पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ बांग्लादेश को जानबूझकर 'इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ बांग्लादेश' के नाम से पुकार रहे हैं, जिसका बहुत ही पतित उद्देश्य है।

इसी तरह कई ट्रोल और भाजपा नेता भड़काने वाली बातें फैला रहे हैं। इस समय क्या किया जाना आवश्यक है? हमें बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों के अधिकारों के पक्ष में खड़ा होना चाहिए. अंतरिम सरकार अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का आव्हान कर रही है और अल्पसंख्यक अपने अधिकारों के समर्थन में एक रैली का आयोजन सफलतापूर्वक कर सके। इन दोनों बातों से यह प्रतीत होता है कि बांग्लादेश में धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए स्थान है, जिसकी समर्थन और सराहना की जानी चाहिए। लेकिन अल्पसंख्यकों के अधिकारों के हनन के सभी मामलों में एक सा रवैया अपनाया जाना चाहिए। हमें अपने देश में भी अल्पसंख्यकों के अधिकारों का समर्थन करना चाहिए ताकि हम पड़ोसी देशों के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत कर सकें।

पूरा दक्षिण एशिया साम्प्रदायिक राष्ट्रवाद के दौर से गुजर रहा है। श्रीलंका एक साल पहले तक साम्प्रदायिकता की गिरफ्त में था। पाकिस्तान अल्पसंख्यकों के अधिकारों का हनन करने के लिए कुख्यात है और म्यांमार भी इसी रास्ते पर चल रहा है। जो लोग तलवार निकालने की बात करते हैं और अन्य घृणा उत्पन्न करने वाले संदेशों का आदान-प्रदान करते हैं, उनका कुछ भी नहीं बिगड़ता, उन पर घृणा फैलाने और विभाजनकारी प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के आरोपों में कोई कानूनी कार्रवाई नहीं होती।

जनसंख्या संबंधी आंकड़ों के संबंध में गलत धारणाओं पर आधारित 'हिंदू खतरे में' के झूठे प्रचार को सोशल मीडिया में कही जा रही उन बातों से बल मिलता है जो तथ्यों की पुष्टि किए बिना फैलाई जाती हैं। बहुवाद और लोकतंत्र के पक्षधरों के कंधों पर इस समय बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। घृणा फैलाने वालों का बहुत बड़ा तंत्र बन गया है जो अपने विभाजनकारी एजेंडे पर अमल करने के लिए उद्यत है। इसका मुकाबला करने के लिए शांति एवं मैत्री में यकीन रखने वाले लोगों को और बड़ी संख्या में आगे आना होगा ताकि घृणा की इस फैलती आग को काबू में किया जा सके और सही तथ्य सामने लाने की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी व सघन बनाया जा सके।

हसीना का दुहरा चरित्र था। जहां एक ओर वे तानाशाह थीं, वहीं दूसरी ओर उनके राज में बहुवाद कुछ हद तक कायम रहा। जरूरी यह है कि बहुवाद और लोकतंत्र दोनों को सशक्त किया जाए. बांग्लादेश सरकार के समक्ष यह चुनौती है कि वह इन दोनों की जड़ें मजबूत करे। भारत को इन मूल्यों को बढ़ावा देकर दक्षिण एशिया के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। विभिन्न समुदायों के बीच संबंध प्रगाढ़ करने का प्रयास होना चाहिए, अल्पसंख्यकों के हित के सकारात्मक कदम उठाए जाने चाहिए और सभी के मानवाधिकारों की रक्षा की जानी चाहिए। किसी भी समुदाय के खिलाफ घृणा फैलाने वाली बातें नहीं की जानी चाहिए।

(अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनियां)

आपके पत्र

केंद्र सरकार की महत्वपूर्ण यूपीएस योजना के तहत लाखों पेंशनर होंगे लाभान्वित

केंद्र सरकार ने यूपीएस लागू करने का फैसला किया है। चुनावों में विपक्ष की पुरानी पेंशन योजना लागू करने की घोषणा के बाद केंद्र सरकार ने काट निकाल दी है। यूपीएस के तहत कर्मचारियों को 25 साल काम करने पर पूरी पेंशन मिलेगी। विपक्ष के बार-बार पुरानी पेंशन योजना की बहाली के लिए जनता को ललचाने का काम किया जा रहा है। केंद्र की इसी तरह की योजना के अंतर्गत पेंशनरों को बड़ी राहत देते हुए श्री मोदी की अध्यक्षता में यूपीएस लागू करने का निर्णय किया गया। योगी आदित्यनाथ और उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने मोदी का आभार व्यक्त किया है। मूल वेतन का 50 प्रतिशत रकम पेंशन के रूप में दी जाएगी। केंद्र सरकार ने यूनिफाइड पेंशन स्कीम को मंजूरी दे दी है। सरकारी कर्मचारियों ने 25 साल सेवा दी है। उनके अंतिम कार्यवर्ष के 12 महीनों में 50 प्रतिशत बतौर राशि पेंशन दी जाएगी। केंद्र सरकार का यह महत्वपूर्ण फैसला बुजुर्गों के चेहरे खिलने के निमित्त बना दिया है। सुनिश्चित पेंशन परिवार को पेंशन न्यूनतम पेंशन और पेंशन की राशि को महंगाई दर के साथ जोड़ने और सेवानिवृत्त के साथ ग्रेच्युटी के अलावा एक सुनिश्चित राशि के अलावा एक सुनिश्चित राशि के भुगतान की व्यवस्था सरकार का मकसद है। सरकार की तरफ से पेंशन फंड 14 प्रतिशत से 18.5 प्रतिशत कर दिया है। केंद्र सरकार का 6250 करोड़ का बोझ 2026 तक बढेगा। 2025 से लागू होने वाली योजना में 23 लाख कर्मचारियों के लिए यूपीएस महत्वपूर्ण है और एनपीएस से बढ़िया और फायदेमंद योजना लागू की जा रही है। राज्य सरकार को भी सलाह दी है कि वे चाहे तो यूपीएस लागू कर सकती है। धीरे-धीरे फायदा दिलाने वाली योजनाओं पर सरकार फैसला दे रही है जिसमें अनेक योजनाएं गरीबों के लिए फायदेमंद होगी। हरियाणा और जम्मू-कश्मीर में घोषणा हो चुकी है और झारखंड और महाराष्ट्र में चुनाव की घोषणा बाकी है। विपक्ष के पास अहम मुद्दा था ,जिस पर सतारूढ़ दल की मुहर लग गई। योगी ने कहा आर्थिक सुरक्षा का सूर्योदय हो चुका है। मोदी ने सरकारी कर्मचारियों का आभार जताते हुए कहा कि यूपीएस कर्मचारियों की गरिमा और आर्थिक सुरक्षा निश्चित करने वाला है। सेवानिवृत्त कर्मचारी की मृत्यु होने पर दस हजार की पेंशन दी जाएगी। खुदरा महंगाई बढ़ेगी तो पेंशन भी बढ़ेगी। छह माह का वेतन एक मुश्त मिलेगा । केंद्र सरकार की इस योजना से पेंशनरों के चेहरे खिल गए हैं। सरकार की इस महत्वपूर्ण योजना के लिए आभार जताया जा रहा है।

कांतिलाल मांडोत, सूरत

ललित सुरजन की कलम से

नवसाम्राज्यवाद, विदेश मोह और लेखक

'देश की राजनीति पर गौर करें तो बहुत महीन तरीके से कोशिश चल रही है कि यहां अमेरिकी तर्ज पर राष्टपति शासन प्रणाली लागू कर दी जाए। कार्पोरेट जगत के लिए यह सुविधाजनक है कि एक आदमी पर दांव लगा दे, बजाय इसके कि बड़ी संख्या में चुने गए संसद सदस्यों के साथ सौदेबाजी करना पड़े। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इस तरह से आए परिवर्तनों के प्रमाण देखे जा सकते हैं- लेकिन जो बात नहीं बदली है वह यह कि नेता, अफसर, व्यापारी का जो गठबंधन पहले होता था वह आज भी कायम है। पहले यदा-कदा इस तिकड़ी के खिलाफ आवाज़ उठाई जा सकती थी, लेकिन आज तो वह भी संभव नहीं है। मीडिया भी उनका है और गुंडे भी उनके। भारत में अगर सबसे सुरक्षित, सबसे अच्छा व्यवसाय कोई है तो वह है गवर्नमेंट सप्लाई का। यह पहले भी था, लेकिन अब इसका अनुपात कई गुना बढ़ चुका है।'

(अक्षर पर्व अगस्त 2013 की प्रस्तावना)

https://lalitsurjan.blogspot.com/2013/08/blog-post_28.html

गुरवाणी विचार

कर बंदे तूं बंदगी जिचर घट में साहो

फरीद चारि गंवाईआ हडं के चार गंवाइआ संगि। लेखा रब मंगेलिआ।।

वाणी की ये पंक्तियों को भी गुरु ग्रंथ साहिब में वाणी शेख फरीद में दर्ज है। इसमें शेख फरीदजी मानव मन को समझाइश देते हुए कह रहे हैं कि ये इंसान तूने दिन के चार पहर तो सांसारिक धंधों और विषय विकारों के चक्कर में मोह माया में पड़कर गंवा दिए और रात्रि के चार पहर गफलत की नींद में सोकर नष्ट कर दिए। प्रभु परमात्मा की सिमरन बंदगी में मन नहीं रमाया जब इस असार संसार से विदा होकर मृत्यु के द्वार में जाएगा तब तुझे प्रभु के धाम में हाजिरी देनी होगी। क्योंकि वहां हमारे द्वारा किये जा रहे प्रत्येक कर्म का लेखा जोखा धर्मराज की कचहरी में चित्रगुप्त द्वारा लिखा जा रहा है। वहां पर प्रभु परमात्मा के सेनापति धर्मराज हमसे पूछने वाला है कि संसार में जाकर किया क्या है? बचपन खेल कूद में खोया भरी जवानी विषय विकारों में खोया। तुझे चाहिए था कि प्रभु सिमरन बंदगी कर अपना मानव देही पाने का भरपूर लाभ उठा लेता पर तूने वहां विषय विकारों में सांसारिक मोह माया में गलतान रहकर अमोलक मानव जीवन को कौड़ियों के मोल गंवा दिया। ऐसी हालत में तेरे द्वारा किये गए कर्मों के अनुसार तुझे सजा तजबीज की जाएगी और सजा के रूप में फिर तुझे कितने जनमो तक विभिन्न-विभिन्न योनियों में भटकना पड़ेगा। अगर तूने प्रभु के सांचे दरबार में स्थान प्राप्त हो सकता था जहां आनंद ही आनंद की प्राप्ति होती रहेगी। ऐसे ही प्रभू लोक की कल्पना भक्त रविदास ने अपने शब्दों में की है- बेगमपुर शहर को नांवो।

हमें इस बात को अच्छी तरह गांठ बांध लेनी चाहिए कि हमें मानव जीवन मिला ही प्रभु सिमरन बंदगी रपने के लिए है। यह मानव जीवन भी हमारे किन्हीं पूर्व जनमों के अच्छे कर्मों के कारण मिला है। इस मानवदेही पाने हेतु देवता गण भी तरस रहे हैं क्योंकि बिना मानव देही के भजन पूजन असंभव है-इस देही को सिमरे देव। इस देही भजि हरि के सेव।।

इंसान को खाना-पीना, इसलिए आवश्यक है कि जीवन स्थिर स्वस्थ रहे। कहा भी गया है भूखे पेट भजन न होय गोपाला। स्वस्थ रहने पर ही इंसान प्रभु सिमरन बंदगी में मन रमा सकेगा। पर इंसान यहां आकर खाओ पिओ और मौज उड़ाओ में ही मशगूल रहता है। खाना-पीना, सोना, हंसना के बीच प्रभु को बिसार दिया है वरना वह यह भूल जाता है कि एक न एक दिन उसे इस असार संसार से विदा लेना है। क्योंकि मरण लिखाये मंडल में आये- हमें भेजने से पहले हमारे माथे पर लोहे की कलम से हमारी मौत की तारीख लिख दी गई है। तभी तो कहा गया है-

हानि लाभ जीवन मरण जस अपजस विधि हाथ।

इसलिए हर इंसान को प्रमाद की नींद का त्याग कर आलस्य को छोड़क प्रभु परमात्मा की भजन बंदगी में लीन हो जाना चाहिए। हमारे पास जितनी श्वांसों की पूंजी शेष बची है उसका भरपूर लाभ उठाकर प्रभु परमात्मा की सिमरन बंदगी में रम जाना चाहिए। ताकि फिर हम अपनी जीवन नौका को सुचारू रूप से खेकर इस संसार सागर से पार उतर सकें।

हवाएं बंदगी आखुर्द दर वजूद भरा।
वगरना जौक आमदन बबूद भरा।।

परमेश्वर की भक्ति करने की इच्छा ही हमें मनुष्य जीवन में खीच लाई है वरना इसके सिवाय मनुष्य जीवन में आने का प्रयोजन ही क्या था-

कर बंदे तूं बंदगी। जिचर घट में साहो।।

-इंदर सिंह आहुजा

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770

ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

इजरायल के तेल अवीव अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से प्रस्थान निलंबित

तेल अवीव, 25 अगस्त (एजेंसियां)। इजरायल के तेल अवीव अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से सुरक्षा स्थिति के कारण प्रस्थान निलंबित कर दिया गया है और आने वाली उड़ानों को अन्य हवाई अड्डों की ओर मोड़ा जा रहा है। टाइम्स ऑफ इजरायल अखबार ने देश के हवाईअड्डा प्राधिकरण के हवाले से यह जानकारी दी। अखबार के अनुसार, प्राधिकरण ने सुझाव दिया है कि यात्री प्रस्थान और आगमन के समय में बदलाव के बारे में एयरलाइंस से पूछताछ करें।

इजराइली सेना खान यूनिस से हटी सेंट्रल गाजा में घुसने की तैयारी

गाजा, 25 अगस्त (एजेंसियां)। इजराइली सेना दक्षिणी गाजा पट्टी में खान यूनिस से हट गई है और अब सेंट्रल गाजा को खाली करने का आदेश दिया है। फिलिस्तीनी सुरक्षा सूत्रों ने शनिवार को कहा कि खान यूनिस से इजराइली सैनिकों की वापसी के बाद देखा गया है कि वहां आवासीय भवनों को भारी नुकसान पहुंचा है। सूत्रों ने कहा कि शहर के उत्तर-पश्चिम में स्थित हमाद शहर में नुकसान ज्यादा हुआ है, जहां दर्जनों अपार्टमेंट ध्वस्त हो गए और टावर ढह गए।

स्थानीय सूत्रों और प्रत्यक्षदर्शियों ने कहा कि नागरिक सुरक्षा दल, रेड क्रॉस की अंतरराष्ट्रीय समिति और अन्य संगठन इजराइली सेना द्वारा आक्रमण किए गए क्षेत्रों में लापता व्यक्तियों की तलाश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कई शव और अवशेष बरामद किए गए है और उन्हें खान यूनिस में नासिर मेडिकल कॉम्प्लेक्स ले जाया गया। इस बीच, इजराइली सैन्य प्रवक्ता अविचाय एद्राई ने सेंट्रल गाजा के कुछ हिस्सों में लोगों से तुरंत खाली करने को कहा है। उन्होंने कहा, 'सुरक्षा के लिए, इन क्षेत्रों को तुरंत खाली कर दें और दूसरे क्षेत्रों में चले जाएं।' इजराइली सेना ने यह भी कहा कि 7वीं ब्रिगेड की उसकी लड़ाकू टीम देइर अल-बलाह के बाहरी इलाके में है, जहां दर्जनों 'आतंकवादी बुनियादी ढांचे' को नष्ट किया गया है और कई को मार गिराया गया है। एक अलग बयान में, सेना ने खान यूनिस में इस्लामिक जिहाद आंदोलन से संबंधित 500 मीटर लंबी सुरंग को नष्ट करने का दावा किया। एक छापे के दौरान, सेना ने हथगोले और लॉन्च करने के लिए तैयार किये गए रॉकेट प्लेटफ़ॉर्म को भी नष्ट कर दिया। गाजा में लंबे समय से चल रहे संघर्ष में 40,000 से अधिक फिलिस्तीनियों की मौत हो गई है। उधर मिस्र के सुरक्षा सूत्रों ने बताया कि अमेरिका और इजरायल के प्रतिनिधिमंडलों ने काहिरा में बैठकों का एक नया दौर शुरू किया। जिसका उद्देश्य गाजा में इजरायल और हमास के बीच संघर्ष को समाप्त करना और मतभेदों को दूर करना है।

पहले इजरायल ने लेबनान में बड़े पैमाने पर किए हवाई हमले

यरूशलम। इजरायल ने रविवार सुबह लेबनानी हिजबुल्लाह समूह के ठिकानों को निशाना बनाया और बड़े पैमाने पर हमला किया। आईडीएफ के प्रवक्ता डैनियल हगारी ने यह जानकारी दी। श्री हगारी ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'दर्जनों युद्धक विमान इस हमले में शामिल हुए। यह हमला लेबनानी हमले के खतरों को रोकने के लिए एक आत्मरक्षक हमला था' कुछ ही समय बाद, हिज़्बुल्लाह ने घोषणा की कि उसने बेरूत में अपने एक वरिष्ठ कमांडर की हत्या के प्रतिशोध में इजरायल पर बड़े पैमाने पर ड्रोन हमला किया है।

इजरायल-हमास के बीच काहिरा में शुरू होगी युद्ध विराम पर वार्ता

काहिरा, 25 अगस्त (एजेंसियां)। गाजा पट्टी में चल रही इजरायली गोलीबारी और हवाई हमलों के बीच मिस्र, कतर और अमेरिका ने इजरायल-हमास के बीच युद्ध विराम की कोशिशों को जारी रखा है। जानकारी के अनुसार, शनिवार को वार्ताकार गाजा संघर्ष विराम वार्ता के लिए तैयार हो गए हैं। रविवार को इजरायल-हमास के बीच युद्ध विराम पर फिर से वार्ता होगी। हालांकि, हमास ने कहा कि वह प्रतिनिधियों को काहिरा में भेज रहा है, लेकिन इस चर्चा में भाग नहीं लेगा। हमास के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि इस्लामिस्क समूह का एक प्रतिनिधिमंडल काहिरा जा रहा है, लेकिन वे वार्ता में शामिल नहीं होंगे। इसके बजाय वे वार्ता से जुड़ी अपडेट लेने के लिए मिस्र के वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात करेंगे। अधिकारी ने कहा कि हमास इजरायल से आग्रह करेगा कि वह गाजा से अपने सभी सैनिकों को वापस बुलाए, इसमें मिस्र का फिलाडेल्फिया कॉरिडोर क्षेत्र भी शामिल है। शनिवार को हमास के एक दूसरे अधिकारी ने कहा कि हमास के नेता याह्या सिनवार भी पहले ही बाइडेन की योजना पर सहमत हो चुके हैं और वे चाहते हैं कि इसे संशोधन किए बिना लागू किया जाए। व्हाइट हाउस ने कहा कि इस सप्ताह वार्ता को लेकर प्रगति हुई। हालांकि, गाजा-मिस्र सीमा पर इजरायली सैनिकों की मौजूदगी एक अड़चन बनकर सामने आई है।

इस बीच नासेर अस्पताल के एक डॉक्टर ने बताया कि दक्षिणी गाजा में खान यूनिस के पश्चिम में कई घर को निशाना बनाया गया। शुक्रवार से शनिवार की रात तक हुए इन हमलों में 11 लोगों की मौत हो गई है। वहीं, दूसरी ओर प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने कॉरिडोर पर सैनिकों की तैनाती पर जोर दिया है। उनका तर्क है कि हमास को रोकने की जरूरत है, ताकि उसे मिस्र से हथियारों की तस्करी न हो पाए। मिस्र के एक सूत्र के मुताबिक अमेरिका, इजरायल और हमास के बीच की खाई को पाटने के लिए मध्यस्थों के साथ नए प्रस्तावों पर चर्चा कर रहा है।

सुडोकू 6657

	8				1	4		
		9		2	8	1		
				4			9	
	3							7
4			3		5			9
6							4	
	9			8				
		5	7	3		6		
		6	1				8	

: नियम :

1. कुल 81 (9×9) वर्ग हैं, जिसमें 9 (3×3) वर्गों का एक खंड (ब्लॉक) बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कॉलम,कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

हल आज ही के अंक में

दैनिक पंचांग

mypandit.com 24 hour astrology service

■ बेजान दारूवाला

ग्रह स्थिति : सोमवार 26 अगस्त , 2024 भाद्र कृष्ण पक्ष 8

राशिफल

मेष -आज आपके तन और मन का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। खर्च की चिंता से मन अशांत रह सकता है। वाणी पर संयम रखना अति आवश्यक है। बाहर का खाना-पीना संभवत: टालें। कार्यालय में सहकर्मियों से आपको लाभ होगा।

वृषभ -शारीरिक और मानसिक रूप से स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा। उत्साह से किसी भी काम को बेहतर कर पाने में सक्षम रहेंगे। आप के लिए काम के प्रति एकाग्र होना सरल रहेगा।

मिथुन -आज का दिन कष्टदायी होने से हर काम में सावधानी बरतें। परिजनों एवं संतान से अनबन हो सकती है। उग्रता एवं आवेग को अंकुश में रखें, ताकि बात ना बिगड़ें।

कर्क -आप का दिन आनंद और उल्लास में गुजरेगा। व्यापार में लाभ होगा। आय के स्रोत में बढ़ोतरी हो सकती है। मित्रों से हुई मुलाकात से आनंद का अहसास होगा। विवाह योग्य जातकों के विवाह के योग हैं।

सिंह -आज कार्यक्षेत्र में आप प्रभावी होंगे। उच्च अधिकारियों पर आपके काम का सकारात्मक असर होगा, इससे वे आप पर प्रसन्न रहेंगे। आज आप दृढ़ मनोबल और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपना काम पूरा करेंगे।

कन्या -आपका आज का दिन प्रतिकूलताओं से भरा रहेगा। चिंता के कारण मानसिक परेशान रहेंगे। शारीरिक रूप से स्फूर्ति का अभाव रहने से थकान और अशक्ति का अनुभव होगा, इससे काम में भी मन नहीं लगेगा।

तुला -आज किसी के साथ वाद-विवाद हो सकता है। क्रोध पर कंट्रोल करें। वाणी और व्यवहार पर संयम बरतना आपके लिए हितकारी होगा। हितशत्रुओं से भी सावधान रहें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृश्चिक -आज का दिन आपके लिए मनोरंजन का दिन है। मित्रों के साथ पार्टी या पिकनिक में दिन अच्छी तरह से गुजरेगा। वस्त्राभूषण, वाहन तथा भोजन का अच्छा सुख प्राप्त होगा। आपकी मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

धनु -आज का दिन आपके लिए हर्षोल्लास का रहेगा। परिवार में आनंद का वातावरण छाया रहेगा, इससे आपका मन प्रफुल्लित रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। व्यवसाय में लाभदायी दिन रहेगा।

मकर -आज आपका मन चिंताग्रस्त और दुविधायुक्त रहेगा। ऐसी मनोदशा में आप किसी भी कार्य में दृढ़ निश्चय नहीं रह पाएंगे। आज के दिन कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करें, क्योंकि आज भाग्य साथ नहीं देगा।

कुंभ -आज आप के स्वभाव में प्रेम छलकेगा। इस कारण मानसिक रूप से व्यग्रता का अनुभव होगा। धन कमाने की नई योजना बन सकती है। महिलाएं आभूषण, वस्त्र, सौंदर्य-प्रसाधन खरीदने में पैसा खर्च करेंगी।

मीन -आज आपका दिन शुभ फलदायी है। आपकी सृजनात्मक और कलात्मक शक्तियों में वृद्धि होगी। वैचारिक स्थिरता के कारण आपके काम आज अच्छी तरह से पूरे हो पाएंगे। महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए आज का दिन शुभ है।

नोट-उपरोक्त राशिफल बेजान दारूवाला द्वारा पूर्वलिखित है।

ताइवान के उप-विदेश मंत्री प्रशांत द्वीप देशों के सम्मेलन में लेंगे भाग

ताइपे, 25 अगस्त (एजेंसियां)। ताइवान के विदेश मंत्रालय ने रविवार को बताया कि इस सप्ताह टोंगा में प्रशांत द्वीप देशों के सम्मेलन में देश के उप विदेश मंत्री हिस्सा लेंगे। चीन और अमेरिका इस क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ये क्षेत्र ताइपे और बीजिंग के बीच प्रतिस्पर्धा का कारण भी है। चीन उन देशों से दूरियां बना रहा है, जो चीन के दावे वाले ताइवान के साथ औपचारिक राजनयिक संबंध रखते हैं।

ताइवान के विदेश मंत्रालय ने बताया कि उप विदेश मंत्री टीएन चुंग-क्वांग अपने तीन प्रशांत क्षेत्रों के सहयोगियों के साथ शिखर सम्मेलन करेंगे ताकि उनके और अन्य 'समान विचारधारा वाले देशों' के साथ साझेदारी को मजबूत किया जा सके। इस बात से उनका इशारा अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों की ओर था। जनवरी में, लाई चिंग ते के ताइवान के नए राष्ट्रपति के रूप में चुनाव जीतने के तुरंत बाद, नाउरू ने ताइपे से बीजिंग के साथ संबंध स्थापित कर लिए, जिसके बारे में ताइवान की सरकार ने कहा कि यह चीन के निरंतर दबाव अभियान का हिस्सा था। तीन देश - पलाऊ, तुवालु और मार्शल द्वीप- ताइवान के साथ बने हुए हैं। 2018 में नाउरू, जो तब भी ताइवान का सहयोगी था, ने प्रशांत द्वीप समूह फोरम में अपनी बारी से पहले बोलने के लिए 'अहंकारी' चीन की निंदा की। ताइवान ने 1993 से 'ताइवान/चीन गणराज्य' के नाम से विकास भागीदार के रूप में इस फोरम में भाग लिया है। चीन का कहना है कि लोकतांत्रिक रूप से शासित ताइवान उसके प्रांतों में से एक है, जिसे राज्य-से-राज्य संबंध रखने का कोई अधिकार नहीं है, ताइपे सरकार इसका कड़ा विरोध करती है। इस सप्ताह 18 प्रशांत द्वीप देशों के नेताओं की बैठक में जलवायु परिवर्तन और सुरक्षा पर चर्चा होने की उम्मीद है। अमेरिकी उप विदेश मंत्री कर्ट कैंपबेल भी जा रहे हैं। ताइवान और टोंगा के बीच 1972 से 1998 तक राजनयिक संबंध थे, जब देश ने बीजिंग को मान्यता दी और ताइपे के साथ संबंध तोड़ दिए। अब केवल 12 देश ताइवान के साथ आधिकारिक राजनयिक संबंध रखते हैं।

दक्षिण कोरिया व अमेरिका मिलकर करेंगे एंफीबियस लैंडिंग अभ्यास

सोल, 25 अगस्त (एजेंसियां)। दक्षिण कोरिया की नौसेना और मरीन कॉर्प्स ने रविवार को बताया कि

दक्षिण कोरिया और अमेरिका इस सप्ताह दक्षिण-पूर्वी शहर पोहांग में एंफीबियस लैंडिंग अभ्यास शुरू करेंगे।

सैन्य अधिकारियों के अनुसार, एंफीबियस लैंडिंग अभ्यास सोमवार से शुरू होकर 7 सितंबर तक चलेगा। इस साल के सैंगयोंग (डबल ड्रैगन) अभ्यास में लगभग 40 जहाज शिरकत करेंगे। इसमें दो एंफीबियस असॉल्ट शिप, आरओकेएस डोक्डो और आरओकेएस माराडो और यूएसएस बॉक्सर शामिल हैं। योनहाप समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, नौसेना और मरीन कॉर्प्स ने एक संयुक्त बयान में कहा कि अभ्यास में लगभग 40 विमान शामिल होंगे। इनमें एफ-35बी रडार-एवेडिंग जेट और लगभग 40 एंफीबियस असॉल्ट जहाज भी शामिल होंगे। पिछले साल सितंबर में शुरू की गई ड्रोन अभियानों की निगरानी करने वाली एक संयुक्त सैन्य कमान पहली बार सैंगयोंग अभ्यास में भाग लेगी। साथ ही वह ड्रोन तैनात करने वाली निगरानी गतिविधियों का संचालन करेगी।

वर्ग पहेली 6657

१		२		३	■	४		५	
	■		■	६			■		■
७			■		■	८			९
	■		■	१०			■	■	
■	११		१२		■	■	१३		
■		■		■	१४			■	
१५		१६				■	१७	१८	■
	■		■	१९		२०	■		■
२१			■		■	२२			२३
	■	२४				■	■	■	

बायें से दाये:-

१.वित्त व्यवस्था

४. सभी लोगों के लिए, सार्वजनिक

६. नौ प्रकार से, नौ खंडों में

७. प्रमाणित (उर्दू)

८. युद्ध नीति

१०. पैर, पद,

११. पानी से भरा हुआ

१३. बड़ा भाई

१४. अनेक तरह का

१५. निर्दयी (उर्दू)

१७. सूर्य

१९. सही मार्ग से भटका हुआ, भिन्न मार्ग, गलत रास्ता

२१. प्रतिकार, प्रतिशोध

२२. नीच मनुष्य

२४. ढूंढना, खोजना (उर्दू)

ऊपर से नीचे:-

१. मुताबिक

२. शरणागत की रक्षा करने वाला

३. दौलत एकत्र करना, धन संग्रह

४. मामूली, सामान्य

५. जन्म देने वाली माता

९. हिंदू धर्म का एक धार्मिक कृत्य जिसमें मृतक के नाम तिल मिश्रित जल की अंजलि दिया जाता है

१२. धीमा, मंद

१३. होंठ

१४. चोट, आघात, नाश, हानि, अपहरण

१५. अकारण (उर्दू)

१६. विचाराधीन अभियुक्तों को रखने की जगह (उर्दू)

१८. मुखालफत

१९. मजबूर

२०. गाय-भैंस का स्तन

२३. शराब

वर्ग पहेली-6656

१ मा	न	२ दे	य	■	■	३ सु	प्र	४ सि	द्ध
न	■	व	■	५ वि	क्षि	प्त	■	त	■
६ व	च	ना	मृ	त	■	७ ज	न	म	८ त
ता	■	ग	■	९ र	स	न	■	■	ह
■	१० प	री	११ क्ष	क	■	■	१२ बे	बा	की
■	रं	■	म	■	१३ प	तो	हू	■	का
१४ आ	तु	१५ र	ता	■	वि	■	१६ दा	१७ व	त
त्म	■	ण	■	१८ पा	त्र	१९ ता	■	रू	■
२० ह	टा	ना	■	ल	■	२१ प	रि	ण	२२ य
त्या	■	२३ द	र्द	ना	क	■	■	■	दि

युसूफ कुरैशी, मो. 8109948408

मोदी का विमान पाकिस्तानी हवाई क्षेत्र से होकर गुजरा

लाहौर, 25 अगस्त (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विमान पोलैंड से भारत लौटते समय पाकिस्तान के हवाई क्षेत्र से होकर गुजरा है।

एक मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। रिपोर्ट के अनुसार नागरिक उड्डयन प्राधिकरण (सीएए) के सूत्रों ने बताया कि श्री मोदी का विमान सुबह 10:15 बजे पाकिस्तानी हवाई क्षेत्र में दाखिल हुआ और करीब 46 मिनट तक वहां रहा। विमान इस्लामाबाद और लाहौर के हवाई नियंत्रण क्षेत्रों से गुजरने से पहले चित्राल से गुजरा तथा आखिरकार अमृतसर के रास्ते सुबह 11:01 बजे भारत में दाखिल हुआ। द न्यूज से बात करते हुए सीएए के एक अधिकारी ने स्पष्ट किया कि अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन की मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) के तहत उड़ान की अनुमति दी गई थी। अधिकारी ने बताया, 'अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार ऐसी परिस्थितियों में अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) की आवश्यकता नहीं होती है। संबंधित देश के सीएए को केवल पहले से सूचित करने की आवश्यकता होती है। तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री मोदी चार बार पाकिस्तान के हवाई क्षेत्र को पार कर चुके हैं।

सुनीता विलियम्स सहित बोइंग स्टारलाइनर का चालक दल फरवरी 2025 में अंतरिक्ष से लौटेगा

टेक्सास, 25 अगस्त (एजेंसियां) भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स सहित बोइंग के संकटग्रस्त स्टारलाइनर का चालक दल फरवरी 2025 में अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) से लौट जायेगा, जबकि जहाज बाद में चालक दल के बिना वापस आएगा। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के प्रशासक बिल नेल्सन ने शनिवार को यह जानकारी दी।

नेल्सन ने एक ब्रीफिंग में कहा, 'नासा ने फैसला किया है कि अंतरिक्ष यात्री बैरी 'बुच' विल्मोर और सुनीता 'सुनी' विलियम्स अगले फरवरी में क्रू-9 के साथ लौटेंगे, और स्टारलाइनर बिना चालक दल के वापस आएगा।' अंतरिक्ष यान के धरती पर लौटने का सही समय फिलहाल तय नहीं किया गया है। स्टारलाइनर को पांच जून को चालक दल के दो सदस्यों के साथ लॉन्च किया गया था, लेकिन आईएसएस की उड़ान के दौरान इसके 28 थ्रस्टरों में से पांच अलग-अलग समय पर विफल हो गए और पांच हीलियम लीक भी दर्ज किए गए। नासा अधिकारियों ने स्वीकार किया कि अंतरिक्ष यान की वापसी की उड़ान मूल रूप से 14 जून के लिए निर्धारित की गयी थी, लेकिन तब से तकनीकी समस्याओं के कारण बार-बार देरी हो रही है। पृथ्वी पर इंजीनियरों की ओर से समस्याओं को हल करने की तमाम कोशिशों के बावजूद सफलता नहीं मिलने पर अंतरिक्ष यात्रियों को वापस बुलाने का निर्णय लिया गया है।

आज का इतिहास

1303-अलाउद्दीन ख़िलजी ने चित्तौड़गढ़ पर क़ब्ज़ा किया।

1891-हिन्दी साहित्य के एक महान उपन्यासकार चतुरसेन शास्त्री का जन्म।

1910-भारत रत्न से सम्मानित मदर टेरेसा का जन्म।

1914-बंगाल के क्रांतिकारियों ने कलकत्ता में ब्रिटिश बेड़े पर हमला कर 50 माउजर और 46 हज़ार राउंड गोलियाँ लूटी।

1920-अमेरिका में महिलाओं को मताधिकार मिला।

1927-हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और स्वतन्त्रता सेनानी बंसीलाल का जन्म।

1934-प्रसिद्ध विधिवेत्ता, शिक्षा प्रेमी, रचनाकार तथा बांग्ला भाषा के प्रसिद्ध कवि और संगीतकार अतुल प्रसाद सेन का निधन।

1956-प्रसिद्ध राजनेत्री, संजय गाँधी की पत्नी एवं पशु-अधिकारवादी मेनका गाँधी का जन्म।

1963-पारसी रंगमंच शैली के हिन्दी नाटककारों में प्रमुख राधेश्याम कथावाचक का निधन।

1977-जर्मनी के म्यूनिख शहर में 20वें ओलंपिक खेलों की शुरूआत।

1982-नासा ने टेलीसेट-एफ का प्रक्षेपण किया।

1987-भारतीय निशानेबाज जीतू राय का जन्म।

1999-माइकल जॉनसन ने 400 मीटर दौड़ में विश्व रिकार्ड बनाया।

2001-बंगलादेश के पूर्व प्रधानमंत्री जेल भेजे गए।

2002-दक्षिण अफ़्रीका के जोहानिसबर्ग शहर में दस दिवसीय पृथ्वी सम्मेलन शुरू।

2007-पाक-अफ़ग़ान सीमा पर अमेरिकी नेतृत्व वाली सेना ने 12 तालिबानियों को मार गिराया।

यादें चांद पर पहला कदम रखने वाले नील आर्मस्ट्रॉन्ग का 25 अगस्त को हुआ था निधन

नील आर्मस्ट्रॉन्ग की मौत पर उठे थे कई सवाल

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। 2012 की 25 अगस्त ही थी जब दुनिया से वह एस्ट्रोनॉट रुखसत हो गया जिसने न जाने कितनों में चांद को छूने की ललक जगाई थी। जिस तरह इनके चांद पर रखे कदम ने सबको हैरान कर दिया था ठीक उसी तरह इनकी मौत पर यकीन करना मुश्किल था।

दो हफ्ते पहले ही तो बायपास सर्जरी हुई थी। हालात में सुधार हो रहा था कि उनके निधन की दुखद खबर आ गई। खूब बवाल मचा। अमेरिका के एक रसूखदार अस्पताल में इलाज हो रहा था, सब कुछ दुरुस्त था कि अनहोनी हो गई।

अमेरिकी मीडिया में हलचल मची और आखिरकार मामला 'सेटल' किया गया। कथित तौर पर छह मिलियन डॉलर आर्मस्ट्रांग फैमिली को दिए गए। औपचारिक तौर पर मौत की वजह 'हृदवाहिका प्रक्रियाओं में जटिलताओं' को बताया गया।

आर्मस्ट्रांग अमेरिका के ही नहीं पूरी दुनिया के हीरो थे। ऐसा शख्स जिसकी बायोग्राफी 'फर्स्ट मैः लाइफ ऑफ नील ए. आर्मस्ट्रॉन्ग' में कई रोमांचक क्षणों का उल्लेख है। जैसे उनके पिता के हवाले से कि उनके बेटे की 'कभी लड़कियों से नजदीकी नहीं रही' और 'इसलिए उसे कार की जरूरत नहीं थी' बल्कि बस 'उसे... हवाई अड्डे तक पहुंचना था।' उनके ये शब्द ही नील ऑर्मस्ट्रॉन्ग की आसमान के प्रति दीवानगी का एहसास कराते हैं।

ऐसा उन्होंने इसलिए भी कहा था क्योंकि नील ने ऑटोमोबाइल लाइसेंस हासिल करने से पहले पायलट का लाइसेंस हासिल कर लिया था।

ऑटोमोबाइल से पहले प्लेन चलाने में महारत हासिल कर ली थी। आसमान को छूने का जुनून आर्मस्ट्रॉन्ग को बचपन से ही था। जब महज दो साल के थे, तब पिता उन्हें क्लीवलैंड एयर रेस दिखाने ले गए वहां हवाई उड़ानें देख छोटा नील बहुत उत्साहित हुआ। पांच-छह वर्ष की उम्र में उन्होंने पहली बार हवाई जहाज में उड़ान भरी। थोड़े बड़े हुए तो आर्मस्ट्रॉन्ग ने ब्लूम हाई स्कूल में पढ़ाई की और वापाकोनेटा हवाई क्षेत्र में ट्रेनिंग ली। अपने 16वें जन्मदिन पर स्टूडेंट फ्लाइट सर्टिफिकेट भी हासिल कर लिया। करियर की बात करें तो साल 1949 से 1952 तक अमेरिकी नौसैनिक एविएटर के रूप में सेवा देने के बाद 1955 में नेशनल एडवाइजरी कमेटी फॉर एरोनॉटिक्स (NACA) में शामिल हुए। जिसे बाद में NASA के ड्राइडन फ्लाइट रिसर्च सेंटर का नाम दिया गया। अगले 17 वर्षों में उन्होंने NAC और इसकी नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (NASA) के एक इंजीनियर, परीक्षण पायलट और अंतरिक्ष यात्री के तौर पर खुद को साबित किया।

दुनिया को जानें

टैटू बनवाने वाले लोगों में 'लिम्फोमा' ब्लड कैंसर होने का खतरा

नई दिल्ली , 25 अगस्त (एजेंसियां)। भारत में आज कल महिला और पुरुषों में शरीर पर अलग-अलग तरह के टैटू बनवाने का क्रेज बढ़ता जा रहा है। लेकिन क्या आपको पता है कि टैटू बनवाना घातक भी साबित हो सकता है और आप लिम्फोमा बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। कई साल पहले तक टैटू का चलन सिर्फ अमेरिका जैसे पश्चिम देशों में था, लेकिन अब भारत समेत कई एशियाई देशों में टैटू बनवाने का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। युवा विभिन्न तरीके से धार्मिक, सांस्कृतिक, कार्टून और तरह तरह के डिजाइन वाले टैटू अपने शरीर के अंगों पर बनवाते हैं। कुछ लोग अपने माता-पिता, प्रेमी-प्रेमिका और खुद के नाम का भी टैटू बनवाते हैं।

रंग-बिरंगे और अलग-अलग प्रकार के डिजाइन वाले टैटू दिखने में तो काफी अच्छे और आकर्षक लगते हैं, लेकिन सेहत के लिए नुकसानदायक हो सकते हैं। टैटू से कैंसर जैसी बीमारी का खतरा बढ़ सकता है। इस बात का खुलासा एक हालिया स्टडी में हुआ है। रिसर्च में बताया गया है कि टैटू बनवाने से स्किन को गंभीर नुकसान हो सकता है।

प्रादेशिक

सड़क सुरक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा : वर्मा

शिमला। हिमाचल में सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, हिमाचल प्रदेश पुलिस महानिदेशक डॉ. अतुल वर्मा के निर्देशन में यातायात, पर्यटक और रेलवे (टीटीआर) विभाग, शिमला द्वारा आईएसबीटी शिमला में भारी और हल्के वाणिज्यिक वाहनों के चालकों के लिए एक दिवसीय नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। इस पहल का उद्देश्य परिवहन चालकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को सुनिश्चित करना था, जिसमें दीन दयाल उपाध्याय जिला अस्पताल, शिमला की विशेष चिकित्सा टीम ने सहयोग दिया। इस टीम में नेत्र चिकित्सा अधिकारी, ऑप्टोमेट्रिस्ट और तकनीशियन शामिल थे। शिविर में कुल 105 चालकों के नेत्र परीक्षण किए गए, जिनमें से सात लोगों को उन्नत उपचार के लिए नेत्र अस्पताल जाने की सलाह दी गई। यह सुनिश्चित किया गया कि किसी भी संभावित नेत्र समस्याओं का समाधान समय पर हो, जिससे सड़क सुरक्षा प्रभावित न हो। विशेष रूप से, प्रतिभागियों में से किसी में भी रंग अंधापन या अन्य नेत्र संबंधी अयोग्यता का मामला नहीं पाया गया।

उच्च शिक्षा में प्रवेश से वंचित छात्रों को मिलेगा अंतिम मौका : डॉ.धन सिंह रावत

अमरनाथ तिवारी

देहरादून, 25 अगस्त (देशबन्धु)। सूबे के उच्च शिक्षण संस्थानों में विभिन्न कारणों से प्रवेश लेने से वंचित रह गये छात्र-छात्राओं को प्रवेश हेतु आखिरी मौका दिया जायेगा। विभागीय अधिकारियों को आगामी 27 अगस्त से 5 सितम्बर 2024 तक पुन: समर्थ पोर्टल खोलने के निर्देश दे दिये गये हैं

- **27 अगस्त से 5 सितम्बर तक पंजीकरण के लिए खुलेगा समर्थ पोर्टल**
- **शिक्षा मंत्री ने अधिकारियों को दिए निर्देश, प्रवेश से वंचित न रहे कोई छात्र**

ताकि प्रवेश से वंचित छात्र-छात्राएं ऑनलाइन पंजीकरण करा सकें। समर्थ पोर्टल पर शैक्षणिक सत्र 2024-25 हेतु स्नातक प्रथम सेमेस्टर के लिये 76030 जबकि परास्तनाक प्रथम सेमेस्टर के लिये 24895 छात्र-छात्राओं ने ऑनलाइन पंजीकरण किया है।

सूबे के उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने मीडिया को बताया कि प्रदेश के उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश से किसी भी युवा को वंचित नहीं रखा जायेगा। उन्होंने बताया कि उत्तराखंड विद्यालय शिक्षा परिषद, सीबीएसई एवं अन्य बोर्डों की परीक्षाफल सुधार परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र-छात्राएं, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में प्रवेश से वंचित एवं अन्य कारणों से प्रवेश न ले पाने वाले छात्र-छात्राओं

की आवश्यकता को देखते हुए उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत राज्य विश्वविद्यालयों के परिसरों एवं उनसे सम्बद्ध समस्त शासकीय, अशासकीय एवं निजी महाविद्यालयों में स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं में प्रवेश हेतु अंतिम मौका दिया जायेगा। इसके लिये विभगाय अधिकारियों को आगामी 27 अगस्त से 5 सितम्बर 2024 तक दोबारा समर्थ पोर्टल खोलने के निर्देश दे दिये गये हैं।

डॉ. रावत ने बताया कि उक्त समयावधि में प्रवेश से वंचित रह गये छात्र-छात्राएं समर्थ पोर्टल पर अपना पंजीकरण करा सकेंगे और उच्च शिक्षण संस्थानों में स्नातक व परास्नातक कक्षाओं में प्रवेश ले सकेंगे। उन्होंने कहा कि प्रवेश से वंचित छात्र-छात्राओं को ऑनलाइन पंजीकरण में कोई समस्या न हो इसके लिये विभागीय अधिकारियों को जरूरी निर्देश दे दिये गये हैं।

विभागीय मंत्री ने बताया कि राजकीय विश्वविद्यालयों में एकरूपता लाने के दृष्टिगत विगत वर्ष समर्थ गवर्नेंस पोर्टल को लागू किया गया। जिसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। उन्होंने बताया कि शैक्षणिक सत्र 2024-25 के लिये समर्थ पोर्टल पर अबतक स्नातक प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश के लिये कुल 76030 छात्र-छात्राओं ने ऑनलाइन पंजीकरण कराया है। जिसके तहत कुमाऊं विश्वविद्यालय में 31101, श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय 31326 तथा सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय में 13603 छात्र-छात्राएं शामिल हैं। इसी प्रकार परास्नातक प्रथम सेमेस्टर हेतु कुल 24895 छात्र-छात्राओं ने समर्थ पोर्टल पर ऑनलाइन पंजीकरण कराया है जिसमें कुमाऊं विश्वविद्यालय में 12249, श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय 8193 तथा सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय में 4453 छात्र-छात्राएं शामिल हैं।

विभागीय मंत्री ने बताया कि कुल पंजीकरण के सापेक्ष अबतक परास्नातक कक्षा के लिये 9324 तथा स्नातक में 48251 छात्राओं ने प्रवेश लिया है। उन्होंने कहा कि, राज्य

उक्त समयावधि में प्रवेश से वंचित रह गये छात्र-छात्राएं समर्थ पोर्टल पर अपना पंजीकरण करा सकेंगे और उच्च शिक्षण संस्थानों में स्नातक व परास्नातक कक्षाओं में प्रवेश ले सकेंगे : डॉ.धन सिंह रावत

सरकार प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुलभ कराने हेतु संकल्पबद्ध है और इस दिशा में सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि जिन महाविद्यालयों में विश्वविद्यालयों में मानक अनुसार आवश्यक संसाधन उपलब्ध हैं और प्रवेश के लिए छात्र प्रतीक्षारत हैं ।

शहीदों का सम्मान स्वयं का भी सम्मान है : मुख्यमंत्री

उत्तरकाशी, 25 अगस्त (देशबन्धु)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को तहसील जैंती के धामदेव में सालम क्रांति दिवस के अवसर पर शहीद स्मारक पर पुष्प चक्र अर्पित कर शहीद नर सिंह एवं टीका सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानी नर सिंह और टीका सिंह ने अग्रेजो से लड़ते हुए 25

- **धामी ने तहसील जैंती के धामदेव में सालम क्रांति दिवस पर शहीद स्मारक पर किया पुष्प चक्र अर्पित**
- **बोले देश की सेना मोदी के नेतृत्व में गोली का जवाब दे रही गोली से**

अगस्त 1942 को इस स्थान पर बलिदान दिया था। उनकी बरसी पर हर साल धामदेव में यह दिवस मनाया जाता है।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि नर सिंह और टीका सिंह के जीवन से आज युवाओं को प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि शहीदों का सम्मान स्वयं का भी सम्मान है। उन्होंने कहा कि देश ने पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश के वीर सपूतों को याद करते हुए आजादी का अमृत महोत्सव मनाया है , जिसके तहत आजादी के ऐसे अनगिनत अमर शहीदों को याद किया गया। उन्होंने हर घर झंडा अभियान में भागीदारी के लिए जनता जनार्दन का आभार व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि आज देश प्रधानमंत्री

मोदी के नेतृत्व में विश्व में अपना परचम लहरा रहा है। कहा कि भारत की परिस्थितियां पहले की अपेक्षा काफी बदल गई हैं। उन्होंने कहा कि देश की सेना अब दुश्मनों की गोली का जवाब गोलों से देती है, इसके लिए सेना को निर्णय लेने की छूट दी गई है।

उन्होंने कहा कि मानस कोरिडोर के तहत कुमाऊं के सभी प्रमुख मंदिरों का कायाकल्प किया जाएगा, उनका सौंदर्यीकरण किया जाएगा। कहा कि समान नागरिक संहिता की दिशा में प्रदेश आगे बढ़ रहा है। इसके लिए गठित समिति की कई अहम बैठकें भी कर ली गई हैं। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार प्रदेश के विकास को समर्पित है। उन्होंने कहा कि जागेश्वर धाम का विकास भी मास्टर प्लान के तहत प्राथमिकता से किया जाएगा। उन्होंने कहा की पिछली बार उनके द्वारा

मानस कोरिडोर के तहत कुमाऊं के सभी प्रमुख मंदिरों का कायाकल्प किया जाएगा, उनका सौंदर्यीकरण किया जाएगा। समान नागरिक संहिता की दिशा में भी प्रदेश आगे बढ़ रहा है : पुष्कर सिंह धामी

सालम के लिए की गई पचास लाख की घोषणा का टेंडर भी हो गया है। जल्द ही इस पर कार्य शुरू हो जाएगा। उन्होंने आगामी पांच वर्षों में राज्य की जीडीपी को दुगना करने की बात कही, इसके लिए सरकार लगातार इस दिशा में प्रयासरत है। सालम क्रांति पर एक डॉक्यूमेंट्री बनाने की भी बात कही, जिससे आने वाली पीढ़ी सालम का इतिहास जान सके। उन्होंने कहा कि चारधाम यात्रा में तीस लाख से अधिक श्रद्धालुओं का आना एक रिकॉर्ड है।

सार संक्षेप

अजय टम्टा ने सुनीं लोगों की समस्याएं

रामनगर। केंद्रीय रक्षा राज्यमंत्री अजय टम्टा रामनगर पहुंचे, जहां कार्यकर्ताओं ने उनका भव्य स्वागत किया। अजय टम्टा ने किशनपुर छोई शक्ति केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात के 113वें एपिसोड में हिस्सा लिया और लोगों की समस्याओं को सुना। उन्होंने कहा कि रामनगर और आसपास के क्षेत्र के गांवों को राजस्व गांव बनाने के लिए कार्रवाई गतिमान है, जल्द ही इन गांवों को राजस्व गांव घोषित किया जाएगा। इस क्रम में छोई पड़ाव और अन्य क्षेत्र भी शामिल हैं। केंद्रीय रक्षा राज्यमंत्री अजय टम्टा ने कहा कि आज देश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में तेजी से आगे बढ़ रहा। भारत पूरे विश्व में एक अलग पहचान बना रहा है। वहीं, अजय टम्टा ने आपदा को लेकर कांग्रेस पर जुबानी हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस के पास अब कुछ काम बचा नहीं है, जिससे कांग्रेस केवल आरोप और प्रत्यारोप लगाने का कार्य करती है। उन्होंने कहा कि आपदा जिस क्षेत्र में आती है, वहां सब कुछ तबाह करके चली जाती है। ऐसे में भाजापा या कोई और अन्य पार्टी क्या कर सकती है।

नाबालिग ने फंदा लगाकर की आत्महत्या

अंबाला। हरियाणा में अंबाला के प्रेम नगर शहर में शनिवार को एक नाबालिग छात्र ने रहस्यमय परिस्थितियों में फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस सूचना मिलने के बाद घटनास्थल पर पहुंची। जहां नाबालिग प्रथम (15) को शव फंदे से लटका हुआ मिला। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल पहुंचाया। पुलिस को बताया गया कि घटना शाम छह बजे की है। परिजनों ने बताया गया कि प्रथम का घर की छत से गिरने के बाद मानसिक संतुलन ठीक नहीं था। उसे इलाज के लिए पीजीआई ले जाया गया, लेकिन उसका पूरा इलाज नहीं हो सका और उसकी हरकतें असामान्य होती चली गयी थीं।

जीरकपुर में दो लोग ढाई क्विंटल पोस्त के साथ गिरफ्तार

चंडीगढ़। पंजाब में मोहाली जिला की जीरकपुर पुलिस ने शनिवार को नाकाबंदी के दौरान दो लोगों को ढाई क्विंटल पोस्त के साथ गिरफ्तार किया है। जांच अधिकारी इंस्पेक्टर नायब सिंह ने यहां कि बताया कि पीआर-सात रोड पर मैकडोनाल्ड चौक और छतबीड़ लाइट के बीच पुलिस ने नाका लगाया हुआ था। इसी दौरान इनोवा कार को रुकने का इशारा किया तो चालक ने कार भागने की कोशिश की।

सुडोकू 6657 का हल

2	8	3	9	7	1	4	5	6
5	4	9	6	2	8	1	7	3
7	6	1	5	4	3	2	9	8
9	3	8	4	1	2	5	6	7
4	1	7	3	6	5	8	2	9
6	5	2	8	9	7	3	4	1
1	9	4	2	8	6	7	3	5
8	2	5	7	3	9	6	1	4
3	7	6	1	5	4	9	8	2

धामी ने पीएम मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम का 113वां संस्करण सुना

देहरादून, 25 अगस्त (देशबन्धु)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को इन्दिरानगर, देहरादून में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का 113 वां संस्करण सुना। मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्व छात्रों द्वारा शुरू किए गए एक कार्यक्रम की चर्चा की। साथ ही छात्रों की टीम के सदस्यों से वार्ता की। इस टीम के सदस्यों में से एक अल्मोड़ा, उत्तराखंड निवासी रक्षित भी हैं। रक्षित से वार्ता के दौरान प्रधानमंत्री ने अल्मोड़ा की प्रसिद्ध बाल मिठाई का जिक्र किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि बैडमिंटन खिलाडी लक्ष्य सेन हमेशा उनके लिए अल्मोडा की बाल मिठाई लाते हैं। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अपने संबोधन में कहा कि 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्पेस सेक्टर में उत्कृष्ट कार्य कर रहे अल्मोड़ा के रक्षित से वार्ता कर स्पेस संबंधित विभिन्न कार्यों की विस्तृत जानकारी ली।

अल्मोड़ा के रक्षित ने मोदी के कार्यक्रम के दौरान की बात

देहरादून, 25 अगस्त (देशबन्धु)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात के 113वें एपिसोड को संबोधित किया। इस दौरान प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस, विश्व संस्कृत दिवस, चंद्रयान 3, बच्चों के पोषण, 3 डी प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी समेत कई मुद्दों पर बात की। इसके अलावा पीएम मोदी ने उत्तराखंड के एक युवक से भी बात की। जिसमें पीएम मोदी ने स्पेस टेक्नोलॉजी यानी स्पेसटेक स्टार्ट-अप गैलेक्सआई पर सवाल पूछे। जिसका जवाब रक्षित ने दिए। बता दें कि पीएम मोदी ने अंतरिक्ष क्षेत्र में सुधार और स्पेसटेक स्टार्ट-अप गैलेक्सआई को लेकर बात की। जिसमें अल्मोड़ा के रक्षित के पीएम मोदी को इस टेक्नोलॉजी के फायदे बताए। सबसे पहले पीएम मोदी ने पूछा कि रक्षित आप उत्तराखंड में कहाँ से हैं? जिस पर रक्षित ने बताया कि वो अल्मोड़ा से है। जिसके जवाब में पीएम मोदी ने कहा कि बाल मिठाई वाले हैं। साथ ही कहा कि बैडमिंटन खिलाड़ी लक्ष्य सेन उनके लिए अक्सर बाल मिठाई भेजता और खिलाता रहता है। रक्षित ने पीएम मोदी को बताया कि तो हमारी यह टेक्नोलॉजी अंतरिक्ष से बादलों के आर-पार देख सकती है। खास बात ये है कि इससे रात में भी देख सकते हैं। जिससे रोजाना देश के किसी भी कोने के ऊपर से एक साफ तस्वीर खींच सकते हैं।

सरुताल को ट्रैक ऑफ द ईयर बनाने के लिए क्षेत्रीय लोगों ने जताया मुख्यमंत्री का आभार

देहरादून, 25 अगस्त (देशबन्धु)। राज्य सरकार द्वारा जनपद उत्तरकाशी के सर बडियार व सरनौल - सौत्तरी से सरूताल तक ट्रेक को ट्रेक ऑफ द ईयर घोषित किए जाने पर खुशी जताते हुए पुरोला विधानसभा से आए प्रतिनिधि मंडल ने रविवार को जी.टी.सी हेलीपैड में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से भेंट कर उनका आभार जताया। विधायक पुरोला श्री दुर्गेश्वर लाल ने मुख्यमंत्री का आभार

- **औली की तर्ज़ पर सुतड़ी बुग्याल को शीतकालीन क्रीड़ा स्थल बनाया जाए: चौहान**

व्यक्त करते हुए कहा कि सर-बडियार व सरनौल - सौत्तरी से सरूताल तक ट्रेक को ट्रेक ऑफ द ईयर घोषित किए जाने के बाद पुरोला क्षेत्र को नई पहचान मिलेगी। इससे क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा होंगे एवं ट्रैक मार्ग पर पर्यटकों एवं ट्रैक्टर्स की संख्या बढ़ेगी। ट्रेक ऑफ द ईयर घोषित होने से क्षेत्र में बुनियादी विकास सुविधाओं को भी विकसित किया जाएगा एवं ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन रुकेगा, जिससे क्षेत्र के लोग काफी उत्साहित हैं। बीजेपी प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर सिंह चौहान ने सीएम धामी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सीएम

धामी ने उत्तरकाशी और बड़कोट आगमन पर जो वादा वर्ष 2023 में किया था वो पूरा किया है और ये रँवाई के चौमुखी विकास के लिए मिल का पत्थर साबित होने वाला है इस कार्य से पूरे क्षेत्र में अपार उत्साह का माहोल है । उन्होंने सरनोल बड़ियार सुतड़ी सरुताल को ट्रैक ऑफ दि ईयर बनाने के लिए पुरोला बडीयार एवं यमुनाघाटी क्षेत्र के लोगों ने प्रदेश के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार व्यक्त किया। चौहान ने मुख्यमंत्री से नैसर्गिक सौंदर्य से परिपूर्ण सुतड़ी सरूताल को पर्यटन मानचित्र पर स्थान देने की माँग करते हुए सुतड़ी को औली की तर्ज़ पर शीतक़ालीन क्रीड़ा स्थल के रूप में विकसित करने के लिए भी अनुरोध किया। भाजपा जिला अध्यक्ष (उत्तरकाशी) सतेंद्र सिंह राणा ने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, उत्तरकाशी के विकास के लिए हमेशा अग्रसर रहते हैं। उत्तरकाशी जिले में ट्रेक ऑफ द ईयर घोषित होने से क्षेत्र के विकास को नई मजबूती मिलेगी। इससे उत्तरकाशी क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा एवं दूरस्थ क्षेत्र में सुविधाओं का विस्तार होगा। बड़ी संख्या में ट्रैकर्स के आने पर क्षेत्र के युवा होमस्टे एवं स्वरोजगार को अपना कर उत्तरकाशी के साथ ही राज्य की आर्थिकी को मजबूत करेगें। इस दौरान भाजपा प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर सिंह चौहान, धर्मवीर ज्याडा, अरविंद ज्याडा, कैलाश रावत, जगवीर सिंह रावत व चिरंजीव सेमवाल एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

मोदी पर अपने देश की जनता की कमाई लुटाने का आरोप : राजपूत

देहरादून, 25 अगस्त (देशबन्धु)। रविवार को पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता सुरेन्द्र राजपूत ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर अपने पूंजीपति साथियों पर देश की जनता की कमाई लुटाने का आरोप लगाते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने मित्रों के व्यवसाय को बचाने के लिए सेबी जैसी संस्थाओं का दुरूपयोग कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और उनके ,ए-1 दोस्त, अडानी ने मेगा अडानी घोटाले से खुद को बचाने के लिए हर संभव कोशिश की! अडानी मेगा घोटाले में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा संयुक्त संसदीय समिति जांच की मांग हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्टों ने किए गए खुलासे से कहीं आगे जाती है। अडानी समूह से संबंधित घोटाले और घपले राजनीतिक अर्थव्यवस्था के हर आयाम में फैले हुए हैं। उन्होंने कहा की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने परम मित्र के टैम्पों को बचाने के लिए सेबी का इस्तेमाल फ्यूल की तरह कर रहे हैं। इसी के साथ उन्होंने आरोप लगाया कि भारत के उपराष्ट्रपति ने हिंडनबर्ग के बारे में बात करके कांग्रेस पर हमारे बाजारों को अस्थिर करने का आरोप लगाया। क्या वह सुप्रीम कोर्ट पर हमारे बाजारों को अस्थिर करने का आरोप लगा रहे हैं? यह सुप्रीम कोर्ट ही है जिसने एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया और हिंडनबर्ग रिपोर्ट के बाद सेबी को 24 वित्तीय अनियमितताओं की जांच पूरी करने का निर्देश दिया साथी साथ ही प्रेस वर्ता में यहां भी बताया कि अडानी एंटरप्राइजेज एफपीओ में प्रमुख निवेशकों में एलआईसी (जिसने 299 करोड़ की बोली लगाई), स्टेट बैंक ऑफ इंडिया एम्प्लाइज पेंशन फंड (299 करोड़ की बोली लगाई) और एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस कंपनी (125 करोड़ की बोली लगाई) शामिल थे। एलआईसी और एसबीआई ने एफपीओ में इस तथ्य के बावजूद भाग लिया कि बाजार मूल्य निर्गम मूल्य से काफी नीचे गिर गया था और पहले से ही अडानी समूह की बड़ी हिस्सेदारी उनके पास थी। वही इस दौरान पत्रकार वार्ता में प्रदेश अध्यक्ष करन माहरा, प्रदेश कांग्रेस मीडिया प्रभारी राजीव महर्षि, प्रदेश उपाध्यक्ष सूर्यकान्त धस्माना, महामंत्री नवीन जोशी, प्रवक्ता डॉ. प्रतिमा सिंह, शीशपाल सिंह बिष्ट, सोशल मीडिया प्रभारी अमरजीत सिंह आदि उपस्थित थे।

मोदी अपने परम मित्र के टैम्पों को बचाने के लिए सेबी का इस्तेमाल फ्यूल की तरह कर रहे हैं : सुरेन्द्र राजपूत

भारतीय शिशुओं का अस्तित्व बन रहा चिंताजनक : विशेषज्ञ

नौनिहालों के स्वास्थ्य संकट पर चर्चा करने के लिए देवभूमि में एकत्रित हुए दुनिया भर के विशेषज्ञ

देहरादून, 25 अगस्त (देशबन्धु)। भारतीय शिशुओं का अस्तित्व एक गंभीर चिंता बन रहा है। जैसे-जैसे भारत तेज विकास दर के साथ दुनिया के विकसित देशों की कतार में आगे बढ़ रहा है। वैसे ही भारत के बुनियादी स्वास्थ्य मापदंडों में प्रसव कालीन मृत्यु दर, स्थिर जन्म दर जैसी चुनौतियों की भूमिका काफी अहम है। देश दुनिया के नामचीन डॉक्टरों ने यह चर्चा उत्तराखंड की राजधानी देहरादून के हयात रीजेंसी रिजॉर्ट में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में कही। दिल्ली के इंद्रप्रस्थ अपोलो हॉस्पिटल और फेटल मेडिसिन फाउंडेशन इंडिया (एफएमएफआई) ने मिलकर इस सम्मेलन का आयोजन किया है।

शुक्रवार को सम्मेलन के पहले दिन स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने कहा कि भ्रूण चिकित्सा से लेकर मृत

- **गर्भावस्था से लेकर प्री मैच्योर शिशु, पांच साल से कम आयु वाले बच्चों की मौत जैसे गंभीर मुद्दों पर शुरू हुई चर्चा**

व समय से पहले शिशु जन्म और उच्च जोखिम वाले गर्भधारण और भ्रूण में आनुवंशिक दोषों से निपटने का विज्ञान एवं कला के बारे में हमारे रोगी और डॉक्टर बिरादरी के बीच जागरूकता की कमी है।

इस तीन दिवसीय सम्मेलन में अलग अलग विषयों पर व्याख्यान, भ्रूण हस्तक्षेप और सर्जरी के लाइव प्रदर्शन के साथ साथ लगभग 250 प्रसूति विशेषज्ञ और रेडियोलॉजिस्ट के व्यावहारिक प्रशिक्षण का आयोजन होगा। साथ ही देश के नौनिहालों के स्वास्थ्य संकट को लेकर अलग अलग सत्र में चर्चाएं भी होगीं। इस

सम्मेलन में स्पेन, बेल्जियम, यूके और इजराइल के नामचीन डॉक्टर भी शामिल हुए हैं। इस अवसर पर अपोलो अस्पताल के समूह चिकित्सा निदेशक और वरिष्ठ बाल गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट डॉ. अनुपम सिब्बल ने भारत में स्वास्थ्य सेवा की उन्नति में भूमिका पर जोर देते हुए कहा कि इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल हमेशा चिकित्सा देखभाल की सीमाओं खासकर भ्रूण चिकित्सा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। आज हम इस सम्मेलन में जिन प्रगतियों पर चर्चा कर रहे हैं, वे उच्च जोखिम वाली गर्भधारण को प्रबंधित करने के साथ साथ जन्मजात हृदय दोषों का शीघ्र पता लगाने की हमारी क्षमता में एक बड़ी छलांग का प्रतिनिधित्व कर रही है। इन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करके हम न केवल व्यक्तिगत रोगी परिणामों में सुधार कर रहे हैं, बल्कि पूरे भारत में शिशु मृत्यु दर को कम करने के व्यापक लक्ष्य की दिशा में सहयोग कर रहे हैं। ऐसे आयोजन से हमारा लक्ष्य अपने ज्ञान को साझा करना और देश भर में प्रसवपूर्व देखभाल के मानक को ऊपर उठाना है जिससे आखिर में ज्यादा से ज्यादा शिशुओं को उनके जीवन में एक स्वस्थ शुरुआत मिल सके। इस बीच फीटल मेडिसिन फाउंडेशन इंडिया (एफएमएफआई) की संस्थापक अध्यक्ष और इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल में भ्रूण निदान व थेरेपी विभाग की प्रमुख डॉ. अनीता कौल ने कहा कि पिछले कुछ सालों में हमने यह देखा है कि एक से अधिक गर्भधारण के मामलों में काफी बढ़ोत्तरी हो रही है। ऐसे मामलों को पूरे प्रोटोकॉल और दिशानिर्देशों के तहत प्रबंधित नहीं करते हैं तो उसके प्रतिकूल परिणाम भी देखने को मिलते हैं। बीते एक दशक की बात करें तो कई गुना तेजी से जुड़वां गर्भधारण के मामले बढ़े हैं जो अक्सर आईवीएफ, एआरटी और उन्नत मातृ आयु के कारण होता है। गर्भाशय में भ्रूण की मृत्यु या फिर समय से पहले शिशु के जन्म से जुड़े मामलों को कम करने के लिए हमने स्वास्थ्य पेशेवरों को नई तकनीकों का प्रशिक्षण देने का पहला प्रयास शुरू किया है।

प्रादेशिकी

बुलंदशहर में प्रॉपर्टी डीलर की गोली मारकर हत्या

बुलंदशहर, 25 अगस्त (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश में बुलंदशहर में शनिवार सुबह मॉर्निंग वॉक के लिए निकले एक प्रॉपर्टी डीलर की अज्ञात हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि जनपद बुलंदशहर के सिकंदराबाद स्थित इदरीस कॉलोनी निवासी यामीन नामक एक प्रॉपर्टी डीलर रविवार को प्रात: 6:00 बजे मॉर्निंग वॉक के लिए घर से निकला था। इसी समय सशस्त्र अज्ञात हमलावरों ने उसे गोली मार दी। घटना की सूचना पर परिजन घायल को निजी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने यमन को अमृत घोषित कर दिया। पुलिस के आला अधिकारियों और फॉरेंसिक टीम ने मौका मुआयना किया है लेकिन फिलहाल हत्या के कारण का अभी तक पता नहीं चला है। पुलिस जांच में जुटी है।

हर जेल, पुलिस लाइन, थाने में भव्यता व भक्तिभाव से मने जन्माष्टमी : योगी

लखनऊ, 25 अगस्त (देशबन्धु)। जन्माष्टमी के अवसर पर पूरे प्रदेश में घरों और मंदिरों के साथ-साथ पुलिस थानों, कारागारों और पुलिस लाइन में भी भगवान श्रीकृष्ण के जन्म का उत्सव पूरे हर्षोल्लास और भक्तिभाव से मनाया

■ मुख्यमंत्री ने सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद रखने के दिए आदेश

जाएगा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जन्माष्टमी पर्व से पूर्व सभी रिजर्व पुलिस लाइंस ,पुलिस थानों एवं कारागारों में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पावन पर्व परंपरागत भक्तिभाव से मनाए जाने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही उन्होंने प्रदेश भर में कृष्ण लीला, झांकी और शोभायात्रा के आयोजनों के दौरान वहां सुरक्षा, सफाई व अन्य व्यवस्थाएं सुचारू रूप से करने के आदेश दिए हैं।

इसके अतिरिक्त भीड़भाड़ वाले स्थानों पर पर्याप्त पुलिस बल के प्रबंध करने के भी निर्देश दिए हैं। सीएम के निर्देशों का अनुपालन करते हुए उत्तर प्रदेश कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवा के महानिदेशक पीवी रामाशास्त्री ने

मथुरा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर देश-विदेश से लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं : योगी आदित्यनाथ

प्रदेश के समस्त कारागारों में श्री कृष्ण जन्माष्टमी को परंपरागत रूप से मनाए जाने के निर्देश जारी कर दिया। सीएम योगी ने सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद रखने का आदेश दिया है। कहा है कि भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली मथुरा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़ी श्रद्धा एवं धूम-धाम से मनाया जाता है, जिसमें सम्मिलित होने के लिए देश-विदेश से लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। मथुरा नगर स्थित श्रीकृष्ण जन्मभूमि/शाही ईदगाह मस्जिद स्थल अत्यन्त संवेदनशील है। यह स्थल आईएसआई व विभिन्न आतंकवादी संगठनों के निशाने पर भी है। इसको देखते हुए भी विशेष सतर्कता एवं समुचित पुलिस प्रबंध किए जाएं। योगी आदित्यनाथ ने पूजा अर्चना, शोभायात्रा के दौरान किसी भी तरह के विवाद की स्थिति न बने, इसको लेकर भी निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि विवादित स्थलों पर झांकियों को सजाने, शोभायात्रा के मार्ग में विवाद एवं नए मार्गों को लेकर अक्सर विवाद देखने को मिलते हैं। इसके साथ ही, परंपरा से हटकर कार्यक्रमों के आयोजन तथा गैर परंपरागत जुलूस/शोभायात्रा निकाले जाने, ध्वनि विस्तारक यंत्रों के प्रयोग का भी उपयोग किया जाता है।

सीएम ने निर्देश दिया कि समस्त जनपदों में गश्त चेकिंग के लिए पुलिस पार्टी नियमित रूप से निकाली जाए। प्रात: गश्त चेकिंग पार्टी (पोस्टर पार्टी) द्वारा सघन रूप से चेकिंग करते हुए सुनिश्चित किया जाए कि कहीं पर कोई आपत्तिजनक पोस्टर न लगा हो।

पुख्ता यातायात व्यवस्था करने के भी दिए निर्देश

मुख्यमंत्री योगी ने पुख्ता यातायात व्यवस्था करने का निर्देश भी दिया है। इसके मुताबिक समस्त जनपदों में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से संबंधित समस्त आयोजन, लीला स्थल, पंडाल, मंदिर एवं शोभा यात्राओं को सूचीबद्ध कर योजनाबद्ध पुलिस की व्यवस्था की जाए। साथ ही समस्त आयोजनों में आने वाले श्रद्धालुओं की संभावित संख्या का आकलन करते हुए सुदृढ़ सुरक्षा एवं यातायात प्रबंधन सुनिश्चित किया जाए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि विगत वर्षों में या इस वर्ष अभी तक श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व से संबंधित जिन-जिन स्थानों पर किसी प्रकार का विवाद सामने आया हो, वहां पुलिस एवं राजस्व विभाग के गजटेड अधिकारियों द्वारा अभी से स्थिति का अध्ययन कर लिया जाए एवं विवाद को सुलझाने तथा संवेदनशीलता को दूर करने के लिए कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

पीएसी के जवान ने ट्रेन के आगे कूदकर की आत्महत्या

झांसी,25 अगस्त (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश में झांसी के मोंठ थाना क्षेत्र में पीएसी के एक जवान ने ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली है। प्राप्त जानकारी के अनुसार नोएडा मेट्रो में तैनात पीएसी का जवान पत्नी से विवाद के बाद घर से निकल गया और कुछ ही देर बाद उसका शव रेलवे ट्रैक पर मिलने की खबर आई। यह पीएसी की एसएसएस विंग में कार्यरत था जो नोएडा मेट्रो में सेवाएं देती है। इस संबंध में रविवार को जानकारी देते हुए क्षेत्राधिकारी (सीओ) मोंठ हरिमोहन सिंह ने बताया कि रेलवे अधीक्षक मोंठ ने शनिवार देर रात थाना मोंठ को यह जानकारी दी कि रेलवे ट्रैक पर एक शव पड़ा है। इसके बाद पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पहचान करायी गई। मृतक का नाम अवनींद्र है जो नोएडा में तैनात है। मृतक की पत्नी थाना मोंठ में तैनात है और शनिवार रात दोनों के बीच विवाद हुआ था और गुस्से में यह घर से निकल गया था। घर वाले अभी इसकी तलाश में ही थे कि उसका शव मिलने की सूचना आ गई।

वेश सज्जा प्रतियोगिता व हांडी प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

मवाना, 25 अगस्त (देशबन्धु)। सरस्वती शिक्षा केंद्र पिलोना में श्री कृष्ण जन्माष्टमी से पहले छात्राएं कृष्ण राधा रंग में रंगी दिखाई दी छात्राओं ने जन्माष्टमी का त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाया छात्राओं के मध्य दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें काफी सारे छात्रों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया इसमें हांडी प्रतियोगिता एवं वेज सजा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वेज सज्जा प्रतियोगिता में सभी बच्चों ने अच्छा प्रदर्शन किया हमारे सभी अध्यापकों ने हमारे सभी बच्चों को आशीर्वाद दिया और आगे भी ऐसे कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया हमारे प्रोग्राम में भाग लेने वाले बच्चे जीविका, अपेक्षा, अथर्व शर्मा, अवनी अंशिका सिया, सृष्टि, रावी तोमर इंसा, परम खुशी, तान्या आयुषी टिम्सी आदि ने सराहनीय कार्य किया। अध्यापक अंकित शर्मा, प्रियंका मैडम, वाणी मैडम, मोनिका मैडम, राजीव सर, अंकित सर के साथ प्रधानाचार्य अंकुश शर्मा ने सभी के कार्य को सराहआ और बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रधानाचार्य ने विस्तार से बच्चों को कृष्ण जन्माष्टमी क्यों मनाते हैं इस पर प्रकाश डाला। अंत में सूक्ष्म जल पान की व्यवस्था भी स्कूल में की गई।

अनिल शर्मा ने बच्चों को योग करने दिए टिप्स

विशेष आमंत्रित आए वरिस्ठ पत्रकार अनिल शर्मा ने बच्चों को योग करने के बारे में बताया। उन्होंने योग में विशेष तौर पर लोम-विलोम व कपालभाति के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि जो बच्चे प्रणायाम प्रतिदिन करेगे उन बच्चों की मेमोरी यानि याददाश बढ़ जाएगी और ज्ञानवर्धन में सहायता मिलेगी। इससे आने वाले समय में अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

सार संक्षेप

देश में सीएस प्रोफेशनल परीक्षा में भूमिका सिंह को प्रथम रैंक

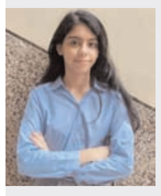

मेरठ। शोभित विश्वविद्यालय की होनहार छात्रा भूमिका सिंह ने एक बार फिर से अपनी अद्वितीय प्रतिभा का परिचय देते हुए सीएस प्रोफेशनल जून 2024 की परीक्षा में ऑल इंडिया रैंक 1 प्राप्त की है। इससे पहले भी उन्होंने सीएस एग्जीक्यूटिव जून 2023 में ऑल इंडिया रैंक वन हासिल कर अपनी मेधा का परचम लहराया था। वर्तमान में शोभित विश्वविद्यालय, मेरठ में बीकॉम एलएलबी तृतीय वर्ष की छात्रा भूमिका ने इस शानदार उपलब्धि से न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया है। भूमिका के पिता, लेफ्टिनेंट (डॉक्टर) कुलदीप कुमार, जो कि शोभित विश्वविद्यालय, मेरठ में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं, के मार्गदर्शन और प्रेरणा का भी इस सफलता में महत्वपूर्ण योगदान है। भूमिका की इस ऐतिहासिक सफलता पर शोभित विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, कुंवर शेखर विजेंद्र ने उन्हें हार्दिक बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

सुभारती विवि में दीक्षांत समारोह चार सितम्बर को

मेरठ। स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय में आगामी 4 सितम्बर को 10 वें दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन होने जा रहा है। इसके लिये विश्वविद्यालय में वृहद स्तर पर तैयारियां चल रही है। शिक्षकों से लेकर विद्यार्थियों में उत्साह देखने को मिल रहा है। सुभारती विश्वविद्यालय के कुलपति सभागार में दीक्षांत समारोह समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक सुभारती विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ.जी.के.थपलियाल की अध्यक्षता में आयोजित हुई। जिसमें कुलसचिव एम.याकूब एवं दीक्षांत समारोह के मुख्य समन्वयक इंजीनियरिंग कॉलेज के डीन डॉ. मनोज कपिल ने कार्यक्रम की सम्पूर्ण रूपरेखा के बारे में जानकारी दी। कुलपति मेजर जनरल डॉ.जी.के.थपलियाल ने कहा कि दीक्षांत समारोह विश्वविद्यालय का पर्व होने के साथ विद्यार्थी जीवन का स्वर्णिम पल होता है। उन्होंने कहा कि सुभारती विश्वविद्यालय दीक्षांत समारोह को विशेष बनाने हेतु भव्य स्तर पर कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है।

छात्रा से अश्लील हरकत करने के आरोप में प्रधानाध्यापक निलंबित

प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ जिले में स्कूल में छात्रा के साथ अश्लील हरकत करने के आरोप में प्रधानाध्यापक को निलंबित कर दिया गया है। थाना क्षेत्र जेठवारा के ग्रामीण विद्यालय की छह साल की छात्रा की मां ने शनिवार को थाने में तहरीर देकर स्कूल के प्रधानाध्यापक अनिल कुमार शुक्ला पर आरोप लगाया था कि रविवार दोपहर में उन्होंने छात्रा को बुलाकर अश्लील हरकत की है, जानकारी मिलते ही आक्रोषित ग्रामीणों ने विद्यालय का घेराव किया था और पीड़ित छात्रा को लेकर विद्यालय पहुंच गए थे, आरोपी प्रधानाध्यापक फरार हो गया है। बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेंद्र सिंह ने रविवार को बताया कि आरोपी प्रधानाध्यापक अनिल कुमार शुक्ला को निलंबित कर दिया गया है और उसके खिलाफ लाल गंज के खंड शिक्षा अधिकारी को जांच सौपी गयी है। थानाध्यक्ष जेठवारा ने बताया है कि इस मामले में तहरीर मिली है, मामले की जांच की जा रही है।

शोभित विश्वविद्यालय में कार्यशाला का हुआ आयोजन

मेरठ, 25 अगस्त (देशबन्धु)। शोभित इंस्टीट्यूट ऑफइंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के कंप्यूटर क्लब द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यशाला में माइक्रोसॉफ्ट एज्योर की शक्ति को अनलॉक करने का अवसर मिला। इस कार्यशाला का आयोजन शनिवार, 24 अगस्त को शोभित विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में किया गया। इस कार्यशाला के आयोजक कंप्यूटर क्लब के इंचार्ज राजेश पांडेय थे। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य छात्रों और पेशेवरों को माइक्रोसॉफ्ट एज्योर के मूलभूत सिद्धांतों और इसके उपयोग के लाभों से अवगत कराना था। एज्योर, माइक्रोसॉफ्ट का क्लाउड कंप्यूटिंग प्लेटफॉर्म, आज के डिजिटल युग में अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है। यह कार्यशाला उन लोगों के लिए एक सुनहरा अवसर थी जो अपने क्लाउड कौशल को अगले स्तर पर ले जाना चाहते हैं। इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता मधुर अग्रवाल थे, जो डेलॉइट इंडिया में एनालिस्ट के पद पर कार्यरत हैं। मधुर अग्रवाल ने अपने अनुभव और ज्ञान को साझा करते हुए बताया कि कैसे एज्योर का उपयोग करके विभिन्न क्लाउड प्रोजेक्ट्स को सफलतापूर्वक प्रबंधित किया जा सकता है। विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला। इस कार्यशाला में कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं जैसे की माइक्रोसॉफ्ट एज्योर के मूलभूत सिद्धांत, एज्योर वर्चुअल मशीन बनाना और प्रबंधित करना, एज्योर के उपयोग के लाभ आदि पर चर्चा की गई ।

विनायक विद्यापीठ में जॉब फेयर 27 अगस्त को

मेरठ, 25 अगस्त (देशबन्धु)। विनायक विद्यापीठ मोदीपुरम में एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। जिसमें 27 अगस्त को होने वाले जॉब फेयर उन्नति-2024 के बारे में बताया गया। इस दौरान विनायक विद्यापीठ की प्राचार्या डॉ. अनुप्रिता शर्मा, निदेशक इंजी. विकास कुमार, ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट ऑफिसर प्रवीन शर्मा एवं क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय, मेरठ के सहायक निदेशक शशि भूषण उपाध्याय उपस्थित रहे। इस प्रेस वार्ता के दौरान डॉ.अनुप्रिता शर्मा बताया कि विनायक विद्यापीठ एवं क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय मेरठ संयुक्त रूप से एक जॉब फेयर उन्नति-2024 का आयोजन 27 अगस्त को करने जा रहे हैं जिसमे 2 हजार से ज्यादा रिक्तियों के साथ 25 से ज्यादा नामचीन कंपनियां आएंगी। संस्थान के निदेशक इंजी विकास कुमार ने बताया कि इस रोजगार मेले करीब 3000 से ज्यादा प्रतिभागियों की आने की संभावना है उन्होंने बताया कि कोई भी अभ्यर्थी इस जॉब फेयर में प्रतिभाग कर सकता है उसके लिए अभ्यर्थी को इस लिंक roj-gaarsangam-up-gov-in पर अपना पंजीकरण कराना अति आवश्यक होगा, उन्होंने बताया यदि किसी कारण से इस लिंक पर पंजीकरण नहीं होता तो भी अभ्यर्थी इस जॉब फेयर में प्रतिभाग कर सकता है। संस्थान के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट ऑफिसर प्रवीन शर्मा ने बताया कि अभ्यर्थी को अपने साथ 3 रिज्यूमे एवं अपने सभी शैक्षणिक दस्तावेजों की फोटोकॉपी, जिसमे आधार कार्ड अति आवश्यक है, के साथ विनायक विद्यापीठ, मोदीपुरम पहुचे, उन्होंने बताया कि इसके अलावा अगर कोई भी अभ्यर्थी इस जॉब फेयर से संबंधित किसी भी प्रकार के जानकारी हासिल करना चाहे तो हेल्पलाइन नंबर 91 8630286566 एवं 91 9997369496 पर संपर्क कर सकता हैं। इस जॉब फेयर उन्नति-2024 के द्वारा निजी क्षेत्र की नामचीन कंपनियों में पूरी तरह निशुल्क प्रक्रिया के माध्यम से चयन कराया जाएगा। रोजगार विभाग के सहायक निदेशक शशि भूषण उपाध्याय ने बताया कि यह जॉब फेयर उन सभी युवाओं के लिए लगाया गया है ।

■ दो हजार से ज्यादा रिक्तियों के साथ शिरकत करेंगी 25 नामचीन कंपनियां

■ 10 हजार से 35 हजार तक के वेतनमान पर होगा चयन

■ यूपी सरकार के लिंक पर कराएं अपना पंजीकरण : उपाध्याय

यह कंपनियां करेंगी प्रतिभागिता

इस जॉब फेयर में आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी बैंक, भारत फाइनेंस एक्सुलेशन लिमिटिड, एस बी आई लाइफ इन्श्योरेंस, ग्रासरूटस सॉल्यूशन, पीवीआर ईनोएक्स, वेट्टल बीपीओ सॉल्यूशन, शिवशक्ति ऑटोमोबाईल, केकेसी एंटरप्राइजेज, एसजे टेलीकॉम, एमबीशंस सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, सत्या माइक्रो कैपिटल लिमिटेड, प्रणव विकास ग्रुप, पुखराज हेल्थकेयर है। ये कंपनी 10 हजार से 35 हजार तक के वेतनमान पर अभ्यर्थी को सेल्स ऑफिसर, मैनेजर, एग्जीक्यूटिव, एडवाइजर, टेली कॉलर, अकाउंटेंट, कॉर्डिनेटर, विकास अधिकारी, सुपरवाइजर, मशीन ऑपरेटर जैसे रोजगार के अवसर प्रदान करेगी।

सपा कार्यकर्ता अपने-अपने क्षेत्र में करें वोट बढ़ाने का काम : चंद्रपाल

फर्रुखाबाद, 25 अगस्त (देशबन्धु)। आवास विकास स्थित समाजवादी पार्टी कार्यालय पर एक बड़ी बैठक का आयोजन जिला अध्यक्ष चंद्रपाल सिंह यादव की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम सामाजिक न्याय के पुरोधा बीपी मंडल की जयंती मनाई गई जिसमें उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें सपाइयों ने श्रद्धांजलि दी। इसके उपरांत जिला महासचिव इलियास मंसूरी ने बैठक का एजेंडा पढ़ कर सुनाया। जिला अध्यक्ष चंद्रपाल सिंह यादव की अध्यक्षता में हुई बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि जो भी नजन पार्टी में महत्वपूर्ण पद चाहते हैं उन्हें आज से ही पार्टी के सभी कार्यक्रमों में लगना पड़ेगा तभी पार्टी उन्हें उन पर कोई पद देने पर विचार करेगी। इसके साथ ही कहा कि जो भी आने वाले पंचायत चुनाव एवं विधानसभा चुनाव में आवेदन के इच्छुक हैं उन्हें अपने क्षेत्र में वोट बढ़ाने का कार्य प्रमुखता से करना है, पार्टी भी उनके नामों पर वरीयता देगी। उन्हें अपने-अपने क्षेत्र में वोट बढ़ाने का काम सक्रियता से करना है। जिला अध्यक्ष चंद्रपाल सिंह यादव ने कहा की जो लोग पार्टी में पद चाहते हैं वह पार्टी में कार्य मेहनत और लग्न के साथ करें तभी आने वाले समय में पार्टी उन्हें पद देने पर विचार करेगी। इसके साथ ही कहा कि वोट बढ़ाने का कार्य प्रारंभ हो चुका है जितने भी आने वाले चुनाव में टिकट के लिए आवेदन करता होंगे यह देखा जाएगा की पार्टी के लिए मेहनत और लगन के साथ किसने कार्य किया और किसने कितने वोट बढ़वाए उसी के अनुरूप उन्हें टिकट देने पर विचार किया जाएगा। इसके जिला अध्यक्ष चंद्रपाल सिंह यादव ने कहा कि जितने भी जनपद स्तर पर प्रभारी बनाए गए थे चाहे वह फ्रंटल संगठन के हों या फिर विधान सभा के प्रभारी हो सभी को भंग किया जाता है।

■ समाजवादी पार्टी की बैठक में लिया निर्णय

तक्षशिला पब्लिक स्कूल में जन्माष्टमी उत्सव आयोजित

मेरठ, 25 अगस्त (देशबन्धु)। तक्षशिला पब्लिक स्कूल कंकरखेड़ा मे शनिवार को श्री कृष्ण जन्माष्टमी बड़ी धूमधाम से मनाई गई। बच्चों द्वारा रंगारंग प्रस्तुति के साथ-साथ रचनात्मक तथा कलात्मक गतिविधियों

के द्वारा कृष्ण की बाल लीला तथा चरित्र को दर्शाया गया जिसके अन्तर्गत बच्चों ने कृष्ण और राधा का स्वरूप धारण करते हुए सबका मन मोह लिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में बच्चों ने विभिन्न प्रस्तुतियां दी जिनमें मुख्य रूप से यशोमती मैया से बोले, बड़ी दे भई नंद लाला, आदि गीतों पर नृत्य तथा नृत्य नाटिका को मनमोहक अंदाज में प्रस्तुत किया। विद्यालय के चेयरमैन डा. ओमपाल सिंह व प्रधानाचार्य डा. प्रवीन कुमार पथरा ने कृष्ण जनमोत्सव पर्व की सभी को बधाई देते हुए बच्चों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों की सराहना की। अपनी संस्कृति और सभ्यता को इसी प्रकार जीवित रखने के लिए प्रेरित किया।

एस. आर. इंटरनेशनल स्कूल में मनाया गया श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

मेरठ, 25 अगस्त (देशबन्धु)। किला रोड़ स्थित एस. आर. इंटरनेशनल स्कूल में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों के लिए अनेक गतिविधियां आयोजित की गई। मटकी डेकोरेशन, मोरपंख एवं बांसुरी निर्माण जैसी अनेक मनोरंजक एवं स्चनात्मक गतिविधियों में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। छात्र राधा-कृष्ण तथा गोप-गोपी की वेशभूषा में तैयार होकर आकर्षण का केंद्र बने हुए थे। इस अवसर पर विद्यालय के निदेशक महोदय डॉ. स्वतंल चौहान प्रधानाचार्या श्वेता तोमर संचालिका सरिता शर्मा सहित सभी शिक्षक गण उपस्थित थे। प्रधानाचार्या ने सभी को जन्माष्टमी की बधाई दी। निदेशक महोदय ने छात्रों को संबोधित करते हुए उन्हें श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेने की सीख दी। जिस प्रकार श्रीकृष्ण व्यक्ति के कर्मों को सर्वोपरि रखने का ज्ञान देते थे। हमें भी अपने कर्म करते रहना चाहिए। हमें अपने जीवन में मित्रता, प्रेम, सद्भावना जैसे जीवन मूल्यों को अपनाना चाहिए। नन्हें बच्चों ने राधा कृष्ण बनकर श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का प्रदर्शन कर सभी का मन मोह लिया। बच्चों ने राधा कृष्ण के गीतों पर सुंदर नृत्य प्रस्तुति दी। कार्यक्रम को सफल बनाने में शिक्षिका अनु सिंद, जूबी अली, रीतू कश्यप एवं रेनू महाजन का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

खून देकर दूसरों के घर को बनाने वालों की गवाह बनेगी सरयू

■ ओम प्रकाश सिंह

अयोध्या, 25 अगस्त (देशबन्धु)। राम मंदिर के उत्तर दिशा में कलकल निनाद कर बह रही पतित पावनी सरयू रामनगरी के बनते को बिगड़ते स्वरूप को आदिकाल से देखती चली आ रही है। जिसकी गोद में रामलला खेले कूदे, नब्बे का दशक उसी मोक्षदायिनी सरयू पर खून से पानी लाल होने का इल्जाम दे गया था। आगामी इक्कीस सितंबर को सरयू फिर गवाह बनेगी, अयोध्या में पूरे भारतवर्ष से खून देने वालों के जमावड़े की। इस बार खून बहेगा नहीं बल्कि संचित किया जाएगा, उनके लिए जिनको खून की जरूरत है। एक फिल्म का डायलॉग था कि एक चुटकी सिंदूर की कीमत तुम क्या जानो रमेश बाबू। क्या दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं। एक वह जो घर बनाते हैं और दूसरे वह जो घर को बनाते हैं। तुम उसी दूसरी किस्म के हो रमेश बाबू। रील लाइफ का यह दृश्य रीयल लाइफ में साकार होने जा रहा है। दूसरों के घर को बनाने वाले रमेश बाबू जैसे किरदार टाइप के सैकड़ो रक्तदाता रामनगरी के रक्तदान महोत्सव में आ रहे हैं। इन रक्तवीरों को सम्मानित भी किया जाएगा। अयोध्या, लखनऊ के सरकारी ब्लड सेवाओं का महकमा भी जुटेगा। अयोध्या के इस दो दिवसीय राष्ट्रीय रक्तदान महोत्सव के मुख्य अतिथि केरल के पूर्व राज्यपाल निखिल कुमार होंगे। एक छत के नीचे देश के सभी राज्यों व उत्तर प्रदेश के सभी जिलों के रक्तवीर ब्लड डोनेट करेंगे और इस मौके पर रक्तदान के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए देश की 201 संस्थाओं को राष्ट्रीय सेवा रत्न सम्मान से सम्मानित भी किया जाएगा। सिंगरा मऊ स्टेट जौनपुर की महारानी व प्रख्यात समाजसेविका डॉ. अंजू सिंह के संरक्षकत्व में यह समारोह आयोजित होगा। राम कृष्ण सेवा फाउंडेशन व मेजर ध्यान चंद खेल उत्थान समिति के सयुंक्त तत्वावधान में होने वाले इस महोत्सव में विशिष्ट अतिथि के रूप में ओलम्पिक में पदक दिलाने वाले भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान अशोक ध्यान चंद उपस्थित रहेंगे। विश्व की पांचवी अर्थव्यवस्था बनने का दावा करने वाला भारत देश स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में अत्यंत पिछड़ा है। देश में आज भी खून के अभाव में प्रतिदिन हजारों लोगों की मौत होती है। खून देने के नाम पर स्वस्थ लोग तमाम तरह के बहाने बनाते हैं। ऐसे बहानेबाजों को राह दिखाने के लिए महोत्सव में पांच दिव्यांग भी रक्तदान करेंगे।

रक्तदान के क्षेत्र में जागरूकता लाने के उद्देश्य से यह महोत्सव किया जा रहा है। जिसमें देश के 28 राज्य व उत्तर प्रदेश के सभी 75 जिले के प्रतिनिधि हिस्सा लेंगे।

■ रक्तदान में विशेष योगदान के लिए देश की 201 संस्थाएं नवाजी जाएंगी राष्ट्रीय सेवा रत्न सम्मान से

■ इक्कीस सितंबर को आयोजित रक्तदान महोत्सव के मुख्य अतिथि होंगे केरल के पूर्व राज्यपाल निखिल कुमार

रक्तदान महोत्सव का न्योता साधारण डाक से भी

भारतीय डाक से हमें आत्मिक लगाव था। डाकिये परिवार के सदस्य के रूप में होते थे, जिनसे हमारी सुख-दुःख के तार जुड़े होते थे। तकनीकी ज्ञान के विस्तार ने जिंदगी की रफ्तार को तेज तो कर दिया है लेकिन सुकून छीन लिया है। अब स्थिति ये आ चुकी है कि आज के बच्चे चिट्ठी, पोस्टकार्ड, अंतर देशीय पत्र के साथ डाकघर और डाकिये से अनभिज्ञ हैं। दार्शनिक अरुण प्रकाश डाक विभाग की पत्र पेटी को लिखित भावों की पेटी कहते हैं। जिसने मनौती मानकर चिट्ठियां भेजी हैं। और जवाबी चिट्ठी पाने की लालसा में परती में उगे कुश में गांठे लगाई हैं। वे जानते हैं कि पत्रों का संवाद कितना प्रभावी होता था। खतो किताबत पर वह कहते हैं कि ले रहा है जन्म मुझमें यक्ष कोई, फिर तुम्हे संदेश भेजवाता हुआ। इसी भाव को लोगों तक पहुंचाने के लिए रक्तदान महोत्सव का निमंत्रण पोस्ट कार्ड से भी भेजा रहा है।

वेश सज्जा प्रतियोगिता में मानसी-तबस्सुम रही प्रथम

मवाना, 25 अगस्त (देशबन्धु)। आर्य कन्या इंटर कॉलेज मवाना में श्री कृष्ण जन्माष्टमी से पहले छात्राएं कृष्ण -राधा रंग में रंगी दिखाई दी। छात्राओं ने जन्माष्टमी का महोत्सव धूमधाम से मनाया। छात्राओं के मध्य दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कृष्ण- राधा की वेश सज्जा और कृष्ण राधा से संबंधित नृत्य। वेश सज्जा प्रतियोगिता में मानसी-तबस्सुम ने प्रथम, नवीं की माहेनूर और वंशिका ने द्वितीय, कक्षा 11 की वसु-खुशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। नृत्य प्रतियोगिता में वंशिका- महिनूर प्रथम, कक्षा 10 की मानसी -तबस्सुम और कक्षा 11 की आरती खुशी द्वितीय, कक्षा 8 की वंशिका-गुनगुन और कक्षा 10 की रिया नैना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

दुनिया रंग-बिरंगी

देशबन्धु | नई दिल्ली, सोमवार, 26 अगस्त, 2024, डाक पंजीयन संख्या :- DL (ND)-11/6176/2015-16-17

बैकग्राउंड में रफी का गाना, माथे पर दुपट्टा और 'साधना हेयरकट', बेटी देवी के रेट्रो लुक पर मां बिपाशा हुई फिदा

मुंबई। बॉलीवुड एक्ट्रेस बिपाशा बसु अपनी बेटी देवी के नए हेयरकट से बेहद खुश हैं। उन्होंने दिग्गज एक्ट्रेस साधना से प्रेरित होकर अपनी बेटी को भी उनके जैसा हेयर लुक देने की कोशिश की है। बिपाशा ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर अपनी बेटी का एक वीडियो शेयर किया है। देवी का ये क्यूट लुक बिपाशा के फैंस को खूब पसंद आया। देवी रेट्रो लुक में हैं और साधना हेयरकट को फ्लॉन्ट करती नजर आ रही हैं। देवी को देखकर 1960 और 1970 के दशक की याद आ गई, जब ये लुक बेहद लोकप्रिय था। वीडियो के बैकग्राउंड में 1960 की फिल्म लव इन शिमला से मोहम्मद रफी का गाना 'गाल गुलाबी किसके हैं' सुनाई दे रहा था, जिसने इस पोस्ट को और खास बना दिया।

सेहत का खजाना है लहसुन

खाने से पहले खाएं और पाएं चमत्कारिक परिणाम

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। हमारे किचन में कई ऐसे सुपरफूड्स होते हैं, जो दवाइयों की जरूरत को कम कर सकते हैं और लहसुन इनमें से एक है। यह केवल खाने को स्वादिष्ट नहीं बनाता, बल्कि इसके स्वास्थ्य लाभ भी बहुत हैं। रोजाना सुबह लंच से पहले लहसुन की 2-3 कलियां चबाने से आपकी सेहत को कई बेहतरीन फायदे मिल सकते हैं।

लहसुन में एलिसिन नामक सल्फर युक्त फाइटोकेमिकल होता है, जो बीमारियों से बचाव करता है और सूजन को कम करने में सहायक है। यह स्किन के लिए भी लाभकारी है, क्योंकि यह मुंहासे पैदा करने वाले बैक्टीरिया को नष्ट करता है और स्किन को साफ करता है। इसके एंटीऑक्सीडेंट गुण त्वचा को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करते हैं।

हरदोई के शतायु आयुर्वेदा एवं पंचकर्म केंद्र चलाने वाले डाक्टर अमित कुमार बताते हैं कि लहसुन हमेशा से ही एक औषधि रही है। इसके कई उपयोग हैं। खाली पेट लहसुन खाना इंसानी शरीर के लिए बहुत ही अच्छा होता है। इसके अलावा व्यक्ति खाने से पहले भी अगर नियमित रूप से लहसुन खाता है तो यह उसके स्वास्थ के लिए बहुत बेहतर है।

लहसुन एक बेहतरीन एंटीवायरल, एंटीबैक्टीरियल, एंटिफंगल और एंटीपैरासिटिक एजेंट के रूप में काम करता है। यह बैक्टीरिया और वायरस जैसे पैथोजेन को मारता है, जिससे बैक्टीरियल और वायरल बीमारियों से बचाव होता है। इसके अतिरिक्त, लहसुन शरीर से टॉक्सिक हैवी मेटल्स को निकालता है और डिटॉक्सिफिकेशन में मदद करता है, जिससे इम्यूनिटी बूस्ट होती है। लहसुन ठंड, फ्लू, सर्दी और जुकाम से भी बचाव करता है और कोलेस्ट्रॉल लेवल को भी कम करता है, जो दिल की सेहत के लिए फायदेमंद है। इसके नियमित सेवन से ब्लड प्रेशर नियंत्रित होता है, जिससे हाइपरटेंशन की समस्या कम होती है। हालांकि डॉक्टर अमित पित्त रोगीयों को लहसुन के सेवन की सलाह नहीं देते हैं। वह कहते हैं कि ऐसे लोग जिनको कब्ज, पेट खराब रहना, उल्टी, या बवासीर जैसी कब्ज की बीमारी है, उन्हें लहसुन का प्रयोग कम से कम करना चाहिए। वह आगे कहते हैं कि एक स्वस्थ आदमी लहसुन को सब्जियों, चटनी, डिप, सलाद या सूप में मिलाकर भी खा सकते हैं, लेकिन इसके कच्चे सेवन से अधिक लाभ होता है। यह किचन का एक ऐसा सुपरफूड है, जो आपकी सेहत को प्राकृतिक रूप से बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

आयुर्वेद मात्र चिकित्सा पद्धति ही नहीं, वरन सम्पूर्ण जीवन दर्शन

गोरखपुर, 25 अगस्त (एजेंसियां)। विश्व आयुर्वेद मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय हंडिया, प्रयागराज के पूर्व प्राचार्य प्रो. डॉ़ जी एस तोमर ने शनिवार को गोरखपुर में कहा कि कि विश्व की सबसे प्राचीनतम विधा आयुर्वेद मात्र एक चिकित्सा पद्धति न होकर सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। यह स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करती है तथा रोगी के रोग का निवारण करती है। डॉ. तोमर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के तृतीय स्थापना दिवस समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित व्याख्यानमाला में शनिवार को .वर्तमान स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान में आयुर्वेद की भूमिका. विषय पर बोलते हुए कहा कि आयुष मंत्रालय केंद्र सरकार 'आयुर्वेद फ़ॉर वन हैल्थ' पर कार्य कर रहा है। भारत वर्ष के अलावा सौ से अधिक देश इस पर कार्य कर रहे हैं। इसमें मानव के अतिरिक्त जीव जन्तु एवं पेड़ पौधों के लिए भी स्वास्थ्य लाभ के उपाय बताए गए हैं। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद जीवनशैली जन्य रोगों के लिए भी संजीवनी है।

डॉ. तोमर ने कहा कि हमारे देश की अस्सी प्रतिशत से अधिक जनसंख्या आज भी गांवों में निवास करती है तथा अपनी दैनिक बीमारियों की लिए अपने पास उपलब्ध जड़ी बूटियों पर ही निर्भर है। कोरोना कालखण्ड में तुलसी, अश्वगंधा व गिलोय जैसी औषधियों की कार्यकारिता को सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकार किया है। संक्रामक रोगों के बचाव में आयुर्वेद रोगी के व्यधिक्षमत्व को बढ़ाने का काम करता है। प्रकृति में उपलब्ध असंख्य जड़ी बूटियां ही आयुर्वेद का अक्षय भण्डार है। हमें शहरीकरण के इस दौर में अपनी इसी बन सम्पदा की रक्षा करनी होगी।

उन्होंने कहा कि आयुर्वेद में वर्णित औषधियां ही प्राणरक्षक नहीं हैं अपितु इसमें वर्णित जीवनशैली भी आदर्श एवं अनुकरणीय है। यह हमारी पारम्परिक चिकित्सा विधा है वैश्विक परिदृश्य में इसे और अधिक ग्राह्य एवं उपयोगी बनाने के लिए हमें इसे साक्ष्य आधारित प्रमाणों से पुन सिद्ध करना होगा। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में प्रो. डा. जीएस तोमर ने 116 मरीजों को निशुल्क चिकित्सकीय परामर्श दिया।

अच्छी पर्सनालिटी बढ़ाती है आत्मविश्वास

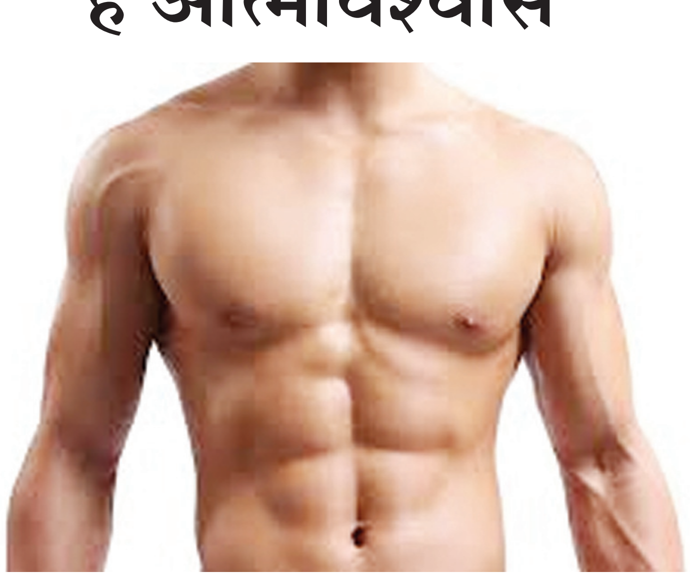

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। अमेरिका मेन्स ग्रूमिंग डे मनाता है। मकसद सिर्फ एक कि पुरुषों को ही नहीं पूरे समाज को बताया जाए कि खूबसूरती पर हक सबका है। व्यक्तित्व को संवारना महज महिलाओं के लिए ही नहीं बल्कि पुरुषों के लिए भी जरूरी है और बदलते दौर में तो ये और भी अहम हो जाता है। जिमिंग ही नहीं चेहरे, बालों और शरीर को चमकाने वाले सौंदर्य प्रसाधन भी जरूरी हैं।

पहले बात शरीर की। तो खुद को फिट रहने के लिए निरंतर व्यायाम करना बहुत जरूरी है, जिससे आप अप टू डेट फील करते हैं साथी ही ज्यादा एक्टिव भी रहते हैं। वर्कआउट न सिर्फ आपको मोटापे से बचाता है, बल्कि पाचन के साथ इम्यून सिस्टम को मजबूती देता है। यह व्यक्ति को तनाव से भी दूर रखता है।

वर्कआउट आप कई तरीके से कर सकते हैं- जैसे जॉगिंग, दौड़, योग, डांस या फिर साइकलिंग। इन एक्टिविटी से मांसपेशियां मजबूत होती है। चेहरे पर निखार भी आता है। और इस निखार को दमकाते हैं कुछ प्रोडक्ट्स जो पुरुषों को हक देते हैं हैंडसम दिखने का। बियर्ड बाम, हेयर पोमेड, फेस वॉश और ब्रो मास्क ऐसे ही कुछ उत्पाद हैं!

दाढ़ी रखना ट्रेंड में हैं। तो बियर्ड यानि दाढ़ी का दमकना भी जरूरी है। उन्हें अच्छी तरह से साफ और चिकना रखने की भी जरूरत है। इसलिए मार्केट में दाढ़ी बाम यानि बियर्ड बाम उपलब्ध है। दाढ़ी के साथ-साथ त्वचा को नमी देने का

■ पुरुषों के लिए जरूरी कुछ ग्रूमिंग सुझाव

एक शानदार काम करता है। ऐसा इसका प्रयोग करने वाले लोग कहते हैं।

दाढ़ी के बाद हेयर पोमेड की बात। पुरुषों के बालों के लिए जेल अब पुरानी बात हो गई है, क्योंकि यह बालों को चिपचिपा बना देता है। बालों को व्यवस्थित रखने का नया तरीका पोमेड का इस्तेमाल करना है। लेकिन बहुत ज्यादा इस्तेमाल न करें, क्योंकि इससे बाल काफी चिपचिपे हो सकते हैं।

बालों के बाद चेहरे की बात और ये है फेस वॉश। चेहरे पर साबुन लगाना गुजरे जमाने की बात हो गई है। महिलाओं की ही नहीं बल्कि पुरुषों की भी चेहरे की त्वचा अधिक संवेदनशील होती है और इसका रख रखाव जरूरी है। ये स्कीन को स्मूथ, मुंहासे रहित और रेजर बर्न से सुरक्षित रखने में मदद करता है। एक फेस मास्क भी है चेहरे पर ताजगी ला सकता है। इसे कहते हैं ब्रो मास्क। यह पुरुषों का एक फेशियल मास्क है। खासतौर पर पुरुषों की त्वचा के लिए बनाए गए सीरम और वनस्पति से तैयार किया गया जो चेहरे पर निखार ले आता है। सेल्फ ग्रूमिंग किसी और के लिए नहीं बल्कि अपने लिए भी जरूरी है। आत्मविश्वास के साथ प्रतिस्पर्धी युग में आगे बढ़ने के लिए जरूरी है कि खुद का ख्याल रखा जाए।

अपने लिविंग रूम को इन तरीकों से बनाएं बेहतरीन मीटिंग पैलेस

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। हर कोई चाहता है कि वह अपने परिवार और दोस्तों के साथ बैठकर बातें करे, कुछ फुर्सत के पल बिताए और सुकून महसूस करे। इसके लिए घर में एक छोटा सा मीटिंग पैलेस होना बहुत जरूरी है, ताकि आप बिना कहीं जाए शांति से अपनी यादें साझा कर सकें। इसके लिए हर घर में अलग से मीटिंग पैलेस होना जरूरी नहीं है। आप अपने लिविंग रूम को भी आसान तरीके से मीटिंग पैलेस बना सकते हैं। आइए आपको बताते हैं अपने लिविंग रूम को आप मीटिंग पैलेस में कैसे बदल सकते हैं।

सबसे पहले आपको आरामदायक बैठने की व्यवस्था करनी होगी। किसी भी मीटिंग पैलेस में बैठने की व्यवस्था महत्वपूर्ण होती है। इसके लिए आपको एक अच्छा सोफा और आरामदायक कुर्सी चुननी होगी ताकि आप मीटिंग के दौरान आराम से बैठकर बात कर सकें। बता दें कि सोफा कम जगह में एक साथ अधिक लोगों के बैठने के लिए बेहतर होता है। इस दौरान आप आमने-सामने बात करके मीटिंग का आनंद ले सकते हैं।

अपने लिविंग रूम में एक सेंट्रल पॉइंट बनाएं ताकि आप सभी को एक तरफ आकर्षित होने पर मजबूर कर सकें। इसके लिए आप एक बड़ा टेलीविजन या मनोरंजन का कोई साधन रख सकते हैं। बातचीत को बढ़ावा देने के लिए सेंट्रल पॉइंट के आसपास बैठने की व्यवस्था करें। बातचीत के दौरान लोगों को बोरियत महसूस न हो, इसके लिए लोगों के सामने एक टेबल रखें जिस पर चाय, कॉफी, स्नैक्स और कुछ पेय पदार्थ रखे हों।

अपने लिविंग रूम को आकर्षक मीटिंग पैलेस बनाने के लिए लेयर्ड लाइटिंग का इस्तेमाल करें। इससे आपका मूड व्यवस्थित रहता है। माहौल को रंगीन बनाने में लाइटिंग की अहम भूमिका होती है। इसके लिए आप फ्लोर लैंप और टेबल लैंप लगा सकते हैं। लाइट को आसानी से बदलने के लिए डिमर स्विच लगाने की कोशिश करें। ताकि आप अपने मूड के हिसाब से मीटिंग का माहौल व्यवस्थित रख सकें।

अपने लिविंग रूम को और भी आकर्षक बनाने के लिए, फर्श पर मुलायम तकिए, आरामदायक कंबल और गद्देदार कालीन बिछाएं। इससे आपका मीटिंग पैलेस एक आरामदायक और आकर्षक जगह बन जाएगा।

अगर आपके पास बच्चे हैं या आपको खेल पसंद है, तो अपने लिविंग रूम में कुछ प्ले एरिया बनाएं। आप बोर्ड गेम, पजल या वीडियो गेम जैसे गेम वहां रख सकते हैं। ये गेम सभी उम्र के मेहमानों का मनोरंजन कर सकते हैं। जगह को थोड़ा स्टाइलिश बनाने के लिए, खिलौनों को सजावटी टोकरी या साइड टेबल पर रखें।

अपने लिविंग रूम में अस्थायी फर्नीचर का इस्तेमाल करें जिसे आप अपनी इच्छानुसार एक जगह से दूसरी जगह ले जा सकें। इसके लिए आप मॉड्यूलर सोफा या हल्की कुर्सियों का इस्तेमाल कर सकते हैं। इन सभी तरीकों से आप अपने लिविंग रूम को एक शानदार मीटिंग पैलेस में बदल सकते हैं। इस मीटिंग पैलेस में आप छोटे-मोटे सेलिब्रेशन कर सकते हैं, परिवार के साथ मौज-मस्ती कर सकते हैं, दोस्तों के साथ गपशप कर सकते हैं और काम से जुड़ी गंभीर बातों पर भी चर्चा कर सकते हैं। लिविंग रूम को इतना सजाने के बाद आपको छोटी-मोटी मौज-मस्ती के लिए कहीं बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

जेवर के विनय आमेरिया दादा साहब फाल्के इंटरनेशनल मॉटीवेशनल अवार्ड से सम्मानित

जेवर, 25 अगस्त (देशबन्धु)। मुम्बई के लोखंडवाला में अमोल भगत मीडिया द्वारा शनिवार को कस्बा जेवर के रहने वाले एक्टर व डायरेक्टर विनय आमेरिया को दादा साहब फाल्के इंटरनेशनल मॉटीवेशनल अवार्ड 2024 से सम्मानित किया है। जिससे कस्बे मे खुशी का माहौल है। विनय आमेरिया ने बताया कि कार्यक्रम में फिल्म, राजनीति, बिजनेस, सोशल वर्क, सोशल मीडिया क्रेटर आदि केटेगरी को शामिल किया गया। उन्हें फिल्म केटेगरी से सोशल मेसेज एल्बम सॉन्ग के लिए बेस्ट डायरेक्टर एक्टर चुना गया। अमोल भगत मीडिया के हेड अमोल भगत व बॉलीवुड सिंगर बलजीत सिंह ने दादा साहब फाल्के इंटरनेशनल मोटिवेशनल अवार्ड देकर सम्मानित किया। विनय आमेरिया अपने एलबम में बेटी, महिला सम्मान में, रेप, एसिड अटैक, भ्रूणहत्या, बेटी बचाओ अभियान व नशा मुक्त भारत, जल ही जीवन, वृक्ष लगाओ पर्यावरण बचाओ, स्वच्छ भारत मिशन को दर्शाते हुए समाज को जागरूक करने के मैसेज दिए हैं। रविवार को जेवर पहुंचने पर कस्बे के लोगों ने फूल माला पहचानाकर व बुके देकर उनका जोरदार स्वागत किया।

खाने की शौकीन रकुल ने शेयर की 'अद्भुत' कॉम्बो डिश, बोलीं- ये है उनका लंच ऑन द गो

मुंबई, 25 अगस्त (एजेंसियां)। हिन्दी फिल्मों की मशहूर अभिनेत्री रकुल प्रीत सिंह जिनके लाखों चाहने वाले हैं। उन्होंने एक पोस्ट के जरिए बताया कि वह लंच में क्या देखकर वो खुद को रोक नहीं पाती हैं। रकुल ने एक तस्वीर साझा की। तस्वीर का कैप्शन दिया- चावल, लौकी और चिकन। इसके साथ ही उन्होंने दिल वाले इमोजी के साथ 'लंच ऑन द गो' लिखा। यह पहली बार नहीं है कि रकुल ने अपने खाने के साथ फोटो शेयर की। खाने की शौकीन रकुल अक्सर अपने फैंस के साथ तस्वीर साझा करती हैं। 33 साल की हो स्टार अपनी सेहत और फिटनेस को लेकर भी काफी सजग है। इंस्टाग्राम पर वह अपने वर्कआउट की कई वीडियो भी शेयर करती रहती हैं। अभिनेत्री हाल ही में अपने पति जैकी भगनानी के साथ छुट्टियों पर गई थीं। जिसकी तस्वीरें भी सोशल प्लेटफॉर्म पर शेयर की थीं। जैकी की फोन पर बात करते हुए एक तस्वीर शेयर करते हुए उन्होंने लिखा था, पति पत्नी और वो... उन्हें काम के कॉल से दूर रखना बहुत मुश्किल है। जैकी ने री शेयर करते हुए रकुल से पूछा था, क्या तुम मेरा पीछा कर रही हो। जिसके जवाब में रकुल ने लिखा, हां।

फिल्मी करियर की बात करें तो रकुल ने साल 2009 में कन्नड़ फिल्म 'गिल्ली' से अभिनय यात्रा शुरू की। इसके बाद उन्होंने 'लौकीम', 'नानकू प्रेमथो' और 'जया जानकी नायका' जैसी कई साउथ फिल्मों में काम किया।

रकुल ने 'यारियां' से बॉलीवुड में कदम रखा। इसके बाद उन्होंने 'दे दे प्यार दे' जैसी फिल्मों में काम किया। हाल ही में, रकुल कमल हासन अभिनीत 'इंडियन-2' में नज़र आईं।

झांसी : ऑर्गेनिक खेती से कमाई करके 'लखपति दीदी' बनी ग्रामीण महिलाएं, जानें कैसे उठाया मौके का फायदा

झांसी, 25 अगस्त (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश की झांसी में ऐसी दो ग्रामीण महिला जो अपने सपनों को उड़ान दे रही हैं। इन दोनों महिलाओं ने ऑर्गेनिक खेती करके 'लखपति दीदी' की श्रेणी में अपना नाम शामिल कर लिया है। झांसी की दो ग्रामीण महिलाएं सुमन कुशवाहा और रचना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत नेशनल इनोवेशन इन क्लाइमेट रेजिलिएंट एग्रीकल्चर द्वारा स्वयं सहायता समूह से जुड़कर ऑर्गेनिक खेती कर रही हैं।

रचना ने बताया कि पहले खेत की जुताई करती हैं और बीज बोती हैं। इसके बाद जब पौधा उग जाता है। उदाहरण के तौर पर अगर मिर्च का पौधा उग जाता है तो उसको फिर से निकालकर दूसरी जगह खेतों में लगा देते हैं और फिर निराई-गुड़ाई करते हैं। इन सबके एक-दो महीने के बाद जो फसल मिलती है, उसको गांव या फिर मंडी में बेचते हैं। उन्होंने बताया कि गांव में फसल बेचने पर मुनाफा ज्यादा होता, जबकि मंडी में गांव की अपेक्षा कम मुनाफा होता है। रचना ने

> पहले खेत की जुताई करती हैं और बीज बोती हैं। इसके बाद जब पौधा उग जाता है। उदाहरण के तौर पर अगर मिर्च का पौधा उग जाता है तो उसको फिर से निकालकर दूसरी जगह खेतों में लगा देते हैं और फिर निराई-गुड़ाई करते हैं: रचना

आगे बताया कि ऑर्गेनिक खेती में हम खाद के लिए गोबर का प्रयोग करते हैं, जबकि फसल को कीड़े-मकोड़ों से बचाने के लिए पीली शीट का प्रयोग करते हैं। उन्होंने बताया पहले हम खेतों में कीटनाशक दवाओं का प्रयोग करते थे और अब ऑर्गेनिक खेती का रास्ता अपनाया तो हमें पहले से ज्यादा बचत होती है। एक अन्य ऑर्गेनिक खेती करने वाली सुमन ने बताया कि पहले हम गोबर से खाद बनाने का काम करते हैं, उसके बाद उसको खेतों में डालते हैं। ट्रैक्टर से खेतों की दो-तीन बार जुताई करवाते हैं। इसके बाद जिसकी खेती करनी होती है, उसका बीज हम बाजार से लाते हैं। जब वह बीज पौधा बन जाता है, तो हम उसका खेतों में बुआई करवाते हैं। इन सबके बाद करीब ढाई महीने बाद फसल मिलने लगता है। उन्होंने आगे बताया इन सभी प्रक्रिया में मजदूरों को करीब 8 से 10 हजार रुपए देना पड़ता है। उन्होंने उदाहरण के तौर बताया कि अगर हम लोग भिंडी की खेती करते हैं, तो उसमें करीब 8000 का लागत लगेगा, जबकि हमारा बचत 45,000 तक होगा।

सोनी मैक्स रच रहा है नया इतिहास; साबिर खान की सुपर नेचरल थ्रिलर 'अद्भुत' होगी टेलीविज़न पर रिलीज़

मुंबई, 25 अगस्त (एजेंसियां)। शैतान, स्त्री 2 और मुंज्या जैसी हालिया हॉरर-सुपर नेचरल फिल्मों की अपार-बॉक्स ऑफिस सफलता के बाद, सोनी मैक्स अपने आगामी सुपर नेचरल थ्रिलर, 'अद्भुत' के साथ एक नया इतिहास रचने जा रहा है। यह एक डायरेक्ट-टू-टीवी रिलीज़ है, जो बॉलीवुड में एक नए युग की शुरुआत करेगी।

'अद्भुत' का निर्देशन साबिर खान द्वारा किया गया है, जिसमें नवाजुद्दीन सिद्दीकी, डायना पेंटी, श्रेया धनवंतरी और रोहन मेहरा जैसे नामचीन कलाकार अभिनय कर रहे हैं। रोमांचक अनुभव प्रदान करने के वादे के साथ, 'अद्भुत' देशभर के दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देगी।

यह टेलीविज़न के लिए एक नया दौर है। अब बड़ी फ़िल्मों की रिलीज़ के लिए इसे एक प्रमुख मंच के रूप में देखा जा रहा है।

साबिर खान, डायरेक्टर, अद्भुत, ने कहा, भारत में टेलीविज़न, लंबे समय से एक सशक्त माध्यम रहा है, जिससे हर दिन लाखों घर जुड़ते हैं। 'अद्भुत' के साथ, हम टेलीविज़न पर सिर्फ एक फिल्म ही रिलीज़ नहीं कर रहे हैं, बल्कि हम एक साथ, एक ही समय पर करोड़ों घरों में अपनी पहुँच भी स्थापित कर रहे हैं। इस नए कदम के रूप में हम एक नया इतिहास रच रहे हैं, जो बताता है कि दर्शक हमारे लिए हमेशा ही पहले स्थान पर हैं।

फिल्म में मुख्य किरदार निभा रहे अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने कहा, 'अद्भुत' एक ऐसी फिल्म है, जो अपनी कहानी और इसे साझा करने के तरीके दोनों से परे है। यह देखना वास्तव में रोमांचक है कि कोई फिल्म टेलीविज़न पर रिलीज़ के माध्यम से एक साथ लाखों लोगों तक पहुँच रही है। सुपर नेचरल स्टाइल मुझे हमेशा से ही आकर्षित करता रहा है और मेरा मानना है कि दर्शकों को भी यह फिल्म रोमांच से भर देगी। इस डायरेक्ट-टू-टीवी रिलीज़ के साथ, हम एक नई शुरुआत करने जा रहे हैं, और मुझे गर्व है कि मैं भी इस ऐतिहासिक क्षण का हिस्सा हूँ।

[अर्थ जगत]

सर्वाधिक बढ़ने वाले शेयर	
टाटा मोटर्स	1.53 प्रतिशत
सन फार्मा	1.44 प्रतिशत
भारती एयरटेल	1.33 प्रतिशत
आईसीआईसीआई बैंक	1.05 प्रतिशत
महिंद्रा एंड महिंद्रा	0.97 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर	
टेक महिंद्रा	1.17 प्रतिशत
एशियन पेंट	0.98 प्रतिशत
टाइटन	0.97 प्रतिशत
इंफ़ोसिस	0.94 प्रतिशत
टीसीएस	0.80 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	72016
बिटुर	47,320
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	81750
वायदा	68,426
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	67.77	78.57
पौड स्टर्लिंग	90.94	105.45
यूरो	76.54	88.78
चीन युआन	08.24	13.38

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दड़ा	2650-2750
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	3740-3840
चीनी एम	4150-4250
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	4500-4600

दाल-दलहन

चना	7000-7100
दाल चना	8000-8100
मसूर काली	7550-7650
उड़द दाल	12400-12500
मूंग दाल	10200-10300
अरहर दाल	10800-10900

पेट्रोल और डीजल की कीमतें स्थिर

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी जारी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम अपरिवर्तित रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपए प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपए प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपए प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपए प्रति लीटर पर रहा।

प्लास्टिक रिसाइकिलिंग से पर्यावरण मजबूत होगा, देश आगे बढ़ेगा : मोदी

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पर्यावरण की रक्षा के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्लास्टिक कचरे की रिसाइकिलिंग के प्रयोगों की प्रशंसा की है और कहा है कि इस तरह के प्रयोगों से पर्यावरण मजबूत होगा तथा देश भी आगे बढ़ेगा।

श्री मोदी ने रविवार को आकाशवाणी पर अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' में इन प्रयोगों का उल्लेख करते हुए कहा, 'मध्यप्रदेश के झाबुआ में, कुछ ऐसा शानदार हो रहा है, जिसे आपको जरूर जानना चाहिए। वहां पर हमारे सफाई-कर्मी भाई-बहनों ने कमाल कर दिया है। इन भाई-बहनों ने हमें 'वेस्ट टू वेल्थ' का संदेश सच्चाई में बदलकर दिखाया है। इस टीम ने झाबुआ के एक पार्क में कचरे से अद्भुत कलाकृतियां तैयार की हैं। अपने इस काम के लिए उन्होंने आसपास के क्षेत्रों से प्लास्टिक कचरे, इस्तेमाल की

मध्यप्रदेश के झाबुआ में भाई-बहनों ने हमें 'वेस्ट टू वेल्थ' का संदेश सच्चाई में बदलकर दिखाया है। इस टीम ने झाबुआ के एक पार्क में कचरे से अद्भुत कलाकृतियां तैयार की हैं : नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

■ **प्लास्टिक कचरे से अलग-अलग बनाई गई खूबसूरत चीजें लोगों को कर रही आकर्षित**

हुई बोतलें, टायर और पाइप इकट्ठा किए। इन कलाकृतियों में हेलीकॉप्टर, कार और तोपें भी शामिल हैं। खूबसूरत हैंगिंग फूलदान भी बनाए गए हैं। यहां इस्तेमाल किए गए टायरों का उपयोग आरामदायक बेंच बनाने के लिए किया गया है। सफाई कामगारों की इस टीम ने रिड्यूज़, रीयूज़, और रिसाइकिल का मंत्र अपनाया है। उनके प्रयासों से पार्क बहुत ही सुंदर दिखने लगा है। इसे देखने के लिए स्थानीय लोगों के साथ ही आसपास के जिलों में रहने वाले भी यहां पहुंच रहे हैं'

प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्हें खुशी है कि आज हमारे देश में कई सारी स्टार्ट अप टीम भी पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए ऐसे प्रयासों से जुड़ रही है। ई-कॉन्शस नाम की एक टीम है, जो प्लास्टिक कचरे का उपयोग पर्यावरण अनुकूल उत्पाद बनाने में कर रही है। इसका आइडिया उन्हें हमारे पर्यटन स्थलों, विशेषकर पहाड़ी इलाकों में फैले कचरे को देखकर आया। ऐसे ही लोगों की एक और टीम ने ईकोकारी नाम से स्टार्ट अप शुरू किया है। ये प्लास्टिक कचरे से अलग-अलग खूबसूरत चीजें बनाते हैं। उन्होंने कहा कि खिलौना रिसाइकिलिंग भी ऐसा ही एक और क्षेत्र है, जिसमें हम मिलकर काम कर सकते हैं।

आप भी जानते हैं कि कई बच्चे कितनी जल्दी खिलौनों से ऊब जाते हैं, वहीं, ऐसे बच्चे भी हैं, जो उन्हीं खिलौनों का सपना संजोए होते हैं।

भारत सिंगापुर मंत्रिस्तरीय गोलमेज सम्मेलन में शामिल होंगे पीयूष गोयल

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल सोमवार को सिंगापुर में आयोजित होने वाले दूसरे भारत सिंगापुर मंत्रिस्तरीय गोलमेज (आईएसएमआर) सम्मेलन में शामिल होंगे। इस दौरान वह द्विपक्षीय बैठकें करेंगे और सिंगापुर के साथ भारत के व्यापार और निवेश संबंधों को और बढ़ाने के लिए प्रमुख वैश्विक व्यापारिक हस्तियों के साथ बातचीत करेंगे।

■ **भारत के लिए एफडीआई का एक प्रमुख स्रोत रहा है सिंगापुर**

बता दें कि आईएसएमआर सम्मेलन में पीयूष गोयल के अलावा वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, विदेश मंत्री जयशंकर और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव भी हिस्सा लेंगे। दोनों देशों के लिए यह सम्मेलन बेहद खास है। सम्मेलन के दौरान पीयूष गोयल सिंगापुर में डीबीएस बैंक, टेमासेक होल्डिंग्स, ओमर्स, केपेल इंफ्रास्ट्रक्चर और ओनर्स फोरम सहित प्रमुख वैश्विक व्यापारिक गणों के साथ बातचीत करेंगे। गोयल भारत के उभरते बाजार अवसरों और इसके गतिशील विकास पथ पर द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने की रणनीतियों पर चर्चा करेंगे। ज्ञात हो कि आईएसएमआर भारत-सिंगापुर के द्विपक्षीय संबंधों में एक नया एजेंडा निर्धारित करने हेतु स्थापित एक महत्वपूर्ण तंत्र है। साल 2022 में नई दिल्ली में सितंबर माह में इसकी पहली बैठक आयोजित की गई थी।

मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि दूसरी दौर की बैठक दोनों पक्षों को अपनी रणनीतिक साझेदारी के विभिन्न पहलुओं की समीक्षा करने और इसे और आगे बढ़ाने और व्यापक बनाने के लिए नए रास्ते तलाशने में सक्षम बनाएगी।

सिंगापुर भारत के लिए एफडीआई का एक प्रमुख स्रोत रहा है। वर्ष 2023-24 में यह देश भारत के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का सबसे बड़ा स्रोत था, जिसमें अनुमानित 11.77 बिलियन डॉलर का प्रवाह था।

अप्रैल 2000 से मार्च 2024 तक सिंगापुर से एफडीआई का संचयी प्रवाह लगभग 159.94 बिलियन डॉलर रहा।

सोने की बढ़ती कीमतों ने कश्मीर में शादी के सीजन को कर रहा प्रभावित

■ **सुरेश एस डुग्गर**

जम्मू, 25 अगस्त (देशबन्धु)। सोने की बढ़ती कीमतों ने कश्मीर में शादी के सीजन को प्रभावित करना शुरू कर दिया है, क्योंकि समाज के कई वर्गों के लिए यह पीली धातु धीरे-धीरे अप्राप्य होती जा रही है। अगस्त में कश्मीर में शादी का मौसम शुरू होता है और नवंबर तक रहता है। इस मौसम में सोने और चांदी की बिक्री आम तौर पर बढ़ जाती है, क्योंकि कश्मीरी समाज में इसकी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक भूमिका है। जानकारी के लिए देश में सोने की कीमतें इस समय आसमान छू रही हैं, जिसका असर घाटी में शादी के मौसम पर पड़ रहा है। फिलहाल 24 कैरेट सोने की कीमत 7288.8 रुपए प्रति ग्राम है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 6676.6 रुपए प्रति ग्राम है। कश्मीर के गोल्ड बेचने वाले डीलरों ने कहा कि सोने की बढ़ती कीमतों के कारण कश्मीर में सोने की मांग 70 प्रतिशत से अधिक कम हो गई है। आल कश्मीर वैली गोल्ड डीलर्स एंड वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष

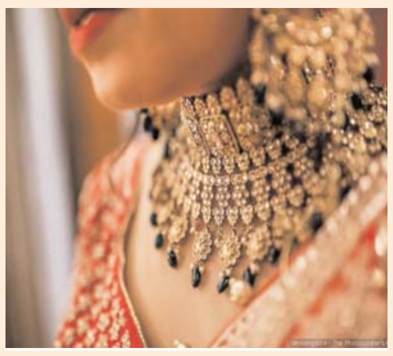

बशीर अहमद राथर के बकौल, अब हमारे पास बहुत कम ग्राहक आते हैं। पूरे भारत में सोने की कीमतों में बढ़ोतरी हुई है और इसका सीधा असर हमारी बिक्री पर पड़ा है, क्योंकि इस समय घाटी में सोने की मांग अधिक है।

ज्वैलर्स ने कहा कि ज्यादातर मध्यम वर्गीय परिवार बढ़ती कीमतों के साथ तालमेल बिठाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। राथर का कहना था कि सोना हमेशा से कश्मीरी शादियों

■ **शादी के मौसम में सोने व चांदी की बिक्री आम तौर पर बढ़ जाती है**
■ **24 कैरेट सोने की कीमत 7288.8 रुपए प्रति ग्राम है**
■ **अक्सर हम परिवारों से हल्के डिजाइन बनाने के बारे में सुनते हैं, जो उनके लिए किफायती हो जाते हैं**
■ **पिछले कुछ वर्षों में सोने की कीमतें आसमान छू रही हैं**

का एक अनिवार्य हिस्सा रहा है, लेकिन मौजूदा कीमतें लोगों को यह सोचने पर मजबूर कर रही हैं कि वे कितना खर्च कर सकते हैं। एक अन्य ज्वैलर समीर अहमद ने कहा कि कीमतें अब रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गई हैं, इसलिए परिवार हल्के डिजाइन का विकल्प चुन रहे हैं या वैकल्पिक सामग्रियों का भी इस्तेमाल कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि अक्सर हम परिवारों से हल्के डिजाइन बनाने के बारे में सुनते हैं, जो उनके लिए किफायती हो जाते हैं। हमने यह भी सुना है कि लोग अब दुल्हन को सोने के बजाय नकद और रसोई के अन्य उपकरण और कपड़े उपहार में देने जैसे अन्य विकल्पों की ओर रुख कर रहे हैं। अहमद का कहना था कि सोने की बढ़ती कीमतों के कारण कश्मीर में शादियों में देरी होगी या समारोहों का स्तर कम होगा। पारंपरिक रूप से सोना कश्मीरी शादियों का एक अनिवार्य हिस्सा है। दूल्हा-दुल्हन के परिवार शादी तक विभिन्न समारोहों के दौरान सोने का आदान-प्रदान करते रहते हैं। संभावित खरीदारों ने सोने की कीमतों में तेज वृद्धि के बारे में चिंता व्यक्त की है, उन्होंने कहा कि पिछले दो वर्षों में लागत लगभग दोगुनी हो गई है। संभावित खरीदार परवेज अहमद खान ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में सोने की कीमतें आसमान छू रही हैं। मध्यम और उच्च मध्यम वर्ग के परिवारों के लिए सोने में निवेश करना मुश्किल होता जा रहा है।

फेड व जेरोम का शेयर बाजार पर रहेगा असर

-साप्ताहिक समीक्षा-

मुंबई, 25 अगस्त (एजेंसियां)। मजबूत आर्थिक आंकड़ों की बदौलत अमेरिकी अर्थव्यवस्था में मंदी आने की संभावना कम होने से हुई लिवाली से बीते सप्ताह करीब एक प्रतिशत तक चढ़े घरेलू बाजार पर अगले सप्ताह फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक के मिनट्स और फेड अध्यक्ष जेरोम पॉवेल के वक्तव्य का असर रहेगा। बीते सप्ताह बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 649.37 अंक अर्थात 0.81 प्रतिशत की छलांग लगाकर सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिवस पर 81086.21 अंक पर पहुंच गया। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 282 अंक यानी 1.15 प्रतिशत की तेजी के साथ 24823.15 अंक पर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में बीएसई की मझौली और छोटी कंपनियों के शेयरों में लिवाली की रफ्तार अधिक तेज रही। इससे मिडकैप 927.99 अंक अर्थात 1.95 प्रतिशत उछलकर सप्ताहांत पर 48321.92 अंक हो गया। साथ ही स्मॉलकैप 1824.8 अंक यानी 3.4 प्रतिशत की उड़ान भरकर 55681.89 अंक पर पहुंच गया।

विश्लेषकों के अनुसार, इस सप्ताह भारतीय बाजार ने मजबूत अमेरिकी आर्थिक आंकड़ों की बदौलत दुनिया की सबसे शक्तिशाली अर्थव्यवस्था में मंदी की संभावना कम होने से अपनी रिकवरी रैली को बनाए रखा। इसके अलावा इजराइल और हमास के बीच संघर्षविराम वार्ता से उत्पन्न सकारात्मक वैश्विक भावना और कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट ने भी तेजी में योगदान दिया। हालांकि, जापान में महंगाई के दबाव और येन की मजबूती ने अंत में बाजार की बढ़त को कम कर दिया।

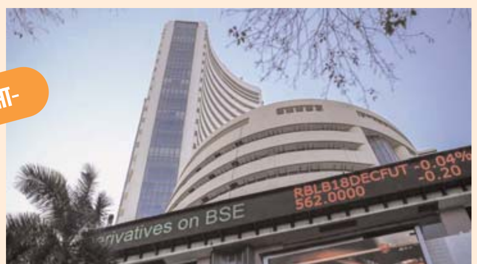

■ **सेंसेक्स 0.81 प्रतिशत की छलांग लगाकर सप्ताहांत पर 81086.21 अंक पर**
■ **निफ्टी 1.15 प्रतिशत की तेजी के साथ 24823.15 अंक पर बंद**

बीते सप्ताह के दौरान अमेरिकी बाजार पर निर्भर आईटी कंपनियों के शेयरों ने शुरुआती तेजी के बाद मुनाफावसूली के कारण मामूली प्रदर्शन किया। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के शेयरों ने पिछले सप्ताह के नुकसान की पूरी तरह से भरपाई की ली जबकि मिडकैप और स्मॉलकैप इंडेक्स ने दिग्गज कंपनियों से बेहतर प्रदर्शन किया।

अगले सप्ताह फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक के मिनट्स और फेड अध्यक्ष जेरोम पॉवेल के वक्तव्य का असर रहेगा। पॉवेल ने जैक्सन होल, वायोमिंग में फेड के वार्षिक आर्थिक सम्मेलन में कहा, 'नीति को समायोजित करने का समय आ गया है। यात्रा की दिशा स्पष्ट है, और दर कटौतियों का समय और गति आने वाले आंकड़े, बदलती परिस्थितियों और जोखिमों के संतुलन पर निर्भर करेगी।'

इस बीच कुछ फेड अधिकारियों ने कहा कि यदि नियुक्तियों में और धीमापन के संकेत मिलते हैं तो सितंबर में ब्याज दरों में आधे प्रतिशत की कटौती की संभावना बढ़ सकती है। अगली रोजगार रिपोर्ट 06 सितंबर को जारी की जाएगी। पिछली नीति बैठक में पॉवेल ने कहा था कि यदि अमेरिका में महंगाई की दर गिरती रहती है, तो सितंबर में होने वाली अगली बैठक में नीतिगत दरों में कटौती पर विचार किया जा सकता है। बीते शेयर बाजार में चार दिन तेजी रही। वैश्विक स्तर से मिले मिश्रित संकेतों के साथ ही घरेलू स्तर पर उतार-चढ़ाव के बीच सोमवार को शेयर बाजार का रूख मिलाजुला रहा। सेंसेक्स 12.16 अंक फिसलकर 80424.68 अंक रह गया जबकि निफ्टी 31.50 अंक की मामूली बढ़त लेकर 24572.65 अंक पर रहा।

अमेरिकी फेडरल रिजर्व के इस सप्ताह के अंत में ब्याज दरों में कटौती के और संकेत देने की उम्मीद और चीन से धातुओं की मांग बढ़ने से स्थानीय स्तर पर हुई चौतरफा लिवाली की बदौलत मंगलवार को सेंसेक्स 378.18 अंक की छलांग लगाकर 80,802.86 अंक और निफ्टी 126.20 अंक की तेजी के साथ 24,698.85 अंक पर बंद हुआ। फेडरल रिजर्व की नीतिगत बैठक के जारी मिनट्स में अगले कुछ सप्ताह में ब्याज दर में कटौती शुरू करने के संकेत से विश्व बाजार में आई तेजी की बदौलत स्थानीय स्तर पर कमोडिटीज, दूरसंचार, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और सर्विसेज समेत पंद्रह समूहों में हुई लिवाली से गुरुवार को सेंसेक्स 147.89 अंक मजबूत होकर 81,053.19 अंक और निफ्टी 41.30 अंक बढ़कर 24,811.50 अंक पर बंद हुआ।

तेजी से गिर रहे ओला इलेक्ट्रिक के शेयर

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। भाविश अग्रवाल द्वारा संचालित ओला इलेक्ट्रिक जिसने हाल ही में पब्लिक मार्केट में प्रवेश किया है, बढ़ती प्रतिस्पर्धा के बीच घरेलू इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन क्षेत्र में अपने प्रतिद्वंद्वियों के मुकाबले तेजी से उसके शेयर गिर रहे हैं, और बाजार विश्लेषकों ने निवेशकों को इस अस्थिर स्टॉक के साथ 'सतर्क' रहने की चेतावनी दी है।

जेफ़रीज़ की एक ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि टीवीएस और बजाज ने अधिक किफायती इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों के साथ अपने पोर्टफोलियो का विस्तार किया है। इस बदलाव ने उन्हें क्रमशः 4 प्रतिशत और 7 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी हासिल करने में मदद की है, टीवीएस के पास अब 19 प्रतिशत और बजाज के पास 18 प्रतिशत बाजार की हिस्सेदारी है। रिपोर्ट के अनुसार, इलेक्ट्रिक दोपहिया बाजार में ओला इलेक्ट्रिक की बाजार हिस्सेदारी जून तिमाही (वित्त वर्ष 2025 के पहले तिमाही) के 49 प्रतिशत के मुकाबले घटकर अगस्त में 33 प्रतिशत हो गई है। बाजार पर नजर रखने वालों ने कहा कि ओला इलेक्ट्रिक की दीर्घकालिक क्षमता, विशेष रूप से ईवी बाजार के अनुकूल दृष्टिकोण को देखते हुए, आकर्षक हो सकती है। लेकिन, मौजूदा मूल्यांकन इसके उलट अटकलबाजी वाला नजर आ रहा है। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के वरिष्ठ शोध विश्लेषक साजी जॉन ने कहा, 'कंपनी के चल रहे घाटे और उसके स्टॉक मूल्य में आई उच्च अस्थिरता को देखते हुए।

सार संक्षेप

विदेशी मुद्रा भंडार 4.55 अरब डॉलर बढ़कर 674.7 अरब डॉलर पर

मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, स्वर्ण भंडार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में भारी बढ़ोतरी होने से 16 अगस्त को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 4.55 अरब डॉलर के इजाफे के साथ 674.7 अरब डॉलर हो गया। वहीं, इसके पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार 4.8 अरब डॉलर कम होकर 670.12 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक के जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 16 अगस्त को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 3.61 अरब डॉलर की बढ़ोतरी लेकर 591.6 अरब डॉलर पर पहुंच गया। इसी तरह इस अवधि में स्वर्ण भंडार 86.5 करोड़ डॉलर बढ़कर 60.1 अरब डॉलर हो गया। आलोच्य सप्ताह विशेष आहरण अधिकार में छह करोड़ डॉलर का इजाफा हुआ।

फर्रुखाबाद जंक्शन पर जल संकट से यात्री व परीक्षार्थी हलकान

फर्रुखाबाद। उत्तर प्रदेश मे फर्रुखाबाद जिले के पूर्वोत्तर रेलवे फर्रुखाबाद जंक्शन स्टेशन पर पिछले करीब 36 घंटों से भीषण पेयजल संकट उत्पन्न होने से हजारों की संख्या में पुलिस भर्ती परीक्षा में शामिल होने के लिए आये युवक - युवतियों के सामने पीने के पानी का गंभीर संकट खड़ा हुआ है। सूत्रों ने रविवार को बताया कि उत्तर प्रदेश के जनपदों में 23 अगस्त से 31 अगस्त के मध्य पुलिस भर्ती परीक्षा में लाखों की संख्या में परीक्षा देने वाले, सुदूर जनपदों से युवक-युवतियों बसों व ट्रेनों से आ जा रहे हैं। इसी क्रम में पूर्वोत्तर रेलवे इज्जत नगर नगर मंडल रेल प्रशासन द्वारा विभिन्न रेल खण्डों में पुलिस भर्ती परीक्षार्थियों के लिए स्पेशल ट्रेनों का संचालन शुरू किया गया। पूर्वोत्तर रेलवे फर्रुखाबाद जंक्शन स्टेशन के नंबर 1 से 5 नंबर तक के सभी प्लेटफार्म पर ठंडा जल के लिये वाटर कूलर एव अलग-अलग टोटियो से रेल यात्रियों को पानी पीने की उपलब्ध है। लेकिन शुक्रवार मध्य रात्रि के बाद से करीब पिछले छत्तीस घंटो से फर्रुखाबाद जंक्शन के सभी प्लेटफार्म पर किसी भी नल की टोटी से पानी न आने पर, हजारों की संख्या में प्लेटफार्म पर पुलिस भर्ती परीक्षा देने के लिए रुके युवक -युवतियों के समक्ष शौच एवं पीने वाले पानी के लिए त्राहि त्राहि मच गई।

चीन ने अपनी कंपनियों पर अमेरिकी प्रतिबंधों का किया विरोध

बीजिंग। चीन ने अपनी चीनी कंपनियों पर रूस के साथ कथित संबंधों के विरोध में अमेरिका की ओर से प्रतिबंध लगाने का जोरदार विरोध किया है। चीन के वाणिज्य मंत्रालय ने रविवार को यह जानकारी दी। इससे पहले, अमेरिका ने रूस की 60 से ज्यादा कानूनी कंपनियों, 42 चीनी संगठनों तथा 11 ईरानी को निर्यात नियंत्रण सूची में जोड़ा था। मंत्रालय ने कहा, 'रूस के साथ तथाकथित संबंधों के कारण अमेरिका ने कई चीनी कंपनियों को निर्यात नियंत्रण सूची में जोड़ा है। चीन इसका कड़ा विरोध करता है।

खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख अधिकांश दालें सस्ती

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। विदेशी बाजारों में तेजी के बावजूद स्थानीय स्तर पर उठाव कमजोर रहने से बीते सप्ताह दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख रहा जबकि अधिकांश दालें सस्ती हो गईं वहीं अन्य जिंसों में टिकाव रहा।

तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का सितंबर वायदा सप्ताहांत पर 99 रिंगिट उबलकर 3975 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। इसी तरह सितंबर का अमेरिकी सोया तेल वायदा 1.45 सेंट की तेजी के साथ 39.54 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

सप्ताहांत पर खाद्य तेलों में टिकाव रहा। इस दौरान सरसों तेल 74 रुपए और सूरजमुखी तेल 72 रुपए प्रति क्विंटल चढ़ गया जबकि सोया रिफाइंड 74 रुपए और वनस्पति तेल 33 रुपए प्रति क्विंटल उतर गया। वहीं, मूंगफली तेल और पाम ऑयल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ और वे पिछले कारोबारी सप्ताह के स्तर पर टिके रहे।

सप्ताहांत पर सरसों तेल 13187 रुपए प्रति क्विंटल, मूंगफली तेल 19560 रुपए प्रति क्विंटल, सूरजमुखी तेल 12380 रुपए प्रति क्विंटल, सोया रिफाइंड 12014 रुपए प्रति क्विंटल, पाम ऑयल 8666 रुपए प्रति क्विंटल और वनस्पति तेल 11133 रुपए प्रति क्विंटल पर रहा।

भारत के पास 95 प्रतिशत ट्रैक विद्युतीकरण के साथ सबसे बड़ा ग्रीन रेलवे नेटवर्क : अधिकारी

■ **प्रतिदिन दो करोड़ यात्रियों को सेवा प्रदान करती है भारतीय रेलवे**

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। रेल मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, भारतीय रेलवे ने दुनिया में सबसे बड़े ग्रीन रेलवे नेटवर्क के रूप में उभरने के लिए अपने 68,000 किलोमीटर के विशाल ट्रैक नेटवर्क में से 95 प्रतिशत का विद्युतीकरण कर लिया है।

रेलवे बोर्ड के अतिरिक्त सदस्य मुकुल सरन माथुर ने कहा कि भारतीय रेलवे प्रतिदिन दो करोड़ यात्रियों को सेवा प्रदान करती है और हाल ही में प्रवासी श्रमिकों की सहायता के लिए 5,000 से अधिक विशेष ट्रेनें संचालित की गई हैं। उन्होंने वंदे भारत ट्रेनों को भारत के रेल आधुनिकीकरण प्रयासों में एक 'प्रमुख प्रयास' के रूप में रेखांकित किया।

यहां एसोचैम नेशनल कॉन्फ्रेंस में बोलते हुए, माथुर ने कहा कि भारत सरकार ने वित्तीय

रेलवे का आधुनिकीकरण भारत के 'विकसित भारत' का केंद्र है, जिसका लक्ष्य कनेक्टिविटी व आर्थिक विकास को बढ़ाना है : दीपक शर्मा

वर्ष 2023-24 में रेलवे विस्तार के लिए 85,000 करोड़ रुपए आवंटित किए हैं। इन सुधारों में तेज़ टिकट वापसी प्रक्रिया भी शामिल है, जिसे अब घटाकर एक या दो कार्य दिवस कर दिया गया है। सम्मेलन में अन्य विशेषज्ञों ने कहा कि रेलवे आधुनिकीकरण भारत की आर्थिक विकास की कुंजी है और 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने का एक तरीका है। एसोचैम के दीपक शर्मा ने इस बात पर जोर दिया कि रेलवे का आधुनिकीकरण भारत के 'विकसित भारत' का केंद्र है, जिसका लक्ष्य कनेक्टिविटी और आर्थिक विकास को बढ़ाना है। नेशनल काउंसिल ऑन लॉजिस्टिक्स एंड वेयरहाउसिंग के संजय बाजपेयी ने गति शक्ति योजना के माध्यम से 100 प्रतिशत कार्गो क्षमता और अंतिम-मील कनेक्टिविटी प्राप्त करने में एआई और मशीन लर्निंग की भूमिका पर प्रकाश डाला। गोल्डरैट रिसर्च लैब्स के अनिमेष गुप्ता ने 40 प्रतिशत रेल माल ढुलाई हिस्सेदारी और रेलवे परिचालन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने की आवश्यकता पर जोर दिया। एसीटीओ के मनीष पुरी और एबीबी इंडिया लिमिटेड के मुनीश घुगे ने बढ़ती व्यापार मांगों को पूरा करने और यात्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आधुनिक सुरक्षा उपायों और बुनियादी ढांचे के महत्व पर चर्चा की।

खेल जगत

शादी के सवाल से शरमाई मनु भाकर, झज्जर पहुंचने पर हुआ जोरदार स्वागत

झज्जर। मनु भाकर ने पेरिस ओलंपिक 2024 में दो ब्रॉन्ज मेडल जीते थे। इसके बाद से वो लगातार सुर्खियों में हैं, और स्वदेश लौटने के बाद हर कोई उनकी तारीफ में कसीदे पढ़ रहा है। साथ ही वो कई इवेंट में हिस्सा ले रही हैं, जहां उनका जोरदार स्वागत किया जा रहा है। इस बीच उनके गृहनगर झज्जर से भी कुछ ऐसी ही तस्वीरें सामने आई हैं। 22 वर्षीय मनु भाकर रविवार को अपने होमटाउन झज्जर पहुंचीं। इस दौरान जिला आयुक्त ने उनकी उपलब्धियों के लिए उन्हें सम्मानित किया। मनु ने गौशाला में कामधेनु गाय की परिवार सहित पूजा अर्चना की। साथ ही उन्हें सहयोग करने वाले सभी लोगों का धन्यवाद किया और कहा कि वो अगली बार गोल्ड जीतने के लिए और कड़ी मेहनत करेंगी। मनु ने कहा, 'पेरिस ओलंपिक में दो मेडल जीतकर बहुत अच्छा लगा।

पेरिस पैरालंपिक के लिए भारत का सबसे बड़ा दल रवाना

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। पैरालंपिक खेलों में भाग लेने के लिए 84 सदस्यों का भारतीय दल रविवार को पेरिस के लिए रवाना हुआ। बैडमिंटन, एथलेटिक्स, साइक्लिंग और अन्य कई खेलों के एथलीटों से बनी यह शानदार टीम वैश्विक मंच पर भारत का नाम रोशन करने के लिए तैयार है। टोक्यो पैरालंपिक 2020 में अपने शानदार प्रदर्शन के बाद, जहां उन्होंने 19 पदक हासिल किए, भारतीय टीम पहले से कहीं ज्यादा बेहतर नजर आ रही है।

उम्मीदें बहुत ज़्यादा हैं क्योंकि टीम का लक्ष्य पेरिस में 25 पदकों का आंकड़ा पार करना है। कई महीनों के प्रशिक्षण के साथ, एथलीट नई ऊंचाइयों को हासिल करने के लिए तैयार और पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं।

भारतीय पैरालंपिक समिति (पीसीआई) के प्रमुख अधिकारी भी प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा हैं। पीसीआई के अध्यक्ष देवेंद्र झाझरिया, पीसीआई सचिव जयवंत, चीफ डी मिशन सत्य प्रकाश सांगवान सहित अन्य प्रमुख सदस्य आज

खिलाड़ियों के साथ नई दिल्ली से पेरिस रवाना हुए। पेरिस पैरालंपिक 28 अगस्त से शुरू होकर 8 सितंबर तक चलेगा। देश पैरा एथलीटों के शानदार प्रदर्शन का बेसब्री से इंतजार कर रहा है।

पीसीआई के अध्यक्ष देवेंद्र झाझरिया ने कहा, 'जब हम पेरिस पैरालंपिक की इस यात्रा पर निकल रहे हैं, तो मुझे अपने एथलीटों पर बहुत गर्व है। उनका समर्पण, दृढ़ता और जोश वाकई प्रेरणादायक है। यह हमारा अब तक का सबसे बड़ा दल है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे उम्मीदों से बढ़कर 25 से अधिक पदक जीतेंगे। पूरा देश उनके पीछे खड़ा है और मुझे पूरा विश्वास है कि वे वैश्विक मंच पर भारत को गौरवान्वित करेंगे।'

विराट कोहली ने धवन के संन्यास पर भावनात्मक विदाई संदेश लिखा

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। भारत के इतिहास के शीर्ष सलामी बल्लेबाजों में से एक शिखर धवन ने सोशल मीडिया पर एक भावनात्मक वीडियो के जरिए क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की। उनके संन्यास की खबर के बाद, कई पूर्व और वर्तमान क्रिकेटरों ने 'गब्बर' को उनके शानदार करियर के लिए बधाई दी। पिछले दशक के दौरान भारतीय राष्ट्रीय क्रिकेट टीम ने खुद को देश की सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजी इकाइयों में से एक के रूप में स्थापित किया। शिखर धवन और रोहित शर्मा की घातक ओपनिंग साझेदारी के बाद तीसरे नंबर पर विराट कोहली की मौजूदगी टीम के बल्लेबाजी लाइनअप के लिए काफी थी, जिससे भारत से दुनिया भर के गेंदबाजों को डर लगने लगा।

'शिखर @एसधवन25 आपके निडर पदार्पण से लेकर भारत के सबसे भरोसेमंद सलामी बल्लेबाजों में से एक बनने तक, आपने हमें संजोने के लिए अनगिनत यादें दी हैं। खेल के प्रति आपका जुनून, आपकी खेल भावना और आपकी ट्रेडमार्क मुस्कान को याद किया जाएगा, लेकिन आपकी विरासत जीवित रहेगी। यादों, अविस्मरणीय प्रदर्शन और हमेशा दिल से नेतृत्व करने के लिए धन्यवाद। मैदान के बाहर गब्बर, आपको अगली पारी के लिए शुभकामनाएं !' धवन और विराट कोहली 2011-2022 तक भारत के लिए एक साथ खेले, जिसमें उन्होंने 60 अलग-अलग मौकों पर साझेदारी की। दोनों ने मिलकर 3430 रन बनाए और 10 शतक और 15 अर्धशतक लगाते हुए 60.17 के औसत साझेदारी स्कोर का प्रदर्शन किया। धवन के 13 साल लंबे अंतरराष्ट्रीय करियर में उन्होंने 34 टेस्ट, 167 वनडे और 68 टी20 मैच खेले और तीनों प्रारूपों में क्रमश: 2315, 6793 और 1579 रन बनाए।

शिखर के संन्यास पर रोहित ने कहा, 'आपने हमेशा दूसरे छोर से मेरा काम आसान किया'

नई दिल्ली। दिग्गज भारतीय ओपनर शिखर धवन ने शनिवार को इंटरनेशनल और घरेलू क्रिकेट से संन्यास ले लिया। 38 साल का खब्बू बल्लेबाज फैंस के बीच 'गब्बर' के नाम से मशहूर हैं। टीम इंडिया के वनडे और टेस्ट कप्तान रोहित शर्मा के साथ धवन का रिश्ता बेहद खास रहा है। दोनों ने लंबे समय तक बतौर ओपनिंग जोड़ी एक दूसरे का साथ दिया है। शिखर धवन ने 12 साल तक खेल के इतिहास में सर्वश्रेष्ठ ओपनिंग साझेदारियों में से एक के रूप में अपनी प्रतिष्ठा बनाई। धवन के संन्यास की घोषणा के बाद, रोहित ने खेल और देश के प्रति उनकी सेवाओं के लिए 'द अल्टीमेट जट्ट' को धन्यवाद दिया। रोहित शर्मा ने धवन के लिए पोस्ट में लिखा, 'कमरे साझा करने से लेकर मैदान पर जीवन भर की यादें साझा करने तक। आपने हमेशा दूसरे छोर से मेरा काम आसान किया। बेहतरीन जाट। हिटमैन और गब्बर ने 117 मौकों पर एक साथ बल्लेबाजी की और 5193 रन बनाए, जिसमें 18 शतक और 15 अर्धशतक शामिल हैं।

बैडमिंटन एशिया जूनियर चैंपियनशिप में तन्वी पत्री ने जीता अंडर-15 वर्ग का खिताब

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। बैडमिंटन एशिया जूनियर चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए महिलाओं के अंडर-15 वर्ग में तन्वी पत्री ने स्वर्ण पदक अपने नाम किया। 13 वर्षीय शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी ने फाइनल में अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए दूसरी वरीयता प्राप्त वियतनाम की गुयेन को सीधे गेम में 22-20, 21-11 से हराकर खिताब अपने नाम किया। हालांकि, ये मुकाबला उनके लिए इतना आसान नहीं था, क्योंकि शुरुआती गेम में उन्हें संघर्ष करना पड़ा। हालांकि, दबाव तब कम हुआ जब गुयेन लड़खड़ाने लगीं और कई अनफोर्स्ड गलतियां कीं, जिससे युवा भारतीय खिलाड़ी ने मुकाबले में वापसी की। तन्वी ने इस मौके का फायदा उठाया और एक तनावपूर्ण शुरुआत के बाद पहला गेम जीतने के लिए दमदार

प्रदर्शन किया। तन्वी ने टूर्नामेंट में शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी के रूप में प्रवेश किया और खिताब जीतने के लिए शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने पूरे टूर्नामेंट में एक भी गेम नहीं गंवाया, जिससे भारत के भविष्य के बैडमिंटन सितारों में से एक के रूप में उनकी श्रेष्ठता और क्षमता का प्रदर्शन हुआ। यह जीत भारत का चैंपियनशिप में दूसरा पदक है, इससे पहले अंडर-17 पुरुष एकल वर्ग में टंकारा ज्ञान दत्तू तलासिला ने कांस्य पदक जीता था। अपने इवेंट में दूसरे वरीय दत्तू ने इंडोनेशिया के रादित्य बायू वर्धना के खिलाफ सेमीफाइनल में मजबूत शुरुआत की और पहला गेम 21-9 से जीता। हालांकि, वे अपनी लय बरकरार नहीं रख सके और अगले दो गेम 13-21, 13-21 से हार गए और फाइनल में जगह बनाने से चूक गए।

भारतीय पोलो के लिए 25 अगस्त का दिन है खास, सुनहरे अक्षरों में दर्ज है नाम

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। मॉर्डन पोलो गेम की शुरुआत भारत में हुई थी। ये खेल मणिपुर से ताल्लुक रखता है। धीरे-धीरे खेल के प्रति आकर्षण बढ़ा तो सीमाएं टूटीं और भारत से बाहर भी दर्शकों और खिलाड़ियों की संख्या बढ़ी। घोड़ों पर सवार होकर बॉल को स्टिक से पास करने वालों को एक विशेष दर्जा प्राप्त हुआ। ये शाही कैटेगरी में आया। पोलो का नाम सुनते ही हर वो शाही खेल याद आ जाता है जो कभी किसी ने देखा हो। राजाओं का खेल कहलाने वाले पोलो को पहले सिर्फ राजघरानों और सेना के लिए ही आरक्षित रखा जाता था। लेकिन इस खेल में हाल ही में हुए विकास ने समाज के सभी वर्गों के लोगों के लिए इस बहुप्रतीक्षित खेल को सीखने, तराशने और उसमें महारत हासिल करने के दरवाजे खोल दिए हैं। इस खेल ने वर्षों तक कई उतार-चढ़ाव देखे हैं, इसके बावजूद इसने अपनी श्रेष्ठता और अपना ये अनोखा अंदाज बरकरार रखा।

पोलो एक टीम खेल है जिसे घोड़े पर बैठ

कर खेला जाता है, जिसमें प्रतिद्वंद्वी टीम के खिलाफ गोल करना होता है। ब्रिटिश काल के दौरान यह खेल काफी मशहूर था। भारत के इतिहास में 25 अगस्त और इस खेल के बीच एक खास कनेक्शन है। भारत में पोलो की खेल भावना, सफलता और गौरव का एक यादगार दौर रहा है। पोलो का स्वर्णिम काल कहे जाने वाले उस दौर को खिलाड़ी समेत पूरा भारत बड़े प्यार से याद करता है। 1957 और 1975 में आज ही के दिन भारत पोलो विश्व विजेता बना था। भारत ने फ्रांस में हुए पोलो विश्व चैम्पियनशिप फाइनल का खिताब अपने नाम किया था। 1957 में भारत ने फ्रांस में विश्व चैम्पियनशिप में भाग लेने के लिए एक आधिकारिक पोलो टीम भेजी थी।

सार संक्षेप

फातिमा सना 2024 महिला टी-20 विश्व कप के लिए पाकिस्तान की कप्तान नियुक्त

लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने 22 वर्षीय तेज गेंदबाज फातिमा सना को संयुक्त अरब अमीरात में इस अक्टूबर में होने वाले महिला टी20 विश्व कप 2024 के लिए राष्ट्रीय महिला टीम का नया कप्तान नियुक्त किया है। फातिमा ने अनुभवी ऑलराउंडर निदा डार से नेतृत्व की भूमिका संभाली है, जो पाकिस्तान के टी20 कप्तान के रूप में पहली बार और आईसीसी इवेंट में कप्तान के रूप में उनकी पहली पारी है। फातिमा ने अतीत में नेतृत्व क्षमता दिखाई है, इससे पहले उन्होंने दो एकदिवसीय मैचों में पाकिस्तान का नेतृत्व किया था, जिसमें हेगले ओवल में न्यूजीलैंड के खिलाफ एक रोमांचक सुपर ओवर की जीत भी शामिल थी, जबकि वह डार के स्थान पर कप्तान थीं । यह अनुभव अमूल्य साबित होगा क्योंकि वह महिला क्रिकेट के सबसे प्रतिष्ठित आयोजनों में से एक के लिए कप्तानी की भूमिका में कदम रखेंगी। टी20 विश्व कप के लिए टीम में उस टीम से काफी हद तक कोई बदलाव नहीं हुआ है जिसने हाल ही में श्रीलंका में महिला टी20 एशिया कप में भाग लिया था। एकमात्र बदलाव में विकेटकीपर-बल्लेबाज नजीहा अल्वी की जगह बल्लेबाज सदफ शमास को शामिल किया गया है, जिन्होंने 2023 महिला टी20 विश्व कप में हिस्सा लिया था। 2023 विश्व कप अभियान के दस खिलाड़ियों ने अपना स्थान बरकरार रखा है, जिनमें आलिया रियाज, मुनीबा अली, नाशरा संधू, ओमैमा सोहेल और तुबा हसन जैसे प्रमुख नाम शामिल हैं।

जानिक सिनर के प्रतिबंध से बचने के बाद जोकोविच ने डोपिंग पर स्पष्ट प्रोटोकॉल की मांग की

न्यूयार्क। जैसे-जैसे यूएस ओपन नजदीक आ रहा है, पेरिस ओलंपिक के स्वर्ण पदक विजेता नोवाक जोकोविच ने जानिक सिनर से जुड़े डोपिंग विवाद के बाद 'स्पष्ट प्रोटोकॉल' और 'मानकीकृत दृष्टिकोण' का आह्वान किया है। इस साल की शुरुआत में प्रतिबंधित पदार्थ के लिए दो बार सकारात्मक परीक्षण करने वाले सिनर के प्रतिबंध से बच जाने के बाद जोकोविच ने अपनी चिंता व्यक्त की, जिससे टेनिस समुदाय में कई लोगों ने प्रणाली की निष्पक्षता पर सवाल उठाया है। यूएस ओपन से पहले बोलते हुए जोकोविच ने इन निराशाओं को दोहराया। 24 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन ने कहा, 'मैं निरंतरता की कमी के कारण खिलाड़ियों की निराशा को समझता हूं।' 'घोषणा के लगभग तुरंत बाद ही उनके मामले को मंजूरी दे दी गई थी, लेकिन सकारात्मक परीक्षणों की खबर उन तक और उनकी टीम तक पहुंचने में पांच या छह महीने बीत चुके थे।' मार्च में सिनर को क्लोस्टेबोल के लिए सकारात्मक परीक्षण किया गया, जो एक स्टेरॉयड है जो मांसपेशियों के निर्माण के गुणों के लिए जाना जाता है। इटालियन को अस्थायी रूप से निलंबित कर दिया गया था लेकिन सफलतापूर्वक अपील करने के बाद भी उसने खेलना जारी रखा। पिछले हफ्ते, इंटरनेशनल टेनिस इंटीग्रिटी एजेंसी (आईटीआईए) द्वारा निर्धारित किए जाने के बाद कि यह पदार्थ अनजाने में उनके फिजियोथेरेपिस्ट, जियाकोमो नाल्डी द्वारा प्रसारित किया गया था, एक ट्रिब्यूनल ने उन्हें किसी भी गलती या लापरवाही से बरी कर दिया था।

इंग्लैंड ने श्रीलंका को पांच विकेट से हराया

मैनचेस्टर, 25 अगस्त (एजेंसियां)। जो रूट की नाबाद (62) रनों की जुझारू पारी दम पर इंग्लैंड ने पहले टेस्ट मैच के चौथे दिन श्रीलंका को पांच विकेट से हराकर तीन मैचों की श्रृंखला में 1-0 से बढ़त बना ली है। इससे पहले शनिवार को कामिंडू मेंडिस के शानदार शतक की बदौलत श्रीलंका ने अपनी दूसरी पारी में 326 स्कोर खड़ा करते हुए इंग्लैंड को जीत के लिए 205 रनों का लक्ष्य दिया था। दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने इंग्लैंड की टीम के खिलाफ श्रीलंकाई गेंदबाजों ने शुरुआत में शानदार प्रदर्शन करते हुए तीन विकेट झटके थे। लेकिन जो रूट नाबाद (62) ने हैरी ब्रूक और जेमी स्मिथ के साथ दो अहम साझेदारियां करके मैच चौथे दिन ही समाप्त कर दिया। इसी के साथ रूट ने टेस्ट में सबसे ज्यादा अर्धशतक लगाने के मामले में राहुल द्रविड़ और एलेन बॉर्डर को पीछे छोड़ दिया। हैरी ब्रूक ने (32) और जेमी स्मिथ ने (39) रन बनाये।

धनंजय डी सिल्वा की कप्तानी वाली श्रीलंकाई टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया था। श्रीलंका ने

कप्तान धनंजय डीसिल्वा (74) और मिलन रत्नायके (72) की शानदार बल्लेबाजी के दम पर पहली पारी में 236 रन बनाए थे। इंग्लैंड की ओर क्रिस वोक्स और शोएब बशीर ने तीन-तीन बल्लेबाजों को आउट किया। गस ऐटकिंसन को दो विकेट मिले। इसके जवाब में इंग्लैंड ने जेमी स्मिथ (111) की शतकीय और हैरी ब्रूक (56) की अर्द्धशतकीय पारियों की बदौलत 358 को स्कोर बनाकर 122 रन की बढ़त हासिल की। श्रीलंका की ओर से असिता फर्नांडो ने चार विकेट लिये। प्रभात जयसूर्या को तीन विकेट मिले। विश्वा फर्नांडो ने दो बल्लेबाजों को आउट किया। कामिंडू मेंडिस की शतकीय और दिनेश चांदीमल (79) की अर्धशतकीय पारियों की बदौलत श्रीलंका ने अपनी दूसरी पारी में 326 स्कोर खड़ार इंग्लैंड को जीत के लिए 205 रनों का लक्ष्य दिया था। इंग्लैंड की ओर से क्रिस वोक्स और मैथ्यू पॉट्स ने तीन-तीन विकेट लिये। गस ऐटकिंसन को दो विकेट मिले।

श्रीलंका के खिलाफ पीछा करने से पता चला कि हम सिर्फ एक शैली की टीम नहीं हैं : ओली पोप

लंदन। कार्यवाहक कप्तान ओली पोप ने श्रीलंका पर कड़ी मेहनत से जीत हासिल करने के लिए इंग्लैंड की अनुकूलनशीलता की सराहना की, जिससे पता चलता है कि वे अब 'एक-शैली' की टीम नहीं हैं जो केवल अपनी विस्फोटक बैजबॉल आक्रामकता के लिए जानी जाती है। ब्रेंडन मैकुलम और बेन स्टोक्स के नेतृत्व में इंग्लैंड के दृष्टिकोण की विशेषता तेजी से रन बनाना है, लेकिन ओल्ड ट्रैफर्ड की परिस्थितियों में एक अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता थी क्योंकि उन्होंने श्रृंखला के पहले टेस्ट में 205 रनों का पीछा किया था। सामान्य बैजबॉल स्क्रिप्ट के विपरीत धैर्यपूर्ण प्रदर्शन करते हुए, इंग्लैंड को जीत हासिल करने के लिए 58 ओवर लगे, जिसमें जो रूट ने 128 गेंदों में 62 रनों की नाबाद पारी खेली। इंग्लैंड की स्कोरिंग दर कभी-कभी दो रन प्रति ओवर तक गिर गई, जो उनकी तेजतर्रार शैली से उनकी मानसिकता में स्पष्ट बदलाव को दर्शाता है। पोप ने मैच के बाद कहा, 'किसी और दिन आप हमें 20 कम ओवरों में इसे खत्म करने की कोशिश करते हुए देख सकते हैं।यह दर्शाता है कि कुल मिलाकर हम एक टीम के रूप में कहाँ आ रहे हैं। हम सिर्फ एक आयामी टीम नहीं हैं जहां हम जाकर तेजी से स्कोर करना चाहते हैं।

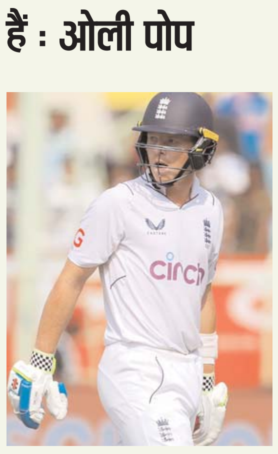

ओलंपिक में 'चोकर' साबित हुईं विनेश फोगाट

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। नम आंखों और खट्टी मीठी यादों के साथ भारतीय महिला पहलवान विनेश फोगाट पेरिस ओलंपिक से भारत वापस लौट चुकी हैं। बेहद करीब से मेडल से चूकी इस धाकड़ पहलवान का स्वदेश में जोरदार स्वागत हुआ। सरकार की ओर से विनेश को एक चैंपियन करार दिया गया, और उन्हें हर वो सम्मान मिलेगा जो उन्हें मेडल जीतने पर मिलता ऐसा ऐलान भी किया। मगर, क्या यह काफी है? 25 अगस्त 1994 को जन्मी विनेश फोगाट का आज 30 साल की हो गईं। भारत के सबसे प्रसिद्ध कुश्ती परिवारों में से एक से ताल्लुक रखने वाली विनेश अपनी चचेरी बहनों गीता फोगाट और बबीता कुमारी के नक्शेकदम पर चलीं। तीन ओलंपिक खेल चुकी इस पहलवान ने संन्यास का ऐलान कर दिया है, लेकिन उनके परिवार और फैंस को यही उम्मीद है कि विनेश 2028 ओलंपिक खेलें। पेरिस में गोल्ड मेडल पाने के लिए एक ही दिन में विनेश ने तीन धुरंधर पहलवानों को पटखनी दी, लेकिन नियमों के आगे हार गईं। 'मां मैं हार गई और कुश्ती जीत गई...', ये शब्द विनेश का दर्द बयां करने के लिए काफी है, क्योंकि ये पहला मौका नहीं था जब इस महिला पहलवान को अपने भाग्य के आगे हार मानी पड़ी।

बांग्लादेश ने पाकिस्तान पर टेस्ट जीत दर्ज कर रचा इतिहास

रावलपिंडी, 25 अगस्त (एजेंसियां)। स्पिनरों शाकिब अल हसन और मेहदी हसन मिराज के शानदार प्रदर्शन के दम पर बांग्लादेश ने टेस्ट क्रिकेट में पाकिस्तान पर श्रृंखला के शुरुआती मैच में रविवार को रावलपिंडी क्रिकेट स्टेडियम में दस विकेट से जीत दर्ज करके इतिहास रच दिया। बांग्लादेश ने इस जीत के साथ दो मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली। इस मैच से पहले, बांग्लादेश पुरुष टेस्ट में 13 बार पाकिस्तान से भिड़ चुका था, लेकिन कभी विजयी नहीं हुआ। एक संक्षिप्त क्षण के लिए, ऐसा लग रहा था कि पहले टेस्ट में भी वही स्क्रिप्ट सामने आएगी, लेकिन बांग्लादेश के इरादे इस बार कुछ और थे। बांग्लादेश ने दूसरी पारी में

पाकिस्तान को सिर्फ 146 रन पर आउट करके कुछ अलग ही सोच रखी थी और फिर आसानी से 30 रनों का पीछा करते हुए मेहमान टीम के डगआउट में खुशी के दृश्य और मुस्कुराहट बिखेर दी। बांग्लादेश की ऐतिहासिक टेस्ट जीत उस दिन हुई जब उनके कप्तान नजमुल हुसैन शांतो 26 साल के हुए। जैसे ही बांग्लादेश ने पुरुषों के टेस्ट क्रिकेट में पाकिस्तान पर अपनी पहली जीत दर्ज की, मेजबान टीम को घरेलू मैदान पर लंबे प्रारूप में पहली दस विकेट से हार का सामना करना पड़ा। पाकिस्तान ने पांचवें दिन की शुरुआत 23-1 से की और वह बांग्लादेश से 94 रन से पीछे था। रावलपिंडी की सपाट पिच पर पहले चार दिनों में सिर्फ 17 विकेट गिरे थे, लेकिन मेहदी के 4-21 और शाकिब के 3-44 ने स्क्रिप्ट को आश्चर्यजनक रूप से बांग्लादेश के पक्ष में पलट दिया। पाकिस्तान ने अपने कप्तान शान मसूद (14) को पांचवें दिन के दूसरे ओवर में ही खो दिया जब वह हसन महमूद की गेंद पर विकेट के पीछे कैच आउट हुए। 66-2 से, पाकिस्तान दबाव में बिखर गया और सनसनीखेज रूप से 118/8 पर सिमट गया, क्योंकि उनके पास शाकिब और मेहदी की एक साथ गेंदबाजी करने से पूछे गए सवालों का कोई जवाब नहीं था। मोहम्मद रिज़वान ने 51 रन बनाए और अपनी टीम को संकट से बाहर निकलने की कोशिश की लेकिन पाकिस्तान, जिसने मैच में फ्रंटलाइन स्पिनर को मैदान में नहीं उतारा, की दूसरी पारी अंततः 146 पर सिमट गयी। । इसने बांग्लादेश को रावलपिंडी में ऐतिहासिक जीत दर्ज करने के लिए सिर्फ 30 रन दिए और जाकिर हसन ने शादमान इस्लाम के साथ मिलकर 6.3 ओवर में मामूली लक्ष्य का पीछा पूरा कर लिया।